"उत्तराँचल की कला विभूति पद्मश्री रणवीर सिंह बिष्ट की कला यात्रा—एक समीक्षात्मक अध्ययन"

("A Journey of Uttaranchal's Art Icon Padmashri RANVEER SINGH BISHT into the aesthetic world-A critical study")

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी (उ0प्र0) की
चित्रकला विषय में पी–एच0 डी0 उपाधि हेतु
प्रस्तुत शोध प्रबन्ध

वर्ष 2007

शोध पर्यवेक्षक
(Research Supervisor)
डॉ0 गोविन्द बिहारी शर्मा
अध्यक्ष, शोध एवं परास्नातक
चित्रकला विभाग
धर्म समाज कॉलेज
अलीगढ़ (उ0 प्र0)

शोधार्थी
कुबेर सिंह मावड़ी

पद्मश्री रणवीर सिंह बिष्ट

मानचित्र

उत्तरांचल में लैन्सडौन की स्थिति
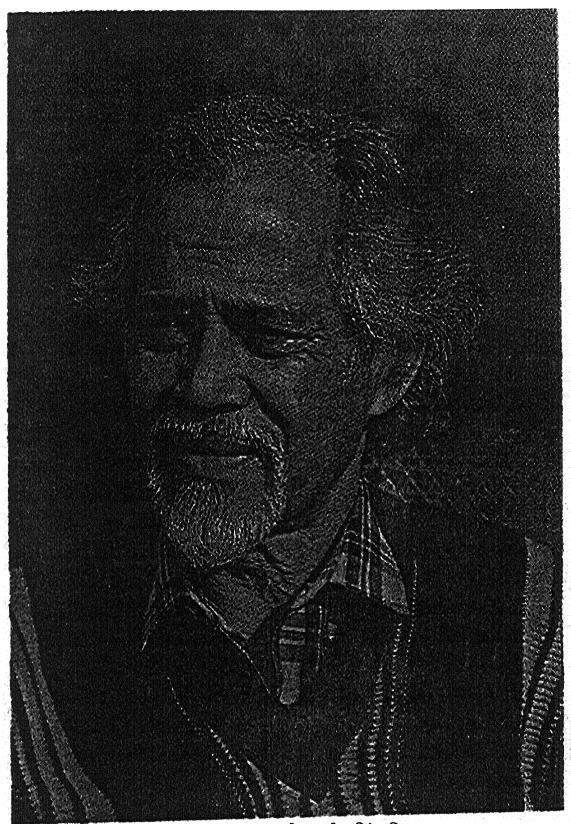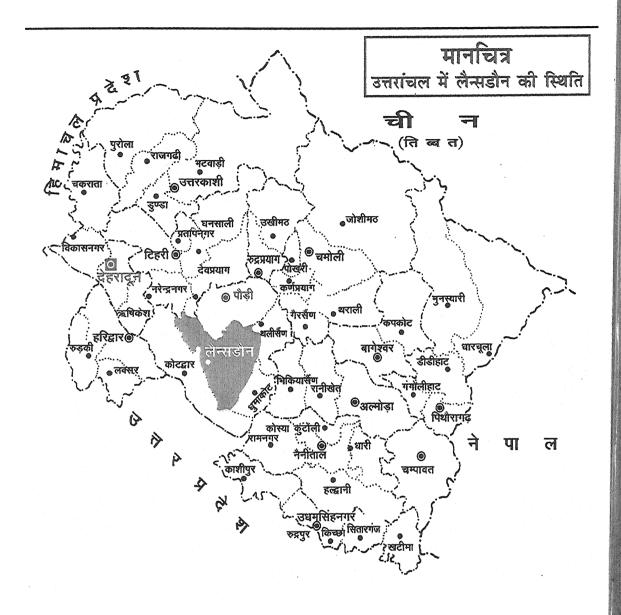
''परम पूज्य पितामह

स्वर्गीय श्री पी0 एस0 मावड़ी जी

की पुण्य स्मृति में

सादर समर्पित''

प्रमाण–पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि श्री कुबेर सिंह मावड़ी शोध छात्र ने मेरे पर्यवेक्षण (निर्देशन) में अपना मौलिक शोध प्रबन्ध पूर्ण किया है। इन्होंने नियमानुसार निर्दिष्ट उपस्थिति पूर्ण कर ली है। अब इनका शोध प्रबन्ध बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी में परीक्षण हेतु प्रस्तुत किया जा रहा है। मैं इनके उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ।

दिनांक–20'9'2007

शोध पर्यवेक्षक
(Research Supervisor)

20·9·2007

डॉ0 गोविन्द बिहारी शर्मा
अध्यक्ष, शोध एवं परास्नातक
चित्रकला विभाग
धर्म समाज कॉलेज
अलीगढ़ (उ0 प्र0)

प्राक्कथन

''उत्तराँचल की कला विभूति पद्मश्री रणवीर सिंह बिष्ट की कला यात्रा–एक समीक्षात्मक अध्ययन'' (**"A Journey of Uttaranchal's Art icon Padmashri RANVEER SINGH BISHT into the aesthetic world-A critical Study"**) शीर्षक शोध प्रबन्ध की सार्थकता को उनके द्वारा समकालीन कला में किये गये विशिष्ट योगदान का अध्ययन की दृष्टि से एक प्रमाण है। उत्तराँचल में जन्में बिष्ट ने देश के गौरव को ऊँचा किया है। एक बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति ने समकालीन कला में अपने अथक परिश्रम से प्रबलता प्रदान की। वे एक प्रतिष्ठित कलाकार के रूप में जाने जाते हैं। उन्हें राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। भारत सरकार द्वारा उन्हें ललित कला में अप्रतिम योगदान हेतु सन् 1991 ''पद्मश्री'' से सम्मानित किया गया।

ऐसे कलाकार की कृतियों का समीक्षात्मक अध्ययन करने की लालसा मेरे मन में जागृत हुई तो मुझे मार्ग दर्शक के रूप में मेरे शोध पर्यवेक्षक (निर्देशक) परम श्रद्धेय डॉ0 गोविन्द बिहारी शर्मा विभागाध्यक्ष चित्रकला विभाग धर्म समाज कॉलेज अलीगढ़ ने मुझे इस ओर अपना अमूल्य सहयोग प्रदान किया।

शोध सर्वे में मैंने उनके लखनऊ स्थित आवास इन्दिरा नगर में उनकी पुत्री रमिला जी ने मुझे आवश्यक सामग्री प्रदान की। मैंने उनके मूल निवास ग्राम–पोखरी विकासखण्ड यमकेश्वर तहसील बिठाणी जनपद–पौड़ी गढ़वाल में ग्रामीणों से मुलाकात की। लैण्ड्सडौन में उनके पिता श्री कल्याण सिंह बिष्ट कैन्टोनमेंन्ट बोर्ड में नौकरी करते थे, वहाँ उनकी हाईस्कूल तक की पढ़ाई पूर्ण हुई। वहाँ के स्थानीय लोगों से मैंने उनके बारे में जानकारी प्राप्त की तथा यह ज्ञात हुआ कि वे बचपन में काफी चंचल स्वभाव के थे। लेकिन लैण्डस्केप पेंटिंग के प्रति उनका अत्यधिक लगाव था। यह लगाव उन्हें अंग्रेज पर्यटक कलाकारों से मिला। वे अपने स्कूल के मार्ग से जाते समय सुदूर पर्वत श्रेणियों को निहारते थे तथा उनमें खो जाते थे। घने जंगलों में बॉज, बुरांश, देवदार, सुरई इत्यादि के वृक्षों से

प्रेरित हुए। बुरॉश के लाल रंग के फूलों को उन्होंने अपने संयोजन में चित्रित किया है। हरीतिमापूर्ण वातावरण से वे प्रेरित रहते थे। सन् 1948 में उन्होंने हाईस्कूल की शिक्षा उत्तीर्ण की, उसके बाद वे लखनऊ के कला एवं शिल्प महाविद्यालय में प्रवेश परीक्षा में उत्तीर्ण हुए तो उन्होंने अपने कला जीवन की शुरुआत वहीं से की। वे एक कुशल कलाकार के रूप में उभरकर आये। यह अत्यन्त गौरव की बात है कि वे उत्तराँचल के मूल निवासी थे तथा उनका जन्म भी उत्तराँचल में ही हुआ। उत्तराँचल की पर्वत श्रेणियों एवं वहाँ की वादियों के प्रति उन्हें बेहद लगाव था। पर्वतीय क्षेत्र के संघर्षमय जीवन के प्रति उनके मन में करुणा थी; क्योंकि उन्होंने स्वयं भी संघर्ष का जीवन देखा था। ऐसे कलाकार जिन्हें अपने अतीत के प्रति इतना स्नेह था। समाज के कल्याण के लिए अपनी कला को माध्यम बनाया तथा कई तरह की कुरीतियों एवं बुराईयों को उन्होंने अपनी कृतियों के द्वारा दूर करने की कोशिश की।

मैंने इनके छोटे भाई श्री हीरा सिंह बिष्ट पूर्व वास्तुशास्त्री से उनके निवास बालासौड़ कोटद्वार, पौड़ी गढ़वाल जाकर जानकारी ली, उन्होंने मुझे अपने बड़े भाई स्वर्गीय रणवीर सिंह बिष्ट के बारे में बताया तथा उनके चित्रों की फोटो एवं उनके बारे में प्रकाशित आलेख देकर मेरे शोध प्रबन्ध को सार्थक बनाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

मैंने अपने शोध प्रबन्ध हेतु विभिन्न संग्रहालयों को पुस्तकालय में जाकर कार्य किया। जिनमें मयूनिसिपल संग्रहालय इलाहाबाद, राज्य ललित कला अकादमी लखनऊ, राष्ट्रीय ललित कला केन्द्र लखनऊ, कला एवं शिल्प महाविद्यालय लखनऊ जहाँ उन्होंने कला की शिक्षा ग्रहण की तथा अपनी सेवा भी दी। मैंने ललित कला अकादमी रवीन्द्र भवन नई दिल्ली, राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय जयपुर हाउस इण्डिया गेट नई दिल्ली एवं राष्ट्रीय संग्रहालय नई दिल्ली में शोध कार्य किया।

परम श्रद्धेय माननीय कुलपति जी बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी की विशेष अनुकम्पा से मेरा यह शोध प्रबन्ध पूर्ण हुआ। मैं कुलसचिव बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी के प्रति कृतज्ञ हूँ, जिनके

कार्यकाल में मेरा यह शोध प्रबन्ध परीक्षण हेतु प्रस्तुत किया जा रहा है। मेरे शोध कार्य को पूर्ण करने में मुझे डॉ0 सुनीता सिंह विभागाध्यक्ष चित्रकला विभाग बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी (उ0प्र0) का विशेष आशीर्वाद मिला, जिनकी असीम कृपा से मेरा यह शोध प्रबन्ध पूर्ण हुआ। शोध विभाग के प्रभारी श्री बट्टा जी से मुझे जो सहयोग मिला उसके लिए मैं उनका अभारी हूँ।

इस शोध को पूर्ण करने में मेरे परम पूज्य पिता श्री नाथू सिंह मावड़ी जी का अपार सहयोग रहा जिन्होंने मुझे समय–समय पर अपना योगदान देकर मुझे सदैव उच्च शिक्षा हेतु प्रेरित किया। यह शोध उनकी विशेष अनुकम्पा से पूर्ण हुआ।

मैं उन ज्ञात व अज्ञात लोगों के प्रति सदैव नतमस्तक हूँ जिन्होंने मुझे समय–समय पर अपना सहयोग प्रदान किया। उस परम पिता परमेश्वर की असीम कृपा से मेरा यह शोध कला जगत को समर्पित है।

दिनांक– 20/9/07

शोधार्थी,

20/9/07

(कुबेर सिंह मावड़ी)

"उत्तराँचल की कला विभूति पद्मश्री रणवीर सिंह बिष्ट की कला यात्रा—एक समीक्षात्मक अध्ययन"

विषय—अनुक्रम

चित्र–सूची

अध्याय एक

(अ)आधुनिक भारतीय कला का अभ्युदय एवं प्रमुख कलाकारों की भूमिका—एक परिचय

(ब)समकालीन भारतीय चित्रकला का प्रासंगिक स्वरूप—एक रूपरेखा

(स)समकालीन कला प्रवृत्तियाँ एवं रणवीर सिंह बिष्ट की कला

अध्याय एक

(अ) आधुनिक भारतीय कला का अभ्युदय एवं प्रमुख कलाकारों की भूमिका–एक परिचय :

19वीं शताब्दी के मध्य भारतीय चित्रकला को यूरोपीय कला विकास के तर्ज पर विभिन्न कला महाविद्यालयों द्वारा सुभारम्भ किया गया। सन् 1850 में मद्रास, सन् 1854 में कोलकाता, सन् 1857 में मुम्बई एवं सन् 1857 में लाहौर में नये कला महाविद्यालयों की स्थापना की गयी जिनमें अंग्रेज कलाकारों को सर्वोच्च (प्रिंसिपल) पदों पर आसीन कराया गया। कला महाविद्यालयों में शिक्षा की तकनीक एवं स्तर अंग्रेजों के कला जीवन पर आधारित था। भारत में सर्व प्रथम व्यक्ति–चित्रण की शुरुआत हुई। मॉडल के रूप में विद्यार्थियों के सम्मुख किसी व्यक्ति को बैठाकर चित्रण किया जाता था। इसके साथ ही हस्त–शिल्प कला एवं उद्योग कला का भी आभास करवाया जाता था।

यूरोपीय कला प्रभाव के इस वातावरण में राजा रवि वर्मा का नामोल्लेख उपयुक्त होगा, जिन्होंने यूरोपीय चित्रकारों से अध्ययन प्राप्त कर चित्र बनाये। रवि वर्मा तत्कालीन यूरोपीय शैली में चित्रांकन करने वाले भारतीय में श्रेष्ठ कलाकार थे। जिनके चित्रों के विषय भारतीय कथानकों, आख्यानों और धर्म पर आधारित थे किन्तु उनकी चित्रण शैली पाश्चात्य थी।[1]

मद्रास के त्रावणकोर के सुविख्यात चित्रकार राजा रवि वर्मा ने थिओडोर जैक्सन नामक अंग्रेज चित्रकार से तैल रंग की चित्रण पद्धति सीखी तथा भारतीय संस्कृति एवं पौराणिक विषयों पर आधारित चित्र बनाये। इनके चित्रों के विषय में सर्वप्रथम ''पौराणिक'' चित्र अत्यधिक लोकप्रिय हुए। इन चित्रों में पाश्चात्य चित्रण पद्धति के प्रभाव दिखायी पड़ते थे जिसमें राजा रवि वर्मा के चित्रों को अविशुद्ध माना गया था।

पुनर्जागरण काल 19वीं शताब्दी से माना जाता है। इस काल में भारतीय कला के क्षेत्र में सन् 1896 में ई0वी0 हैवेल को मद्रास कला महाविद्यालय का निदेशक के पद पर आसीन कर दिया।

1–पाण्डेय, संध्या एवं पाण्डेय, आर0पी0 : भारतीय कला पुनर्जागरण एवं चित्रकार पृ0–9 मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी रवीन्द्रनाथ ठाकुर मार्ग, वाणगंगा, भोपाल – 462003 (1997)

अवनीन्द्रनाथ टैगोर जी ने ई0वी0 हैवेल को एक नई विचारधारा से कला के व्यापक क्षेत्र में सहयोग प्रदान किया। इन दोनों कलाकारों की विचारधारा से इस कार्य हेतु पाश्चात्य कलाधारा की अनुरूपता नहीं हो सकती थी। पाश्चात्य यूरोपीय कला का सौन्दर्य भौतिकवादी एवं नैसर्सिक सौन्दय से प्रभावित थी। इसमें न तो आध्यात्मिक गुण थे और न ही वातावरणीय प्रभाव।

अवनीन्द्रनाथ टैगोर का आरम्भिक कला अध्ययन श्री हैवेल के आगमन से कोलकाता कला महाविद्यालय में यूरोपीय पद्धति के अनुसार हुआ था।[1] हैवेल ने अपने चित्रण पद्धति में मुगल चित्रशैली का भी अनुशरण किया। इस अनुशरण से उनकी कलाकृतियों में छायायुक्त प्रभाव की जगह बारीक वाह्य रेखा से आकारों को एक धरातल पर रंगीय संयोजन में परिवर्तित करके चित्रित किया गया। भारतीय चित्र शैली पुनर्जागरण के विचार से सौन्दर्यात्मक गुणों को प्राप्त करने में असक्षम थी। हैवेल ने पूर्ण रूप से भारतीय चित्रकला को सदैव आदर्श रूप में व्यापक एवं सार्वभौमिक माना तथा चित्रकला को अपने जीवन में एक अनुभवशील विचारों की गुणवत्ता माना।

सन् 1902 में जापान के कलाकार हिसिदा एवं ताइकान कोलकाता आये थे।[2] अवनीन्द्रनाथ टैगोर ने इनसे अपना सम्पर्क स्थापित किया तथा कला के विभिन्न आकारों को रंगों की संगति से सूचक रूप में प्रारम्भ किया, जिसे जापान व भारतीय शैलियों में एक मिश्रित शैली का नाम दिया गया। बंगाल शैली या पुनर्जागरण से इस शैली को आज भी जाना जाता है।

सन् 1905 में हैवेल के स्थान पर अवनीन्द्रनाथ टैगोर कोलकाता कला महाविद्यालय के आचार्य पद पर नियुक्त हुए।[3] उनके शिष्यों में नन्दलाल बोस, देवी प्रसाद राय चौधरी, सोमेन्द्रनाथ गुप्त एवं असित कुमार हल्दार क्रमशः शान्ति निकेतन, मद्रास, लाहौर एवं लखनऊ के कला महाविद्यालयों में आचार्य पद पर नियुक्त हुए तथा भारत वर्ष के समस्त स्थानों में पुनरुत्थान शैली का प्रचार एवं प्रसार हुआ।

1–साखलकर, र0 वि0 : आधुनिक चित्रकला का इतिहास पृ0–314
राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी
प्लाट नं0 1 झालना सांस्थानिक क्षेत्र जयपुर
(राजस्थान) (2004)

2–वही, पृ0–315
3–वही, पृ0 315

बीसवीं शदी के छठे दशक के बाद बहुसंख्य नये भारतीय कलाकार पाश्चात्य आधुनिक शैलियों के अनुसरण में लग गये और सार्वजनिक संस्थाओं की प्रदर्शनियों में आधुनिक कला के अतिरिक्त अन्य शैलियों के चित्रों का दर्शन दुर्लभ हो गया। आधुनिक युग के प्रेरणा श्रोत अवनीन्द्रनाथ टैगोर एवं नन्दलाल बोस ने भारत की कला को बढ़ावा देने के लिए अपने को आदर्श रूप में प्रभावशाली ढंग से स्थापित किया। समाज की समस्याओं को सुलझाने में कला आन्दोलन के रूप में विभिन्न विषयों के माध्यम से जन जागृति प्रदान की। अवनीन्द्रनाथ टैगोर ने पाश्चात्य समस्याओं को सुलझाने से सम्बन्धित एवं उसमें निरन्तर बदलाव लाने का अथक प्रयास किया।

आधुनिक कला की दृष्टि से भारतीय कला के संयोजन में कलात्मक गुणों की मात्रा अत्यधिक पायी गयी है; लेकिन पुनरुत्थान चित्रशैली से भिन्नता लिये हुए हैं। पुनरुत्थान चित्रशैली एक निर्बल व रंगों के संयोजन संतोषजनक न होकर यूरोपीय पद्धति का स्वरूप है; क्योंकि पुनरुत्थान शैली का विकास बौद्धिक विचार विमर्श एवं स्वदेश प्रेम की भावना से है, उसे सहज ज्ञान की कमजोरियों से ज्ञात कराया है। भारतीय कला विकास के मार्ग दर्शन में विचारों का प्रस्तुतीकरण एवं भारतीय संस्कृति से आगे एक सच्चे कलाकार को बौद्धिक एवं मानसिक उपलब्धि ज्ञात करवायी।

भारत में भी आधुनिक कला का उदय परम्परा और यथार्थवाद के विरोध से ही माना जाता जाना चाहिए यद्यपि आरम्भ में विरोध का स्वर प्रमुख न होकर पाश्चात्य आधुनिक कला के वाह्य रूप से प्रभावित होने का ही अधिक था। सबसे पहले युवा कलाकारों पर अमृता शेरगिल की कला का प्रभाव पड़ा। अमृता शेरगिल पेरिस से उस समय कला सीख कर आई थी जब वहाँ 'इम्प्रेशिनस्टों', 'फाविस्टों' तथा 'एक्सप्रेशिनस्टों' का प्रभाव यथेष्ठ रूप में प्रमुख था। वानगॉग, गोगाँ, मातिस, रूओ तथा मेदिग्लियानी की कला यूरोप में सराही जाने लगी थी। अमृता शेरगिल की कला में भी इन्हीं के स्वर प्रमुख थे यद्यपि विषयवस्तु की दृष्टि से तथा भावनाओं की दृष्टि से उनकी कला भारतीय जन

1—साखलकर, र0वि0 : आधुनिक चित्रकला का इतिहास पृ0—357
राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी
ए—26/2, विद्यालय मार्ग, तिलकनगर,
जयपुर। — 302004 (राजस्थान) (1989)

जीवन से ही प्रभावित थी। रंगों के प्रयोग तथा आकृतियों की बनावट पूरी तरह उपरोक्त आधुनिक यूरोपीय कलाकारों से प्रभावित थी। अमृता के चित्रों में भी गोगाँ, रूओ तथा मोदिग्लियानी के चित्रों की तरह पूरी निराश और प्रताड़ित चेहरे झाँकते थे भले ही वह यूरोपीय न होकर भारतीय थे। रंगों का प्रतीकात्मक तथा भावनात्मक प्रयोग लगभग गोगाँ तथा मातिस की तरह का था।[1]

आधुनिक कला की दृष्टि से भारतीय कला के संयोजन में कलात्मक गुणों की मात्रा अत्यधिक पायी गयी है; लेकिन पुनरुत्थान चित्रशैली से भिन्नता लिये हुए हैं। पुनरुत्थान चित्रशैली एवं निर्बल व रंगों के संयोजन सन्तोषजनक न होना यूरोपीय पद्धति का स्वरूप है। क्योंकि पुनरुत्थान शैली का विकास बौद्धिक विचार विमर्श एवं स्वदेश प्रेम की भावना से है उसे सहज ज्ञान की कमजोरियों से ज्ञात कराया है। भारतीय कला विकास के मार्ग दर्शन में विचारों का प्रस्तुतीकरण एवं भारतीय संस्कृति से आगे एक सच्चे कलाकार को बौद्धिक एवं मानसिक उपलब्धि ज्ञात करवायी।

समाज में जिस प्रकार आधुनिकता का विकास हुआ उसी प्रकार कला के रूप में भी निरन्तर परिवर्तन आते रहे हैं। आधुनिक कला गतिशीलता में व्यस्त रहते हुए मानव जीवन में बदलाव लाने के लिए दृश्यकला को अत्यधिक प्रभावशाली बनाने में बड़े–बड़े आकारों में रेखाओं का स्पष्ट होना एक चटकदार रंगों का प्रयोग आवश्यक है, क्योंकि मानव के विचारों में कार्य करने की विश्वव्यापी ललक सृजन के रूप विद्यमान रहती है। एक कलाकार को निरन्तर चित्रण कार्य करना परम आवश्यक है तथा उसकी विचारों की श्रृंखला का एक सफल संयोजन है। प्रत्येक देश की अपनी–अपनी कला परम्परा होती है जो उस देश में निवास करते हैं। वे अपनी आशावादी जीवन दर्शन के रूप विभिन्न तरह से दिखायी देती हैं। कलाकार स्वयं एक विश्वसनीय साधक है, जो उसकी सृजनात्मक दिशा को तय करता है। उसका ज्ञान उसे पूर्णरूप से होता है तथा उसकी कार्य सीमा भी वह स्वयं निर्धारित करता है। प्राचीनकाल से हमें परम्परागत रूप में कला के विभिन्न

1–शुक्ल, रामचन्द्र : रूप शिल्प पृ0–76–77
(भारतीय आधुनिक कला की भावी दिशा)
सम्पादक– डॉ0 श्यामबिहारी अग्रवाल
प्रकाशक–ज्वालाप्रसाद विद्यासागर 129, कामता प्रसाद कक्कड़ मार्ग, इलाहाबाद (1986)

आयाम प्राप्त हुए हैं। हैवेल व अवनीन्द्रनाथ ने भारतीय कला को अपने समूचे अध्ययन के उपरान्त कला जगत को एक नई दिशा प्रदान की। भारतीय दर्शन को समझने व उसके आकार को प्रभावी ढंग से साकार करने में रवीन्द्रनाथ टैगोर का योगदान अविस्मरणीय रहा है। सन् 1923 ई0 व सन् 1928 ई0 के मध्य में टैगोर बन्धु गगनेन्द्रनाथ ने यूरोपीय 'घनवादी' कला की कुछ कलाकृतियों को चित्रित किया जो आकारों में घनवादी रूप में मात्र काल्पनिक दृश्य का एक हिस्सा बने, लेकिन मुख्य आकार यथार्थ रूप में ज्यामितीय थे।

अतः उनकी कला को घनवादी न कहकर रोमांच से प्रेरित यथार्थवादी कहना उत्तम है। गगनेन्द्रनाथ ने इस कला पर निरन्तर विचार विमर्श करके रूपांकन के नवीनतम प्रयोगों से देश के सामाजिक जीवन दर्शन एवं उसके प्रति पूर्णतः निष्ठा को संवेदना के आधार पर सौन्दर्यात्मक दृष्टि प्रदान की है।

प्रमुख कलाकारों की भूमिका—एक परिचय

1—रवीन्द्रनाथ टैगोर

भारतीय चित्रकला को मार्डन आर्ट के रूप में प्रस्तुत करने का श्रेय रवीन्द्रनाथ टैगोर को जाता है। रवीन्द्रनाथ टैगोर ने कहीं भी कला की शिक्षा ग्रहण नहीं की थी। उनका विश्वास अन्तःमन से सृजनात्मक क्रिया पर था। उन्होंने अपने जीवन के महत्वपूर्ण समय में रेखांकनों, चित्रों एवं स्केचों का संग्रहण पूर्ण किया था। अपने लेखन की कला से ही उन्होंने चित्रों को रेखांकित किया। उनका मानना था कि कलात्मक विचार केवल कार्ययुक्त दृष्टि से न होकर मन के अन्दर सहज ज्ञान पर निर्भर है। कला की आत्मा को लयबद्धता से रवीन्द्रनाथ ने व्यक्त किया। उन्होंने चित्रों की आकृतियों को विभिन्न तरह से तोड़—मरोड़ कर आधुनिकता का पहला कदम प्रस्तुत किया है। इसी प्रस्तुतीकरण के लिए उन्हें आधुनिक भारतीय कलाकार का नाम दिया गया।

रवीन्द्रनाथ के परिवार में दार्शनिक, विद्वान, कलाकार, समाज सुधारक तथा प्रतिभाशाली अनेक व्यक्ति थे। विदेशी साहित्य से भी उनका घर भरा रहता था। रवीन्द्रनाथ पर इन सबका प्रभाव पड़ा और वे कवि, नाटककार, कहानीकार, उपन्यासकार, संगीतज्ञ, अभिनेता, विचारक, दार्शनिक तथा चित्रकार आदि अनेक प्रकार का व्यक्तित्व स्वयं में विकसित कर सके। उन्होंने कलकता की बंगाल

अकादमी तथा लन्दन के यूनीवर्सिटी कालेज में शिक्षा प्राप्त की। उनका शेष समस्त जीवन परिवार तथा मित्रों के प्रभाव से ही उनके बहुमुखी विकास का द्योतक है। सन् 1901 में उन्होंने शान्ति निकेतन की स्थापना की। 1905 ई0 में विदेशी आन्दोलन में व्यस्त रहे यद्यपि वे विदेशी वस्तुओं तथा विचारों के बहिष्कार के पक्षपाती नहीं थे। 1907 में इण्डियन सोसाइटी ऑफ ओरियण्टल आर्ट की स्थापना में सहयोग दिया। 1912–13 में वे इंग्लैण्ड गये और 1913 में उन्हें "गीतांजलि" पर नोवेल पुरस्कार मिला। इससे उनकी ख्याति विश्वभर में फैल गयी। 1915 से 1919 तक विचित्रा क्लब का संचालन किया। उन्होंने बंगाल शैली की आलोचना की और उसमें अनेक कमियाँ बतायी। 1915 में ही वे जापान गये। 1919 में शान्ति निकेतन में कला भवन की स्थापना की।[1] गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर को भारत की आधुनिक चित्रकला का प्रथम चित्रकार माना जाता है। क्योंकि जब वे योरोप गये, तो पॉलक्ली तथा पिकासो आदि से बहुत प्रभावित हुये। उन्हीं की आधुनिक प्रणाली के आधार पर इन्होंने चित्र रचे जो बिना किसी पूर्व अभ्यास या चिन्तन के रचे गये।[2] उन्होंने अपनी शैली का स्वयं निर्माण किया। उनके चित्रों में रेखाओं का अभिनव प्रयोग और रंगों का कुशल सम्मिश्रण जिस ढंग से हुआ है, वह नितान्त मौलिक है।[3] रवीन्द्रनाथ टैगोर अक्षरों की ही भाँति चित्रों को भी अत्यधिक घुमावदार लयात्मक निर्मित करते थे। वे विभिन्न रंगों को पतला कर कागज पर टपकाकर उन्हें आपस में जोड़कर एक वाह्य आकृति देकर किसी पशु–पक्षी का अथवा काल्पनिक स्वरूप प्रदान करते। ये चित्र सम्पूर्णता प्राप्त करने के बाद एक नया आकार ग्रहण करते। उन्मुक्त स्वतंत्र रेखायें

1–अग्रवाल, गिर्राज किशोर : आधुनिक भारतीय चित्रकार पृ0 73
संजय पब्लिकेशन्स, शैक्षिक पुस्तक प्रकाशन
अस्पताल मार्ग, आगरा–3

2–शर्मा, लोकेश चन्द्र : भारत की चित्रकला का संक्षिप्त इतिहास पृ0 169
कृष्णा प्रकाशन मीडिया (प्रा0) लि0
11, शिवाजी रोड, मेरठ (2004)

3–गैरोला, वाचस्पति : भारतीय चित्रकला पृ0 258
चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान
38, यू0ए0 जवाहर नगर बंगलो रोड
दिल्ली–110007 (1990)

अन्नतः किसी स्वतंत्र वातावरण में पले युवा की भाँति एक अच्छा स्वरूप ही पाती किन्तु वे उच्छृंकल दिखायी नहीं देती थी।[1] 1930 को रवीन्द्रनाथ के चित्रों की प्रदर्शनी पैरिस स्थित गालेरी पिगाल[2]में देखने को मिलती है। इस प्रदर्शनी से पूरे भारत वर्ष एवं यूरोप में आश्चर्य हुआ कि टैगोर जी एक अच्छे कवि के साथ–साथ एक अच्छे चित्रकार भी हैं, उनकी इस प्रदर्शनी को देखकर यूरोप के समस्त कलाकार एवं दर्शक उनकी अत्यधिक प्रशंसा करने लगे। इसके बाद उनके चित्रों की प्रदर्शनी भारत में सन् 1932 में कोलकाता एवं मुम्बई में प्रदर्शित की गयी, यह प्रदर्शनी भी एक प्रेरक के रूप में रही। सन् 1946 ई0 में यूनेस्को में उनके चार आधुनिक चित्रों को अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी में शामिल कर लिया गया।

अपने 67 वें वर्ष तक रवीन्द्रनाथ जी ने कला के क्षेत्र में कोई विशेष कार्य नहीं किया; क्योंकि वे एक विश्वविख्यात कवि बन गये थे, उन्हें सिर्फ एक कवि के रूप में ही पहचाना जाने लगा। धीरे–धीरे उन्होंने कपड़ों की छोटे–छोटे टुकड़ों पर उँगलियों को स्याही में डूबो कर चित्रण कार्य प्रारम्भ किया तथा कुछ समय पश्चात् रंगों का प्रयोग भी शुरू किया। वे जिस चित्र की रचना करते थे वह उनको स्वयं के विचार से बनाते थे। उनके चित्रों की बनावट यूरोपीय कलाकार पैब्लो पिकासो के चित्रों की बनावट की झलक आभास होती है; क्योंकि उनके यूरोप भ्रमण से उनके मन में आये विचारों से चित्रों की रूप–रेखा में दिखायी देता है। वे आधुनिक युग के प्रेरक श्री टैगोर समूचे भारत वर्ष में प्रेरणा के

1–पाण्डेय, संध्या एवं पाण्डेय, आर0पी0 : भारतीय कला पुनर्जागरण एवं चित्रकार पृ0 49–50
मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी,
रवीन्द्रनाथ ठाकुर मार्ग, बाणगंगा
भोपाल –462003 (1997)

2–साखलकर, र0वि0 : आधुनिक चित्रकला का इतिहास पृ0 317
राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी
प्लाट नं0 1 झालाना सांस्थानिक क्षेत्र
जयपुर (2004)

पात्र बने जो उनकी अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी से स्पष्ट होता है। चित्र संख्याः 1
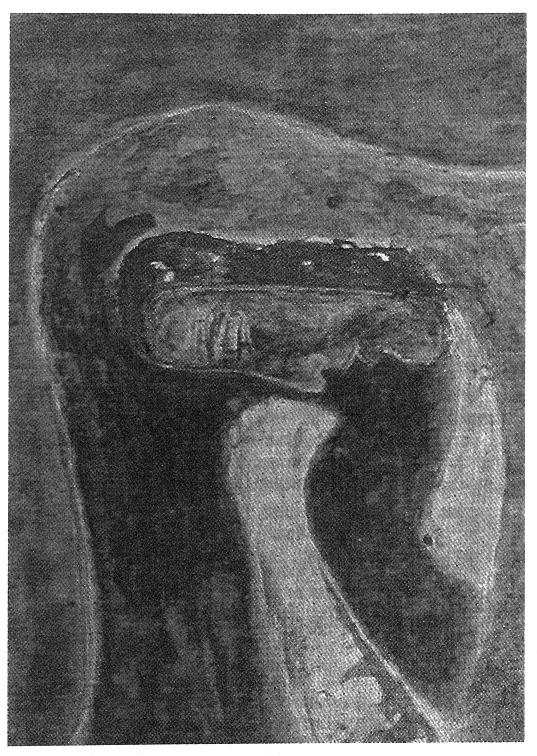
चित्र संख्याः 1
Brooding

रवीन्द्रनाथ टैगोर के चित्र स्वयं में प्रेरणादायक एवं सृजनशील रहे हैं। वे चित्रों को जल रंगों व पेस्टल रंगों, एचिंग, ड्राई प्वाइंट की तकनीक से बनाया करते थे। आधुनिक भारतीय कला में ''आधुनिकता'' को उजागर करने का सर्वप्रथम प्रयास उन्हें दिया जाता है। वे यथार्थ चित्रों को ही बनाते थे, उन्होंने सुन्दर चित्रों के अलावा कुरूप, बदसूरत, अनाकर्षक शरीर, गन्दगी से भरे चित्रों को भी चित्रित किया था। 12 वर्ष की समयावधि में उन्होंने 2000 चित्रों का संग्रह बना लिया था। उनके चित्रों में लय की गुणकारी प्रवृत्ति तथा संगीत व साहित्य की मुख्य विशेषता समाहित थी। वे जो भी कलाकृतियाँ चित्रित करते थे, उनमें परम्परा का प्रभाव कम दिखाई देता था, बल्कि परम्परा के बन्धनों से मुक्त होकर वे स्वच्छन्दता को अपनाना उचित समझते थे।

उन्होंने चित्रों में रूप–सादृश्य, छाया–प्रकाश व परिप्रेक्ष्य के नियमों की पूर्ण अवहेलना की और चित्र को रंग व रेखाओं का संयोजन मानते थे। वे हृदय में हिलोरे लेती भाव प्रवणता को कला तत्वों के सहारे चित्र में नन्दितक स्तर पर जमाते थे।[1] उन्होंने अपने अचेतन जगत से प्राप्त रंग, रेखाओं तथा आकारों में अपनी अभिव्यक्ति की। रंग के धब्बों तथा पाण्डुलिपियों में काट–छाँट कर के संयोजन में उनको अपनी आत्मा की लय तथा छन्द प्राप्त हुआ।[2]उनकी कला पूर्ण रूप से आधुनिक है, किन्तु आधुनिकता की दृष्टि से उसमें विश्व के किसी भी देश अथवा कलाकार की आकृति नहीं है।[3] रवीन्द्रनाथ खेल–खेल में ही यथार्थ से अधिक यथार्थ की ओर मुड़ गये। एक वास्तविक वस्तु से उनके अनिवार्य आन्तरिक स्वरूप को काट–छाँटकर निकालकर, चेतन–अचेतन को मिलाकर प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।[4]

1–अग्रवाल, आर0ए0 : कला विलास पृ0 207
इण्टरनेशनल पब्लिशिंग हाऊस मेरठ (2003)

2–वर्मा, अविनाश बहादुर : भारतीय चित्रकला का इतिहास पृ0 293
प्रकाश बुक डिपो,
बड़ा बाजार, बरेली (1997)

3–अग्रवाल, गिर्राज किशोर : कला और कलम पृ0 251
अशोक प्रकाशन मन्दिर
अलीगढ़ (1999)

4–बाजपेयी, राजेन्द्र : मॉडन आर्ट और भारतीय चित्रकार पृ0 38
साहित्य निकेतन
गिलिस बाजार, कानपुर–208001 (1981)

इनका जन्म कोलकाता (जोडासाँको) में 2 मई, सन् 1869 ई0 में हुआ। विचारों की अभिव्यक्ति एवं चित्रकार के रूप में इन्हें ख्याति प्राप्त हुई। इन्होंने विचारों के माध्यम से अपने ज्ञान के भण्डार को तूलिका से चित्रों को अपनी भावनाओं से साकार किया। उनके कला सम्बन्धी विचार निर्दिष्ट मार्ग का अनुसरण करती प्रतीत होती हैं। उनकी कलाकृतियों में पूर्ण रूप से प्रतिभा है तथा उनके दर्शन में भारतीयता की झलक विद्यमान है। कलाकृतियों के पीछे मौलिक कल्पना शक्ति व विशुद्ध सौन्दर्य दृष्टि प्रेरणादायक रही है। उनसे चित्रकला के बारे में पूछा गया तो जवाब था ''मेरे जीवन का प्रभात गीतों भरा था अब शाम रंग भरी हो जाये''। रवीन्द्रनाथ की कला विभिन्न अनुभूतियों एवं अभिव्यक्तियों से परिपूर्ण थी। 'थके हुए यात्री,' 'मॉ व बच्चा', 'सफेद दाग' चित्रों का संग्रह मानव जन–जीवन की एक व्यापक अनुभूति प्रदान करने वाला विचार है। वे अपनी विदेश यात्राओं में भी विश्व विख्यात कलाकारों में जाने गये। जापानी व चीनी यात्रा चित्रण पद्धतियों के अध्ययन के लिए उन्होंने जापान में तीन माह का समय व्यतीत किया। कला के प्रति घनिष्ठता हो जाने पर उन्होंने शान्ति निकेतन में कला भवन की स्थापना कर दी।

2–गगनेन्द्रनाथ टैगोर

गगनेन्द्रनाथ टैगोर उन कलाकारों में से हैं जो स्वयं बंगाल शैली या टैगोर शैली का अनुसरण तो नहीं करते बल्कि स्वतंत्र प्रतिभा सम्पन्न चित्रकार के रूप में मुखरित हुए। इन्होंने बंगाल शैली को पूर्णरूप से प्रोत्साहित किया। इनका जन्म सन् 1867 ई0 में बंगाल में हुआ। ये अवनीन्द्रनाथ टैगोर के ज्येष्ठ भाई थे। अत्यधिक लगनशीलता एवं परिश्रम से उन्होंने कलात्मक वातावरण में रहते हुए निजी शैली को उच्चतम शीर्ष तक पहुँचाया। इन्होंने कला की औपचारिक शिक्षा ग्रहण नहीं की, बल्कि घर–परिवार का कलात्मक वातावरण देखकर इनके मन में भी कलाकार बनने का भाव जागृत हुआ। इन्होंने बंगाल शैली एवं भारतीय आधुनिक कला को एक ऊँचे मुकाम तक पहुँचाया। आपके कार्य करने का ढंग भारतीय लघु चित्र, विदेशी चित्रों की कलात्मकता को परखने का शौक था। ये रेखाचित्र बचपन से ही बनाते थे तथा रंगों को सुन्दर ढंग से संयोजित करते थे। ये सदैव सामाजिक व राजनैतिक

गतिविधियों पर भी रुचि लेते थे तथा इन्होंने रेखाचित्र व पोस्टर बनाना आरम्भ किया, जिससे इन्हें सामाजिक क्रिया–कलापों एवं गतिविधियों का अनुभव एवं अभिव्यक्ति होती थी। चित्र संख्या : 2

चित्र संख्या :2
संयोजन

आधुनिक चित्रकला के प्रवर्तक अवनीन्द्र बाबू से उद्देश्यों का सफल निर्वाह यद्यपि नन्दलाल बसु तथा उनकी शिष्य–परम्परा ने किया, फिर भी इस प्रसंग में गगनेन्द्रनाथ ठाकुर का नाम उल्लेखनीय है। यद्यपि अवनीन्द्र बाबू की भाँति उनके अग्रज गगनेन्द्र बाबू का भी बंगाल के लोक जीवन और वहाँ की संस्कृति से पूर्ण परिचय था और 'चैतन्य चरित्र' से सम्बन्धित उनके चित्रों में इस दृष्टिकोण की झलक दिखायी देती है, तथापि उनकी कला ख्याति सीमित परिधि में ही सिमट कर रह गयी।[1] गगनेन्द्रनाथ ठाकुर ने डॉ0 स्टैला क्रैमरिश के प्रभाव में आकर 1923 ई0 के लगभग अनेक घनवादी प्रयोग आरम्भ कर दिये। उन्होंने घनवादी तथा स्वपनिल शैली आदि अनेक शैलियों में चित्र बनाये।[2] रंग–विन्यास व आकारों की चित्रतल पर सजावट में उन्होंने यूरोपियन प्रभाववाद व घनवाद को चुनने में पहल की। भारतीय लघु चित्रों, विदेशी चित्रों तथा प्रत्येक कलात्मक वस्तु को निखरने–परखने का उन्हें बड़ा शौक था, उनकी इसी रुचि के कारण इनके पास निजी का एक बड़ा संग्रह भी हो गया था, रेखाचित्र बचपन से बनाते थे।[3] गगनेन्द्रनाथ ने वस्तु निरपेक्ष का प्रभाव ग्रहण करते हुये शहर की गलियों, उनमें बसने वाले मानवों के मनोभाव का प्रदर्शन करने का प्रयास किया, जिनमें ज्यामितीय आकारों की प्रधानता है। इस प्रकार के चित्रों में रात्रि में शहर, प्रेतग्रस्त भवन, संयोजन, सुनसान वीरान भवन जैसे चित्र उल्लेखनीय हैं।[4]

1–गैरोला, वाचस्पति : भारतीय चित्रकला पृ0 259
चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान
38, यू0ए0 जवाहर नगर बंगलो रोड,
पो0बा0 नं0 2113
दिल्ली–110007 (1990)

2–वर्मा, अविनाश बहादुर : भारतीय चित्रकला का इतिहास पृ0 296
प्रकाश बुक डिपो,
बड़ा बाजार, बरेली (1997)

3–अग्रवाल, आर0ए0 : कला विलास, पृ0 205
इण्टरनेशनल पब्लिशिंग हाऊस
मेरठ (2003)

4–पाण्डेय, सन्ध्या एवं पाण्डेय, आर0पी0 : भारतीय कला पुनर्जागरण एवं चित्रकार पृ0 54
मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी
रवीन्द्रनाथ ठाकुर मार्ग, बाणगंगा
भोपाल–462003 (1997)

गगनेन्द्रनाथ ने रूपहले तथा सुनहरे धरातलों एवं रेशम पर काली स्याही से स्केच करके अनेक चित्र बनाये, जिनमें कहीं–कहीं लाल तथा हरे रंगों के स्पर्श चित्रों को अपूर्व सौन्दर्य प्रदान करते हैं। उनके प्रभाववादी चित्रों में कांग्रेस को सम्बोधित कवि रवीन्द्र, जंगल की आग, रायल जेकरिण्डा, बसन्त, रॉची में सूर्यास्त आदि विशेष प्रसिद्ध हैं। उन्होंने अनेक नये और साहसपूर्ण प्रयोग भी किये। पुरी की स्वर्णिम रेत, तीर्थाटन तथा इसी प्रकार के अन्य चित्र सुनहरी धरातल पर स्याही से अंकित हैं, जिनमें युक्तियों का बड़ा ही प्रभावी उपयोग हुआ है। उन्होंने हिमालय के भी अनेक चित्र बनाये हैं। प्रकाश की प्रथम किरण इनमें सर्वश्रेष्ठ चित्र है जिसमें हिमालय के शिखर को हल्की गुलाबी तथा बैगनी आभावों से रंजित करती सूर्य की प्रथम रश्मियों का चित्रण किया गया है।[1] उनके द्वारा काले तथा श्वेत रंगों में चित्रित आकृतियाँ रहस्यमय लगती हैं। घनवाद के अतिरिक्त अभिव्यक्तिवादी शैली में भी उन्होंने चित्र रचना की।[2] गगनेन्द्र सभी बन्धुओं से भिन्न थे। उन्होंने यूरोपीय वाटर कलर शैली के साथ–साथ छाया और प्रकाश के माध्यम से चित्रांकन करने का तौर–तरीका अपनाया। इस दृष्टि से जर्मनी के सुप्रसिद्ध चित्रकार 'ड्यूरर' और नार्वे का चित्रकार 'मुंश' का प्रभाव भी उन पर देखा जा सकता है।[3]

उनके द्वारा रुमानी व कल्पनाशील चित्रों अर्जुन व चित्रंगदा व गार्डन ऑफ मिस्ट्री जैसे चित्रों का संग्रह है। ऐसे चित्रों में कल्पना लोक, परियों की दुनियाँ के रंग व स्वच्छता को प्रेरित करते हैं। कलाकार अपनी अभिव्यक्ति से धूप–छाँव के प्राकृतिक वैभव को चित्रित करता है। गगनेन्द्रनाथ टैगोर ने व्यंग्य चित्र भी बनाये तथा उनकी प्रयोगमूलक दिशा में भी उत्सुकता रही। अवनीन्द्रनाथ

1–अग्रवाल, गिर्राज किशोर : आधुनिक भारतीय चित्रकला पृ0 80
संजय पब्लिकेशन्स,
शैक्षिक पुस्तक प्रकाशक मार्ग, आगरा–3 (1991)

2–अग्रवाल, गिर्राज किशोर : कला और कलम पृ0 252
अशोक प्रकाशन मन्दिर
27–ए, साकेत कालोनी,
अलीगढ़–202001 (1999)

3–बाजपेयी, राजेन्द्र : मॉडर्न आर्ट और भारतीय चित्रकार पृ0 45
साहित्य निकेतन
गिलिस बाजार,
कानपुर–208001 (1981)

व गगनेन्द्रनाथ ने एक साथ मिलकर ''इण्डियन सोसाइटी ऑफ ओरियन्टल आर्ट'' नाम से एक कला संस्था का निर्माण किया जिससे आधुनिक चित्रकला के चित्रकार लाभान्वित हुए। इससे कलाकारों के विचारों में आदान–प्रदान हुआ। इस सोसाइटी से प्रदर्शनियों का आयोजन किया गया जिससे समाज के साथ सम्पर्क बढ़ता गया। इनके चित्रों को देखने से इटालियन चित्रकार कैरावेज्जियो की तस्वीरों में पड़ने वाली गहरी व लम्बी–लम्बी परछाईयाँ नजर आती हैं। जर्मनी के छापा चित्रकारों ने काले–सफेद व्यंग्य चित्र बनाये तो गगनेन्द्रनाथ टैगोर ने धान के खेतों, नदी के किनारे मन्दिरों, ताड़ और नारियल के पेड़ों की कतारों, तूफान एवं धुन्ध से आच्छादित पहाड़ियों का काले व सफेद रंग से बड़ा 'कन्ट्रास्ट' चित्रण किया है। सन् 1938 ई0 में बंगाल स्कूल के प्रथम प्रयोगवादी भारतीय आधुनिक चित्रकार का निधन हो गया।

3–अवनीन्द्रनाथ टैगोर

भारतीय चित्रकला में आधुनिक कला के मुख्य रूप से कहे जाने वाले नायकों में अवनीन्द्रनाथ टैगोर जी का नाम आता है। इनका जन्म 7 अगस्त, सन् 1871 ई0 जोडासॉको (कोलकाता) में हुआ था। इनके अग्रज भाई गगनेन्द्रनाथ टैगोर भी एक चित्रकार थे। इनके परिवार में भाई व चाचा रवीन्द्रनाथ जी सभी को चित्रकार होने का पैतृक श्रेय था। इनकी कला की शिक्षा–दीक्षा इटली के चित्रकार गिलारडी तथा अंग्रेज चित्रकार पालमर की संरक्षण में हुआ। इन्होंने लगभग 10 व 15 वर्ष तक कार्य किया। जल रंग, तैल रंग, पेंसिल, स्याही इत्यादि के अनेक तकनीकी ज्ञान इन्हें होने लगा। कला शिक्षा ग्रहण करते समय धीरे–धीरे इन्हें अपनी परम्परा का भी बोध होने लगा एवं इन्होंने यह अनुभव किया कि विदेशी पद्धति अपनाने से भारतीय कला परम्परा का ध्यान हट जायेगा। इन्होंने सन् 1895 ई0 में भारतीय कला परम्परा की ओर अग्रसर होकर ध्यान दिया तथा एक चित्रकला का परम्परावादी स्तम्भ खड़ा कर दिया।

सन् 1905 ई0 के लगभग टैकन और हिसिदा नामक जापानी चित्रकारों से इनकी मुलाकात हुई तथा जापानी तकनीक व वॉश प्रणाली का ज्ञान प्राप्त किया। डॉ0 आनन्द कुमार स्वामी व ई0वी0 हैवेल से इनका परिचय इसी दौरान हुआ। ये चित्रकार भारत के

विभिन्न स्थानों में अपने विचार मंथन से भारतीय परम्परा को बढ़ावा दे रहे थे। यह परम्परा भारत के प्रत्येक कला संस्थानों में पूर्णतया व्यापक रूप ले रही थी। इसी समय को कला का पुनरुत्थान काल माना गया। डॉ0 आनन्द कुमार स्वामी व ई0वी0 हैवेल ने अवनीन्द्रनाथ टैगोर की आधुनिक भारतीय कला परम्परा पर विशेष ध्यान देने के लिए उनके विचारों की अत्यधिक प्रशंसा की। भारतीय परम्परा को कला के रूप में जागृत करना उनके जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग बन गया। चित्र संख्या : 3
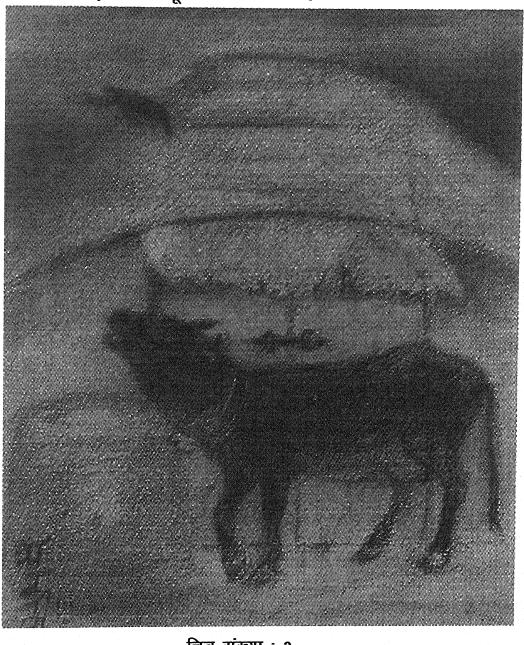
चित्र संख्या : 3
प्रातः

वे कला जगत में अवनी बाबू के नाम से प्रसिद्ध थे। वे भारतीय कला के महान् पंडित थे। जापानी चित्रकारों के प्रभाव से उन्होंने एक नई विधि ''वॉश'' को जन्म दिया। यह जापानी जल रंग तथा इंग्लैण्ड की जल रंग विधियों से पूर्ण स्वतन्त्र थी।[1]

प्राचीन भारतीय कला के प्रति भी अवनी बाबू को बहुत लगाव था। उन्होंने पुरानी कला कृतियाँ खरीदने में बहुत पैसा खर्च किया। कला विद्यालय में संस्कृत सिखाने के लिए एक पंडित तथा परम्परागत चित्रकला के शिक्षण के लिए पटना के ईश्वरी प्रसाद को नियुक्त किया। जयपुर भित्ति–चित्रण सिखाने के लिए भी कुछ कलाकार जयपुर से बुलवाये। सन् 1909–10 में अजन्ता के चित्रों की अनुकृति करने के लिए इंग्लैण्ड से लेडी हेरिंघम की अध्यक्षता में जो दल आया था उसकी सहायता करने के लिए अपने शिष्यों नन्दलाल बसु, असित कुमार हल्दार, समरेन्द्रनाथ गुप्त तथा वेंकटप्पा को भेजा। ये अनुकृतियाँ इण्डिया सोसाइटी लन्दन द्वारा प्रकाशित की गयी।[2]

कलागुरू अवनीन्द्रनाथ टैगोर एक आदर्श चित्रकार तथा चित्रकला अध्यापक थे। संगीत तथा प्राकृतिक दृश्यों से आपको कला के प्रति अनुराग था।[3] कला क्षेत्र में अवनीन्द्रनाथ ठाकुर ने मन की गहराईयों और कल्पनाओं को रंग और रेखाओं का अवलम्बन लेकर पत्रों पर अंकित किया है, तूलिका की एक नई भाषा को जन्म दिया है, चित्र की एक नई परिभाषा प्रस्तुत की और इस प्रकार कला की एक नई भूमिका को जन्म दिया और अन्तर्मन की सूक्ष्मता से ही उसकी गहराईयों के साथ रूप देने का प्रयास किया।[4] अवनीन्द्रनाथ ने भारतीय चित्र जगत को दो महान भेंटें दी

1–अग्रवाल, आर0ए0 : कला विलास
इन्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस पृ0 194
मेरठ (2003)

2–अग्रवाल, गिर्राज किशोर : आधुनिक भारतीय चित्रकला पृ0 33
संजय पब्लिकेशन्स
शैक्षिक पुस्तक प्रकाशन अस्पताल मार्ग, आगरा–3

3–झा, चिरंजी लाल : भारतीय चित्रकला का विकास पृ0 109
लक्ष्मी कला कुटीर
नया गंज
गाजियाबाद (1969)

4–कादरी, एस0एम0 असगर अली : भारतीय चित्रकला का इतिहास पृ0 264
स्टूडेन्ट स्टोर 35–ए–1,रामपुर बाग,बरेली (2002)

हैं। पहली ''प्राकृतिक दृश्यों'' की जिनका रंग–विधान पूर्णरूप से स्पष्ट योरोपीय है लेकिन भाव पूर्णतः भारतीय। प्रकृति चित्रों की शैली वर्णनात्मक है। विशाल नदियाँ, जल समूह, वृक्ष, घास, टापू, नौकायें आदि और दूसरी उनकी सबसे बड़ी देन है ''व्यक्ति चित्र''। ये अधिकांश चित्र पेस्टल में बनाये गये हैं और कुछ वाटर कलर में भी।[1]

अवनीन्द्रनाथ टैगोर की कला में मौलिकता की पहचान है। प्रयोगवादी कलाकार होने के साथ विभिन्न तकनीक को समझने का अनुभव उन्हें रहा। इनके चित्रों में यूरोपीय पद्धति का प्रभाव धीरे–धीरे कम होने लगा तथा जो कला विदेशों में चाहे वह चीनी हो या जापानी उनमें सुधार लाकर भारतीयता की झलक दिखने लगी। सुन्दर आकृति, आकार में अजन्ता को उन्होंने अपना आदर्श माना। इन्होंने वॉश तकनीक एवं प्राचीन प्रणाली का भी अनुकरण अपने चित्रों में किया है। ''दि पासिंग ऑफ शाहजहॉ''इनकी अनुपम कृति रही है। इनके चित्रों को देखने से उनमें गति की तीव्रता तो नहीं है, बल्कि चित्र में सजीवता रेखाओं की गति आकर्षित करती है। अधिकांशतः इनके हास्य चित्र देखने को मिलते हैं। 'गणेश', 'पार्वती', 'पानी के बुलबुले बनाता हुआ बालक' उल्लेखनीय है।

4– नन्दलाल बोस

नन्दलाल बोस शान्ति निकेतन के प्रमुख कला अध्यापक एवं पुनरुत्थान कला स्कूल के चित्रकार के रूप में माने जाते हैं। इन्होंने इंजीनियर बनने के बजाय कला की साधना की तथा एक प्रतिष्ठित कलाकार के रूप में जाने गये। इनका जन्म 3 दिसम्बर सन् 1883 ई0 में खड़गपुर जिला मुंगेर में हुआ था। मैट्रिकुलेशन की परीक्षा कोलकाता से उत्तीर्ण की तथा वे अवनीन्द्रनाथ टैगोर के शिष्य के रूप में प्रतिभाशाली चित्रकार बने। शिक्षा ग्रहण करने के उपरान्त लेडी हेरिंघम की अध्यक्षता में अजन्ता की प्रतिलिपियाँ तैयार की थी। इनके चित्रों के मुख्य विषय राम, कृष्ण, शिव एवं विष्णु की विभिन्न मुद्राओं का अवलोकन देखने को मिलता है।

1–बाजपेयी, राजेन्द्र : मॉडर्न आर्ट और भारतीय चित्रकार पृ0 31
साहित्य निकेतन
गिलिस बाजार,
कानपुर–208001 (1981)

इनके द्वारा बनाया गया शिवशीश प्रमुख है। चित्र संख्या : 4
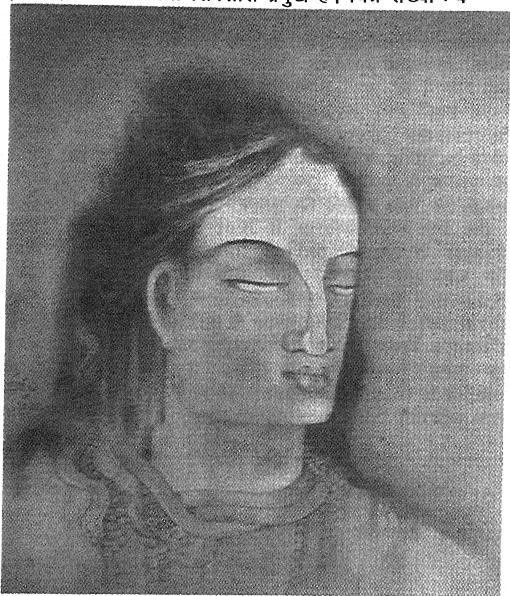
चित्र संख्याः 4
शिवशीश

उन्होंने अपने विद्यार्थी जीवन में ही ऐतिहासिक तथा पौराणिक चित्रों की रचना की, जिन चित्रों को उन्होंने गिने–चुने अमीरों को न बेचकर अपने गॉव के साधारण व्यक्तियों को चार–चार आने में ही बेच डाला।[1] बोस बाबू भारतीय ग्राफिक कला के अद्वितीय पथ प्रदर्शक थे। 1924 ई0 में आपने रवीन्द्रबाबू

1–शर्मा, लाकेश चन्द्र : भारत की चित्रकला का संक्षिप्त इतिहास पृ0 169 कृष्णा प्रकाशन मीडिया (प्रा0) लि0 11, शिवाजी रोड, मेरठ (2005)

के साथ चीन और जापान का भ्रमण किया था।[1] पौराणिक के अतिरिक्त भारतीय इतिहास, धर्म, स्वच्छन्दवादिता और जीवन को भी आधार मानकर चित्र रचना की थी।[2] उनके चित्रों के विषय अधिकांशतः हिन्दू–पौराणिक तथा धार्मिक कथानकों अथवा बुद्ध–जीवन से लिये गये हैं। उन्होंने भित्ति चित्रों का निर्माण किया है।[3] नन्दलाल बोस को पौराणिक एवं धार्मिक, चित्र विषय अत्यन्त रुचिकर थे। उन्होंने देवी–देवताओं, रामायण, महाभारत और धार्मिक कथानकों के अनेकों चित्र बनाये। उनके अतिरिक्त ग्रामीण दैनिक जीवन का चित्रण सशक्त प्रवाहपूर्ण रेखाओं से मौलिक रूप से किया। उन्होंने भारतीय चित्रकला की विशिष्टताओं का अध्ययन किया।[4] नन्दलाल बसु के चित्रों में भारतीय आत्मा पूर्ण रूप से उतरी है। लगता है वे अजन्ता के किसी चित्रकार के वंशज हैं। इनकी शिल्पाचर्या में रंग बोध, जीवन रेखाओं की चंचल गति, शिल्प शैली का प्रर्वतन सक्षम और अमर है। शिल्प में उनका मर्म बोध इतना गहन और प्रदीप्त है जो अनागत काल के लिए भारतीय शिल्प इतिहास में भास्कर सदृश रहेगा।[5] यद्यपि उनकी कलाकारिता की सर्वत्र मुक्तकण्ठ से प्रशंसा ही हुई; किन्तु उनके कुछ आलोचकों ने यह भी कहा कि ''उनकी कृतियाँ कला के इतिहास में केवल एक क्षण हैं; सदा प्रवहमान निरन्तर गतिशील धारा

1–झा, चिरंजी लाल : भारतीय चित्रकला का विकास पृ0 111
लक्ष्मी कला कुटीर नया गंज
गाजियाबाद (1969)30–वही, पृ0 111

2–वही पृ0 111

3–अग्रवाल, गिर्राज किशोर : कला और कलम पृ0 246
अशोक प्रकाशन मन्दिर 27–ए, साकेत
कालोनी अलीगढ़–202001 (1999)

4–पाण्डेय, सन्ध्या एवं पाण्डेय, आर0पी0 : भारतीय कला पुनर्जागरण एवं चित्रकार
पृ0 26–27
मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी
रवीन्द्रनाथ ठाकुर मार्ग, बाणगंगा
भोपाल–462003 (1997)

5–अग्रवाल, आर0ए0 : कला विलास पृ0 197
इण्टरनेशनल पब्लिशिंग हाऊस
मेरठ–250001 (2003)

नहीं।''[1] 'रूपावली' और 'शिल्पकथा' उनकी दो प्रसिद्ध पुस्तकें हैं। मन्डन शिल्प (अर्नामेंट आर्ट) का आचार्य बसु को प्रमाणिक शिल्पी माना जाता है।[2] शान्ति निकेतन के उनके चित्र बंगाल के पट चित्रों की भाँति सपाट हैं। ''राधा का विरह'' इसी प्रकार का चित्र है। अवनी बाबू के काम में जहाँ नाजुकपन था वहाँ नन्द बाबू के काम में ओज तथा भारीपन है।[3] नन्दलाल बसु ने अजन्ता, बाघ गुफाओं के भित्ति चित्रों की प्रतिलिपियाँ तैयार कीं, जिससे उनकी ख्याति फैल गई।[4] नन्दलाल बोस ने मुख्य रूप से 'टेम्परा' और 'वाटर कलर' में ही अपने चित्र बनाये हैं। शैली के अनुरूप उन्होंने चित्र विषय भी भारतीय धार्मिक और पौराणिक गाथाओं से लिए हैं।[5]

सन् 1935 ई0 में वे अखिल भारतीय कांग्रेस के लखनऊ अधिवेशन में प्रदर्शनी कक्ष के अधिकारी पद पर आसीन हुए थे। सन् 1950 ई0 में बनारस विश्वविद्यालय ने उन्हें डाक्टर ऑफ लेटर्स, सन् 1955 में भारत सरकार ने पद्म विभूषण एवं विश्व भारतीय शान्ति निकेतन विश्वविद्यालय ने देशीकोत्तमा की उपाधियों से अलंकृत किया। उनके बनाये हुए चित्र प्रायः वॉश टैकनीक में थे। सती', 'शिव विषपान करते हुए', 'स्वर्ण कलश', 'अर्ध—नारीश्वर', 'सरस्वती', 'वीणा वादिनी', 'वृक्षारोपण' जैसे चित्रों ने आज भी आधुनिक कला को प्रबलता प्रदान की है। पौराणिक चित्रों के

1—गैरोला, वाचस्पति : भारतीय चित्रकला पृ0 259
चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान
38, यू0ए0 जवाहरनगर बंगलो रोड
पो0बा0 नं0 3113दिल्ली—110007 (1990)

2—वही, पृ0 260

3—अग्रवाल, गिर्राराज किशोर : आधुनिक भारतीय चित्रकला पृ0 39
संजय पब्लिकेशन्स
शैक्षिक पुस्तक प्रकाशक अस्पताल मार्ग
आगरा—3 (1991)

4—वर्मा, अविनाश बहादुर : भारतीय चित्रकला का इतिहास पृ0 296
प्रकाश बुक डिपो
बड़ा बाजार, बरेली (1997)

5—बाजपेयी, राजेन्द्र : मॉडर्न आर्ट और भारतीय चित्रकार
पृ0 51
साहित्य निकेतन
गिलिस बाजार, कानपुर—208001 (1981)

अतिरिक्त इन्होंने इतिहास, धर्म एवं जीवन को आधार मानकर चित्रों का संग्रह तैयार किया। इन चित्रों में रंगों को श्रृंगारयुक्त उत्तम गुणों के द्वारा व्यक्त किया। परम्परा के सम्बन्ध में इन्होंने कला परम्परा को व्यापार में पूँजी के समान आवश्यक बताया। परम्परा को पूर्णरूप से समझने तथा उसमें यथार्थ की उपेक्षा रखने के लिए चित्रकार के स्वभाव व मौलिकता की आवश्यकता को माध्यम बताया है। एक चित्रकार को उत्साह एवं पवित्रता में रहने के लिए विशेष गुणों की आवश्यकता होती है। इस तरह के समस्त गुण उनके स्वभाव व चित्रों से ज्ञात होते हैं।

5– यामिनी राय

यामिनी राय का जन्म सन् 1887 ई0 में पश्चिम बंगाल में हुआ था। आधुनिक चित्रकला में इनका नाम ऐतिहासिक रूप में इसलिए लिया जाता है कि उन्होंने प्रारम्भ से लेकर अन्त तक लोक कला की परम्परा के उद्देश्यों का पालन किया था। आज भी पूरे विश्व में यामिनी राय का नाम भारतीय वास्तविक कलाकार के नाम से जाना जाता है। उन्होंने अपने यूनेस्को की कला प्रदर्शनी में अड़तालीस देशों से प्राप्त चित्रों का समीक्षात्मक अध्ययन कर अपने टिप्पणियों को पेरिस के प्रभाव से अछूता बताया। उनके चित्र आज भी पूरे विश्व में आर्ट गैलेरियों को सुशोभित कर रहे हैं।

उनके ग्राम्य जीवन सम्बन्धी चित्र उनकी कला के उत्कृष्ट नमूने कहे जा सकते हैं। उन्होंने लोक कला की अनुभूतियों को विशेष रूप से ग्रहण किया, जबकि उनके समकालीन चित्रकार बंगाल स्कूल के प्रभाव से अपने को मुक्त न कर सके। उन्होंने कलकता में रहते हुए भी अपने लिए नये मार्ग का निर्माण किया।[1] वास्तव में यह कलाकार पचास वर्ष तक निरन्तर कला साधना में लीन रहे, एक सच्चे वैष्णव–जन की भाँति। रंग व रेखाओं के प्रयोगों में अपने को ऐसा समर्पित किया कि उन्हें अभिव्यक्ति की बिल्कुल मौलिक तर्ज मिल गई।[2] उनके द्वारा बनायी गयी तीन

1–गैरोला, वाचस्पति : भारतीय चित्रकला पृ0 260
चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान 38, यू0ए0 जवाहर नगर बंगलो रोड पो0बा0 नं0 2113 दिल्ली 1990

2–अग्रवाल, आर0ए0 : कला विलास पृ0 200
इण्टरनेशनल पब्लिशिंग हाऊस
मेरठ–250001 (2003)

पुजारिन का चित्र प्रमुख है। चित्र संख्या : 5
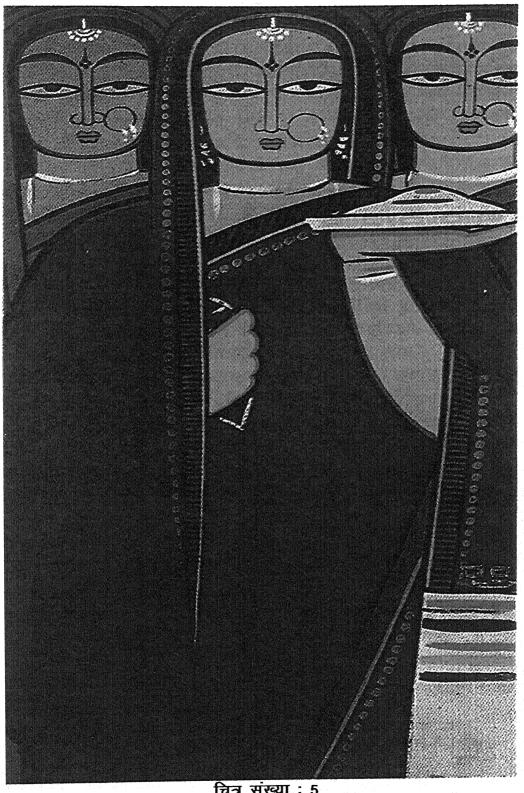
चित्र संख्या : 5
तीन पुजारिन

यूरोपीय कला समीक्षकों ने यामिनी राय की ईसाई धर्म विषयक कृतियों और बाइजेंटाइन कलाकृतियों में अद्भुत तत्त्व–साम्य का अनुभव किया है और यह स्वीकारा है कि यामिनी बाबू की कला में निश्चय ही मौलिकता और उच्च भाव–भूमि है। आकृति चित्रण की सरलता के कारण उनकी तुलना हेनरी मातिस नामक आधुनिक चित्रकार से भी की जाती है।[1] उनकी स्वच्छन्द अभिरुचि को तत्कालीन कला–धारा से सन्तोष प्राप्त नहीं हुआ और उनकी मौलिक सृजना के प्रति इच्छा अधिक बलवती हुई। 1921 ई0 में लगभग चौतीस वर्ष की अवस्था में उनका ध्यान बंगाल की लोक कला और गया (बिहार) के पट–चित्रण की ओर गया। यामिनी राय लोक कला से प्रेरणा ग्रहण करने के लिये सतत प्रयत्नशील रहे।[2]

राय की दृष्टि में समय के परिवर्तन में नवीनतम विचार रूपायित होते रहे हैं। ग्रामीण जीवन पर आधारित उनके चित्र काफी लोकप्रिय रहे, यही चित्र उनकी सफलता के प्रतीक हैं। लोक कला से प्रेरित होकर उन्होंने विभिन्न अनुभूतियों को स्वरूप दिया तथा एक प्रशस्त मार्ग का निर्माण भी समाज को अपनी कला के माध्यम से प्रदान किया। प्रारम्भ में यामिनी राय ने बंगाल स्कूल की परम्परागत चित्रों की ओर विशेष ध्यान दिया, लेकिन धीरे–धीरे अपने देश की संस्कृति की ओर अग्रसर होने में उनके मन में निरन्तर वृद्धि होती रही। उन्होंने इस दिशा में लोकप्रियता को व्यापक दृष्टिकोण से दर्शाया। वे पौराणिक कथाओं के साथ–साथ धार्मिक विषयों को विशेष ढंग से चित्रों के माध्यम से उतारते थे। सहज दृष्टि से निर्मित उनकी कृतियों को समाज के विभिन्न वर्गों ने पसन्द किया।

जामिनी राय लोक कला को नव–जीवन प्रदान करने के साथ–साथ जीवन पर्यन्त प्राकृतिक दृश्यों को भी अपने चित्र फलकों पर उतारते रहे हैं।[3] ग्राम्य जीवन को जिस आधुनिक

1–अग्रवाल, गिर्राज किशोर : कला और कमल पृ0 255
अशोक प्रकाशन मन्दिर
27–ए, साकेत कालोनी अलीगढ़–202001 (1999)

2–वर्मा, अविनाश बहादुर : भारतीय चित्रकला का इतिहास पृ0 291
प्रकाश बुक डिपो बड़ा बाजार बरेली (1997)

3–बाजपेयी, राजेन्द्र : मॉडर्न आर्ट और भारतीय चित्रकला पृ0 68
साहित्य निकेतन, गिलिस बाजार
कानपुर–208001 (1981)

प्रणाली से उन्होंने चित्रित किया वह अपूर्व है। प्रारम्भ में उन्होंने व्यक्ति चित्र आदि की रचना की जो बहुत पसन्द की गई।[1] आकृतियाँ अलंकार पूर्ण, आँखें बड़ी नुकीली हैं और कान तक चली गई हैं। अंगों के चित्रण में संकेत की भावना रंग में सरलता तथा प्रभाव और संयोजन साधारण देखकर जैमिनी राय के व्यक्तित्व का बोध होता है।[2] उनके चित्रों में पौराणिक विषयों एवं जानवरों के चित्र भी है। 1940 से उनके चित्रों की विदेशों में माँग बढ़ती गयी व उनके साथ ही उनके चित्रण में यान्त्रिक कृत्रिमता आ गयी।[3] रंगों के दृष्टिकोण से भी इनके चित्रों का महत्व अधिक है।[4] यामिनी राय ने लोक कला की रंग योजनाओं में कुछ नये रंगों को बढ़ाकर इन्हें और भी समृद्ध कर दिया है। इस अवधि में उन्होंने रामायण तथा कृष्ण लीला का चित्रण किया है। इन चित्रों में एक चश्म चेहरे एक ही रेखा में माथे और नाक का अंकन, लाल पृष्ठिका तथा चमकदार शुद्ध रंगों की विशेषताएँ हैं; किन्तु रामायण के चित्रों की तुलना में कृष्ण लीला के चित्रों में लयात्मकता तथा आलंकारिक प्रभाव अधिक हैं।[5] यामिनी राय ने अपने ढंग से चित्रण किया। बिना रंगों के प्रयोग द्वारा साधारण सामान्य आकृतियों को सुन्दर रेखाओं द्वारा एक विशिष्ट प्रकार का लयात्मक चित्रण किया। इसी प्रकार दूसरे वर्ग के चित्रों को वे

1–शर्मा, लोकेश चन्द्र : भारत की चित्रकला का संक्षिप्त इतिहास पृ0 171–172
कृष्णा प्रकाशन मीडिया (प्रा0) लि0
11, शिवाजी रोड, मेरठ (2005)

2–झा, चिरंजी लाल : भारतीय चित्रकला का विकास पृ0 116
लक्ष्मी कला कुटीर, नया गंज
गाजियाबाद (1969)

3–साखलकर, र0वि0 : आधुनिक चित्रकला का इतिहास पृ0 349
राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ आकदमी
ए–26/2 विद्यालय मार्ग, तिलकनगर,
जयपुर–302004 (1989)

4–कादरी, एस0एम0 असगर अली : भारतीय चित्रकला का इतिहास पृ0 256
स्टूडेन्ट स्टोर 35–ए–1, रामपुर बाग
बरेली–243001 (2002)

5–अग्रवाल, गिर्राज किशोर : आधुनिक भारतीय चित्रकला पृ0 83
संजय पब्लिकेशन्स, शैक्षिक पुस्तक प्रकाशक,
अस्पताल मार्ग, आगरा–3 (1999)

सुन्दर, सशक्त, काली मोटी रेखाकृतियों को विशुद्ध चटकीले ओपेक रंगों से चित्रित करते। कभी चित्रों में पृष्ठभूमि आदि दिखाकर कोई विशिष्ट वातावरण दर्शाने की अपेक्षा अलंकरण की भाँति आकृतियों को समूह में चित्रित करते। तीसरे प्रकार की चित्रशैली में उन्होंने तूलिका द्वारा भावनात्मक अंकन का प्रयास किया। कभी–कभी चित्र की सपाट पृष्ठभूमि में किसी पशु अथवा अन्य आकृतियों को मध्य में एवं चारों ओर लोक कला शैली की भाँति अलंकृत बार्डर चित्रित किया।[1]

यामिनी राय के चित्रों ने बंगाल को ही नहीं बल्कि आधुनिक चित्रकला को भी एक नया सोपान दिया। उन्होंने भावमयी लोक कला को अपनाया, जो कला के उज्जवल भविष्य के रूप में उभर कर आयी। उन्होंने ग्रामीण शिल्पियों से प्रेरणा प्रदान की। उनका यह प्रयास आधुनिक चित्रकला की मौलिकता को दृष्टिगत रखते हुए कला इतिहास में जाना जाता है। यूरोपीय चित्रों के प्रभाव को स्वाधीनता में परिवर्तित करने में बंगाल स्कूल के भारतीय कलाकारों ने अपनी कलाकृतियों में बुलंद आवाज को चित्रित किया, जिनमें यामिनी राय भी थे। उन्होंने अपनी शैली को विकसित करते हुए सादा, स्वदेशी एवं सशक्त भावना में अपने चित्रों को विभिन्न रंगों के माध्यम से आधुनिकता की राह दिखाई। द्वितीय विश्वयुद्ध के उपरान्त उनके चित्र अत्यधिक लोकप्रिय हो गये। विदेशों में उनके द्वारा बनाये गये चित्रों की प्रशंसा होने लगी, इसलिए यामिनी राय को भारतीय सच्चाई व कर्मनिष्ठता का प्रतिनिधित्व करने वाले समकालीन कलाकार कहा है। उन्होंने अपने जीवन काल में पश्चिमी कलाकारों की नकल नहीं की और न ही उनसे कला सृजन की प्रेरणा ली। उन्होंने अपने अन्दर ज्ञान का दर्शन एवं विचारों का मंथन किया। उनके चित्रों में लम्बी–लम्बी चपटी आँखें, मोटी–मोटी शुद्ध चमकते–दमकते रंग यामिनी राय के चित्रों की विशेष पहचान रही है। पटुवा लोक कला के साथ– साथ कण्ठाओं एवं अल्पनाओं की शैली का भी प्रभाव उनके चित्रों में मिलता है। 3 अक्टूबर सन् 1980 ई0 को मुम्बई में उनके चित्रों की प्रदर्शनी लगी। उनके इन चित्रों से कला जगत् के कलाकारों एवं दर्शकों को देखने का सुअवसर प्रदान हुआ।

1–पाण्डेय, सन्ध्या एवं पाण्डेय, आर0पी0 : भारतीय कला पुनर्जागरण एवं चित्रकार पृ0 43–44, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अगादमी, रवीन्द्रनाथ ठाकुर मार्ग, बाणगंगा, भोपाल–462003 (1997)

6– अमृता शेरगिल

भारतीय कला को आधुनिकता की दिशा में स्वरूप प्रदान करने हेतु अमृता शेरगिल का आरम्भिक मार्गदर्शन महत्वपूर्ण रहा है। इसीलिए अमृता शेरगिल को भारतीय आधुनिक कला के प्रणेताओं में स्थान दिया जाता है। इनकी कला में भारतीय जन–जीवन व दर्शन का मार्ग समर्पित है।

अमृता शेरगिल का जन्म सन् 1913 हंगरी की राजधानी बुडापेस्ट में हुआ। उनके पिता सिक्ख थे व उनकी माता हंगेरियन महिला थीं। बाल्यावस्था के प्रथम आठ वर्ष उन्होंने योरोप में बिताए और 1921 में ही उन्होंने पहली बार भारत का दर्शन किया।[1] उनकी माता ने उन्हें यूरोपीय संस्कृति व कला के बारे में बताया, जिससे उनके मन में एक लगाव रहा तथा आधुनिक कला को आगे बढ़ाने में भी अग्रसर रही। सन् 1932 में उनके चित्र ग्रांद सलो में प्रदर्शित हुए तथा एक वर्ष पश्चात वे इसकी सदस्या चुनी गयीं। सन् 1933 व 1934 में उन्होंने पेरिस के संग्राहलयों, कला वीथिकाओं व प्रदर्शनियों में प्रसिद्ध कलाकृतियों का परिशीलन किया। अमृता ने अपनी कृतियों में भारतीयता को एक भिन्न दृष्टिकोण से देखने का प्रयास किया । बाजार जाते हुए ग्रामीण पहाड़ी पुरुष, पहाड़ी स्त्रियाँ, फलवाली, पहाड़ी दृश्य, वधू का श्रृंगार, विश्राम, झूला, आराम करती स्त्री, कथा गायक, पक्षियों आदि विषयों को उन्होंने चित्रित किया। उन्होंने भारत के अतिरिक्त हंगरी के ग्रामीण बाजार, किसान और गरीबों आदि का भी चित्रण किया। दूसरी ओर पेरिस में इसके विपरीत चित्र बनाये। अन्य चित्रों में नींबू लिये बालक, नग्न कन्या, स्नानमग्न हस्ति, लाल हस्ति, पहाड़ी दृश्य, ऊँट और एक अपूर्ण अन्तिम चित्र में ग्रामीण परिवेश में भैंसों आदि का अंकन किया है। उनके 'ब्रह्मचारी' चित्र को सभी ने उत्कृष्ट कोटि का माना है।[2] कला सम्बन्धी विचारों को

1–साखलकर, र0वि0 : आधुनिक चित्रकला का इतिहास पृ0 318
राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी
प्लाट नं0 1, झालाना सांस्थानिक क्षेत्र
जयपुर–302004 (2004)

2–पाण्डेय, सन्ध्या एवं पाण्डेय, आर0पी0 : भारतीय कला पुनर्जागरण एवं चित्रकार
पृ0 39–40
मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी
रवीन्द्रनाथ ठाकुर मार्ग, बाणगंगा भोपाल (1997)

अमृता ने चित्रों के रचनात्मक सौन्दर्य पर बल दिया तथा उनमें विषय के आकर्षण का प्रभाववादी आत्मीयकरण को बहुत अधिक पसन्द किया। रवीन्द्रनाथ टैगोर की काव्य व चित्रकला से अमृता को काफी प्रोत्साहन प्राप्त हुआ। उनके मन में विचारों की शृंखला एवं विचारों का मन्थन उनकी कृतियों में देखने को मिलता है। उनके द्वारा चित्रित तीन महिलाओं का चित्र प्रमुख है। चित्र संख्या : 6
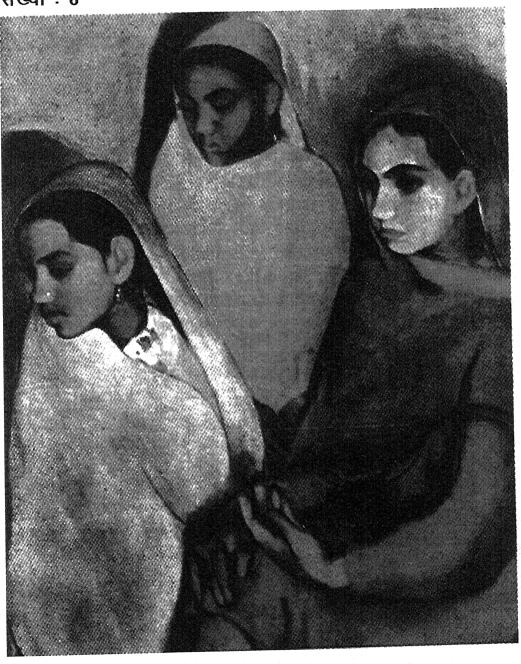
चित्र संख्या : 6
तीन महिलाएँ

सन् 1934 में यह फिर भारत आयीं और उस समय वह विशुद्ध रूप से कल्पना के सहारे कार्य कर रही थीं।[1] इन्होंने योरोप के विभिन्न कला संग्रह देखे तथा वहाँ की नवीनतम कला से प्रभावित होकर अपनी शैली को जन्म दिया।[2] यद्यपि उसकी समस्त शिक्षा–दीक्षा विदेशी ढंग पर सम्पन्न हुई थी; फिर भी वह भारतीय संस्कृति में इतनी घुल–मिल गयी थीं कि उसको विदेशी कहना ही कठिन था। उसका कारण यह था कि भारत के प्रति उसके मन में स्वाभाविक प्रेम था। भारत के प्रति उसने जो भाव प्रकट किये हैं वे इसके प्रमाण हैं।[3]

1936 के दिसम्बर माह की अजन्ता व ऐलोरा की यात्रा के बाद बनाये गये उनके चित्रों में बहुत परिवर्तन मिलता है। भावपूर्ण चेहरों में बोलती आँखें, हाथ व पैरों की मुद्रा में एक नया आकर्षण तथा मानवाकृतियों के समूह संयोजन में अजन्ता का प्रभाव स्पष्ट है।[4] अमृता की कला में पूर्व और पश्चिम की शैलियों का बड़ा सुन्दर समन्वय हुआ है, जिसका अन्तर्राष्ट्रीय महत्व है। उन्होंने पुनरुत्थान के पश्चात की यूरोपीय कला तथा अजन्तोत्तर भारतीय कला शैलियों एवं तकनीकों को समन्वित किया है।[5] अमृता के चित्रों में इधर–उधर दिशाओं में देखते हुए गमगीन चेहरे, उनकी शोक–सन्तप्त भाव–भंगिमायें दर्शक के हृदय को सहज ही स्पर्श कर लेती है। उनके अपेक्षाकृत बड़े आकार के पैर, उठी हुई भौहें,

---

1–कादरी, एस0एम0 असगर अली : भारतीय चित्रकला का इतिहास पृ0 272
स्टूडेन्ट स्टोर 35–ए–9, रामपुर बाग
बरेली–243001 (2002)

2–शर्मा, लोकेश चन्द्र : भारत की चित्रकला का संक्षिप्त इतिहास
पृ0 172
कृष्णा प्रकाशन मीडिया (प्रा0) लि0
11, शिवाजी रोड, मेरठ (2005)

3–गैरोला, वाचस्पति : भारतीय चित्रकला पृ0 261
चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान
38, यू0ए0, जवाहरनगर बंगलो रोड
पो0ब0 नं0 2113 दिल्ली–110007 (1990)

4–अग्रवाल, आर0ए0 : कला विलास पृ0 203–204
इण्टरनेशल पब्लिशिंग हाऊस
मेरठ–250001 (2003)

5–अग्रवाल, गिर्राज किशोर : कला और कलम पृ0 253
अशोक प्रकाशन मन्दिर कालोनी अलीगढ़ (1999)

बालों को चित्रित करने का तरीका, आकृतियों का गठन, गोगाँ की शैली के प्रभाव को साफ–साफ इंगित करता है। इन सबके बावजूद भी शेरगिल के चित्रों की आत्मा भारतीय है और यही उसकी सम्भवतः सबसे बड़ी उपलब्धि भी।[1]अमृता की कला पर दृष्टिपात करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि उनके चित्रों में भारतीय विषयों की नवीनता, तकनीकी नवलता, रेखा की लय, छन्द और रंगों की सबल दार्ष्टिक चेतना है। सतत् प्रयोगों और चिन्तन के पश्चात् अमृता ने अपनी प्रतिभापूर्ण कला में मार्ग प्रशस्त किया। उनके चित्रों में 'वधू का श्रृंगार', 'गणेश पूजा', 'त्रावणकोर के बालक' और 'स्त्रियाँ' तथा 'नील–वसना' उनकी विलक्षण प्रतिभा के ज्वलन्त प्रमाण हैं। उनके अनेक चित्रों का संग्रह राष्ट्रीय नूतन कला दीर्घा (गैलरी) नई दिल्ली में सुरक्षित है।[2]

अमृता की कला में पूर्व और पश्चिम की शैलियों का समन्वय हुआ है। उन्होंने यूरोप की आधुनिक आकृति–मूलक शैलियों के साथ भारतीय लघु–चित्र शैलियों का समन्वय किया है। उनकी आकृतियों में गॉगिन के समान आदिम सरलता, सेजान के समान गढ़न का प्रभाव, भारतीय लघु–चित्रों के समान वर्ण–सौन्दर्य, ब्रूगेल द एल्डर के समान सपाट छाया वाले स्थानों का चित्रण तथा अभिव्यंजनावादियों के समान रूपों और रंगों की अनुभूति है। उन्होंने आकृतियों को सरल बनाया और उन्हें गहरी बूझी रेखाओं से घेरा। यद्यपि उन्होंने कुछ प्राकृतिक दृश्यों, हाट तथा व्यक्ति–चित्रों का भी अंकन किया है पर उनकी कला में भारतीय जन–जीवन के सामाजिक पक्षों, विशेष रूप से नारी के जीवन का भी पर्याप्त चित्रण है। लाल रंग उनका प्रिय रंग है जिसके अनेक बलों का उन्होंने प्रयोग किया है। यह हंगरी के लोक जीवन में तो व्याप्त है ही, अमृता के भोग–विलासपूर्ण जीवन का भी द्योतक है।[3]

1–बाजपेयी, राजेन्द्र : मॉडर्न आर्ट और भारतीय चित्रकार पृ0 61 साहित्य निकेतन, गिलिस बाजार कानपुर–208001 (1981)

2–वर्मा, अविनाश बहादुर : भारतीय चित्रकला का इतिहास पृ0 295 प्रकाश बुक डिपो, बाजार, बरेली (1997)

3–अग्रवाल गिर्राज किशोर : आधुनिक भारतीय चित्रकला पृ0 90–91 संजय पब्लिकेशन्स, शैक्षिक पुस्तक प्रकाशक स्पताल मार्ग, आगरा–3 (1999)

अमृता शेरगिल ने सन् 1936 में दक्षिण भारत के भ्रमण के उपरान्त चित्रों का संग्रह 'फ्रूट वेन्डर्स' (फलवाले), 'ब्राइड्स टॉयलेट' (दुल्हन का श्रृंगार), 'ब्रह्मचारी', 'बाजार जाते हुए दक्षिण भारतीय ग्रामीण' इत्यादि हैं। इन्होंने गरीबी जन–जीवन व उससे जुड़े कई पहलुओं पर चित्रों का संग्रह तैयार किया। इनके चित्रों को देखकर फ्रांसीसी यथार्थवादी चित्रकार 'मिले', 'कोर्वो', 'डाम्याँ' आदि ने इनकी प्रशंसा की। इनके द्वारा बनाये गये दीन–दु:खियों को अपनी भावनात्मक अभिव्यक्ति से व्यक्त किया। अमृता शेरगिल ने अपने चित्रों के माध्यम से समानता की भावना का संचार किया। उनके चित्रों के विषय में आधुनिकता की नई झलक दिखाई देती है। चित्रों में आत्मीयता का भाव तथा सदैव विभिन्न दिशाओं से उनकी शैली में प्रभाव की झलक मिलती है।

7–क्षितीन्द्रनाथ मजूमदार

क्षितीन्द्रनाथ मजूमदार का जन्म सन् 1891 में पश्चिम बंगाल में हुआ। इनका नाम पुरानी पीढ़ी के आधुनिक कलाकारों में लिया जाता है। उनकी कला धर्म के प्रति एवं विचारों की प्रमुखता का भाव लिये हुए है। उन्होंने अपने चित्रों में बंगाल के सन्त चैतन्य महाप्रभु की विभिन्न मुद्राओं को चित्रित किया तथा चित्रों में नवीनता के भावों को व्यक्त किया है। उनके चित्रों में रंगों की सूक्ष्मता एवं लयात्मकता के अंश समाहित हैं। उन्होंने विभिन्न परम्पराओं में भारतीय बंगाल परम्परा का प्रचलन व प्रसार श्रेष्ठ चित्रों से किया। उनकी रंग योजना में मुख मुद्रा उदासमान मन को भाने वाली गम्भीर वातावरण को समुचित भाव के द्वारा दर्शाया है। मजूमदार ने अपने शुद्ध विचारों से कला की हमेशा पूजा की है तथा वे सन्तों के मध्य में कला को रेखाचित्रों के माध्यम से अपनाते आये हैं। उनके स्वभाव में मधुरता व भोलापन है, जो उनके चित्रों के संग्रह से प्रदर्शित होता है। उनके धार्मिक विचार तथा कला के प्रति उनका भाव आधुनिकता का समन्वय दर्शाता है। अलंकारिक चित्रों में भी उन्होंने अपने प्रशंसकों को सरसता का रूझान दिया है। उनके द्वारा बनाया गया चित्र फूल तोड़ती

महिला है। चित्र संख्या : 7
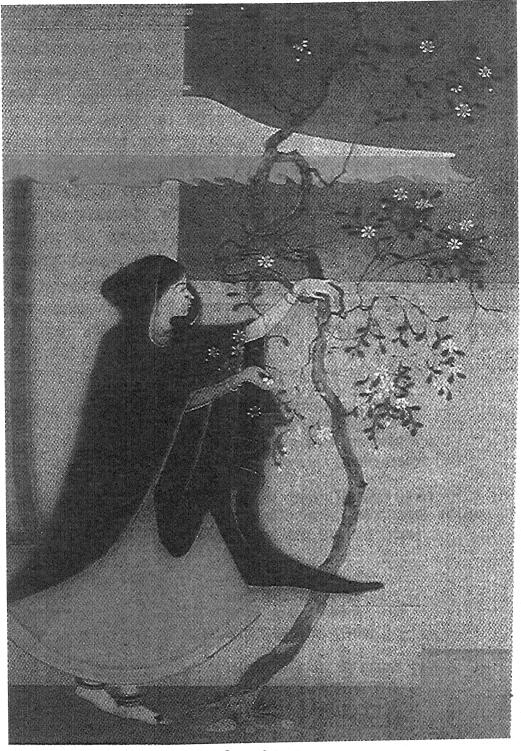
चित्र संख्या : 7
फूल तोड़ती महिला

उन्होंने कुछ आलंकारिक ढंग के चित्र भी बनाये हैं। यमुना और शकुन्तला शीर्षक चित्र इसी कोटि के हैं। इस प्रकार के चित्रों में आलंकारिक सरसता के साथ–साथ गीतात्मक रूझान भी है। पौराणिक प्रतिमानों को लेकर बनाये गये श्री मजूमदार के चित्रों में भावोत्पन्नता और मर्यादा का समन्वय दर्शनीय होता है।[1] उनके चित्रों में वृक्षों तथा लताओं की शाखाओं के घुमाव संयोजनों को एक विशेष प्रकार का सौन्दर्य प्रदान करते हैं। वृक्ष–लताओं के अत्यन्त टेढ़े–मेड़े रूपों से उनके मन की आकुलता सजीव हो गयी है। यमुना, अभिसारिका, गीतगोविन्द, चैतन्य, लक्ष्मी तथा पुष्प–प्रचायिका आदि उनकी प्रसिद्ध कृतियाँ हैं।[2] लयात्मक संयोजन प्रवाहपूर्ण रेखा और भक्ति विषयक रचनायें आपकी कला की प्रमुख विशेषता है। आपकी रंग योजना कोमल है।[3] परम्परागत विधि से भारतीय विषयों को लेकर आपकी भारतीय शैली में चित्र रचना है।[4] महाभारत के भी चित्र इन्होंने बनाये। चित्रों में भाव प्रदर्शन बहुत अच्छा हुआ है।[5] भावपूर्ण मुख मुद्रा क्षितीन्द्रनाथ कृत आकृतियों की एक अत्यधिक महत्वपूर्ण विशेषता मानी जा सकती

1–गैरोला, वाचस्पति : भारतीय चित्रकला पृ0 263
चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान,
38, यू0ए0 जवाहरनगर, बंगलो रोड
पो0बा0 नं0 2113 दिल्ली–110007 (1990)

2–अग्रवाल, गिर्राज किशोर : आधुनिक भारतीय चित्रकला पृ0 44
संजय पब्लिकेशन्स, शैक्षिक पुस्तक प्रकाशक
अस्पताल मार्ग, आगरा–3 (1999)

3–अग्रवाल, गिर्राज किशोर : कला और कलम पृ0 250
अशोक प्रकाशन मन्दिर
27–ए, साकेत कालोनी
अलीगढ़–202001 (1999)

4–झा, चिरंजी लाल : भारतीय चित्रकला का विकास पृ0 134
लक्ष्मी कला कुटीर, नया गंज
गाजियाबाद (1969)

5–शर्मा, लोकेश चन्द्र : भारत की चित्रकला का संक्षिप्त इतिहास पृ0 167
कृष्णा प्रकाशन मीडिया (प्रा0) लि0
11, शिवाजी रोड, मेरठ (2005)

है। लम्बी कोमल अंगुलियों युक्त हस्तपुष्प की भाँति प्रतीत होते हैं।[1]

बंगाल शैली में पुनर्जागरण काल में कलाचार्यों का विशिष्ट योगदान रहा है, जिनमें मजूमदार का नाम प्रमुख है। इनके चित्रों की मुख्य विशेषता धर्म पर आधारित थी। महाभारत के चित्र इनके द्वारा बनाये गये जिन्हें देखकर भाव का प्रदर्शन मिलता है। धार्मिक कथा–वस्तु को लेकर नृत्य चित्रण इनकी विशेष कार्य शैली रही है। मजूमदार को बचपन से ही चित्रकला करने का बहुत शौक था तथा इन्होंने चित्रकला की साधना की। जिससे ये एक आधुनिक भारतीय कलाकार के रूप में उभरे। अपना अध्ययन छोड़कर इन्होंने कोलकाता आर्ट स्कूल में प्रवेश लिया तथा इन्हें कला की प्रेरणा वैष्णव आख्यानों एवं प्रवचनों से मिली। रंगों का सुन्दर संयोजन एवं रागात्मकता इनके चित्रों की प्रमुख विशेषता है। 'वॉश' तकनीक में भी मजूदार एक अच्छे कलाकार के रूप में जाने जाते हैं। इनके बनाये चित्रों का संग्रह भक्ति का एक अंग, ध्यान माना है जिसमें ईश्वर का अंश व्याप्त है। उनकी कृतियाँ प्रायः संग्रहालयों में देखने को मिलती हैं।

8–असित कुमार हल्दार

असित कुमार हल्दार का जन्म 10 सितम्बर, 1890 को बंगाल में हुआ था। 16 वर्ष की आयु से ही हल्दार ने अपने कला गुरू अवनीन्द्रनाथ टैगोर से कला की शिक्षा–दीक्षा ग्रहण की। भारत के विभिन्न कला तीर्थ व केन्द्रों का इन्होंने भ्रमण किया। सन् 1910 एवं 11 के मध्य इन्होंने अजन्ता के चित्रों का अध्ययन किया तथा लेडी हेरिंघम के पर्यवेक्षण में चित्रों की प्रतिलिपियाँ भी तैयार की थी। नन्दलाल बोस ने इन्हें कला के क्षेत्र में प्रोत्साहन दिया। सन् 1914 एवं सन् 1921 में बाघ के चित्रों की प्रतिलिपियाँ तैयार कर भारतीय चित्र परम्परा से हल्दार पूर्णरूप से अवगत एवं परिपक्व हो गये थे। वे भावुक हृदय वाले चित्रकार थे। भारतीय कला में

1–पाण्डेय, सन्ध्या एवं पाण्डेय, आर0पी0 : भारतीय कला पुनर्जागरण एवं चित्रकार
पृ0 67–68
मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी
रवीन्द्रनाथ ठाकुर मार्ग, बाणगंगा
भोपाल–462003 (1997)

दर्शन एवं इतिहास का भी इन्होंने विशेष रूप से अध्ययन किया था। इसलिए इन्होंने कला पर कई लेख व पुस्तकों की रचनाएँ की। अवर हैरिटेज इन आर्ट, आर्ट एण्ड ट्रेडिशन इनके द्वारा लिखी गयी हैं।

उनके चित्रों का विषय प्रायः पौराणिक हुआ करता है, किन्तु 'लोहे का व्यापारी' जैसे चित्रों का निर्माण कर इन्होंने पौराणिक परिवेश में आधुनिक जीवन की यथार्थता को भी उतने ही कौशल से व्यक्त किया है। ग्रामीण वातावरण, प्रकृति और प्रणय आदि विषयों के चित्रण में भी उनकी समान रुचि रही है।[1] उन्होंने विविध विषयों के अनेक चित्र ग्रन्थों की रचना की है। जिसमें 'मेघदूत', 'ऋतु–संहार', 'उमर खय्याम' तथा 'रामायण' आदि प्रमुख हैं।[2] उनके द्वारा चित्रित वीणा वादिनी प्रमुख है। चित्र संख्या : 8

चित्र संख्या : 8
वीणा वादिनी

1–गैरोला, वाचस्पति : भारतीय चित्रकला पृ0 263
चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान
38, यू0ए0 जवाहरनगर बंगलो रोड
पो0बा0 नं0 2113, दिल्ली–110007 (1990)

2–अग्रवाल, गिर्राज किशोर : कला और कलम पृ0 247
अशोक प्रकाशन मन्दिर
27–ए, साकेत कालोनी, अलीगढ़–20001 (1999)

हलदार ने लकड़ी, रेशम, भित्ति, कागज, कैनवास आदि विभिन्न धरातलों पर चित्रण कार्य किया। इन्होंने अपने संयोजनों में सदैव सरलता का ध्यान रखा है। इनकी रेखाएँ मृदु, वर्ण–विधान, सुरुचिपूर्ण व सुकोमल व रूप सृजन मौलिक बना है।[1] आपके चित्र संथाल लोगों के जीवन, उनके नृत्य श्री कृष्ण और रामलीला ने अधिक स्थान प्राप्त किया है। रागध्वनि की स्पष्टता आपके चित्रों में पाई जाती है।[2]इनके चित्र 'रेखा तथा रंगों' में अनुरागपूर्ण गीत लगते हैं।[3] हल्दार के चित्रों में आकर्षक सजीले रंगों का समायोजन एवं सुन्दर रेखांकन दिखाई देता है। उनकी लयात्मक प्रवाहपूर्ण ओजस्वी रेखायें उनके स्वभाव का प्रदर्शन करती हैं। प्रकृति दर्शन उनके चित्रों का एक अंग रहा है।[4] कला के संसार में आपने हृदय की गहराईयों और कल्पनाओं को रंग तथा रेखाओं के सहारे कागज पर उतारा और तूलिका की एक नवीन भाषा को जन्म दिया।[5] उनके चित्रों में आकृति की सरलता तथा रेखा का प्रवाह दर्शनीय है। उनके चित्रों में 'कुणाल', 'अकबर एक महान निर्माता' तथा 'रहस्य' आदि उल्लेखनीय हैं।[6]

1–अग्रवाल, आर0ए0 : कला विलास पृ0 199
इण्टरनेशनल पब्लिशिंग हाऊस
मेरठ–250001 (2003)

2–झा, चिरंजी लाल : भारतीय चित्रकला का विकास पृ0 112
लक्ष्मी कला कुटीर नया गंज
गाजियाबाद (1969)

3–शर्मा, लोकेश चन्द्र : भारत की चित्रकला का संक्षिप्त इतिहास
पृ0 167
कृष्णा प्रकाशन मीडिया (प्रा0) लि0)
11, शिवाजी रोड, मेरठ (2005)

4–पाण्डेय, सन्ध्या एवं पाण्डेय, आर0पी0 : भारतीय कला पुनर्जाकरण एवं चित्रकार
पृ0 56–57
मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी
रवीन्द्रनाथ ठाकुर मार्ग, बाणगंगा
भोपाल–462003 (1997)

5–कादरी, एस0एम0 असगर अली : भारतीय चित्रकला का इतिहास पृ0 217
स्टूडेन्ट स्टोर, 35– ए–1 रामपुर बाग,
बरेली–243001 (2002)

6–वर्मा, अविनाश बहादुर : भारतीय चित्रकला का इतिहास पृ0 297
प्रकाश बुक डिपो, बड़ा बाजार, बरेली (1997)

सन् 1911 ई0 में विश्व भारती के संचालकों ने कला भवन की स्थापना करके हल्दार को इस संस्था का अध्यक्ष बनाया। उक्त पद पर वे 12 वर्ष तक रहे तथा सन् 1924 ई0 जयपुर के महाराजा स्कूल ऑफ आर्ट्स के प्रधानाचार्य के पद पर आसीन हो गये। कुछ समय पश्चात उन्हें लखनऊ के कला एवं हस्त–शिल्प महाविद्यालय में आचार्य पद पर नियुक्त किया गया। इनके चित्रण कार्य करने के विभिन्न ढंग लकड़ी, रेशम, भित्ति, कागज, कैनवास इत्यादि रहे। ये कवि कलाकार के नाम से भी जाने जाते थे। ये एक चित्रकार के साथ उच्चकोटि के कला आलोचक भी थे। इनकी कृतियों में रेखाएँ व रंगों का अनुरागपूर्ण गीतों से भरा हुआ था। ये मूर्ति शिल्प एवं शिल्प–कला में भी निपुर्ण थे। राजपूत और मुगल शैली का समन्वय इन्होंने अपने चित्रों में किया है। पौराणिक विषय चित्रण के साथ इन्होंने जन सामान्य पर भी सुन्दरतम कार्य किया है। हल्दार अच्छे चित्रकार होने के साथ–साथ एक अच्छे लेखक भी थे। उन्होंने मेघदूत का सुन्दर अनुवाद बंगला भाषा में किया था, जो आज भी कई पुस्तकालयों में देखने को मिलता है।

9– देवी प्रसाद राय चौधरी

देवी प्रसाद राय चौधरी चित्रकला एवं मूर्तिकला दोनों विषय के योग्य कलाकार के रूप में जाने जाते हैं। ये अवनीन्द्रनाथ टैगोर के प्रमुख शिष्यों में हैं। ये भारतीय आधुनिक कलाकार होने के साथ मद्रास शैली के कलाकार हैं। इनके चित्रों में पाश्चात्य एवं भारतीय कला के अनुकूल प्रभाव देखने को मिलते हैं। इनके चित्रों में रंग योजना पाश्चात्य पद्धति की है तो इनके विषय भारतीय होते हैं। इन्होंने दृश्य चित्र (Land Scape) बनाने में दक्षता हासिल की है तथा जन सामान्य से सम्बन्धित चित्रों का संग्रह भी किया है। इनकी कृतियाँ राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली में देखने को मिलती हैं। इनके कार्य शैली से मुम्बई स्कूल के चित्रकारों पर मिश्रित शैली का विशेष प्रभाव है। कमल, तालाब शीर्षक इनके प्रसिद्ध चित्रों में से हैं। जल रंगों के साथ–साथ ये तैल रंगों को भी प्रयोग में लाते रहे हैं। कला जगत में इनके अपूर्व योगदान के लिए भारत सरकार ने इन्हें सन् 1958 ई0 में पद्मभूषण की उपाधि से अलंकृत किया।

अनेक सुन्दर प्रकृति चित्रों के अतिरिक्त उन्होंने बनजारों, मछुआरों तथा पहाड़ी जीवन से सम्बद्ध बड़े ही हृदयग्राही चित्र बनाये हैं।[1] एक यथार्थवादी कलाकार होने के कारण आपको वर्तमान की वस्तुएँ अधिक प्रेरणा दे सकी हैं। सुन्दरता के सच्चे पुजारी ने सौन्दर्य की सृष्टि अपनी तूलिका और छैनी द्वारा समान रूप से की है।[2] सामयिक विषयों का अंकन ही आप अपनी कला का लक्ष्य मानते हैं।[3] आपकी आकृतियाँ वास्तविक शारीरिक अनुपातों आदि को ध्यान में रखकर बनायी गई हैं न कि काल्पनिक अथवा काव्यात्मक आदर्श के आधार पर। आकृतियों में गढ़नशीलता के लिए छाया–प्रकाश की पश्चिमी पद्धति का भी सहारा लिया गया है, किन्तु पाश्चात्य पद्धति से अंकित होने पर भी आपके चित्रों में भावों की सफल व्यंजना रहती है।[4] श्री राय चौधरी दृश्य चित्र बनाने में बड़े दक्ष हैं, परन्तु जन–सामान्य के चित्रण में भी वे पीछे नहीं हैं।[5] आपके चित्रों की रेखायें सजीव हैं तथा उनमें नवीनता की छाया है। आपके चित्रों की टैकनीक भारतीय है जो भारतीय भावनाओं से पूर्ण है।[6] उन्होंने पाश्चात्य कला के सम्मिश्रण से अपनी शैली को प्रशस्त किया।[7]

1–गैरोला, वाचस्पति : भारतीय चित्रकला पृ0 262
चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान 38, यू0ए0
जवाहरनगर बंगलो रोड दिल्ली–110007 (1990)

2–झा, चिरंजी लाल : भारतीय चित्रकला का विकास पृ0 114
लक्ष्मी कला कुटीर, नया गंज गाजियावाद (1969)

3–अग्रवाल, गिर्राज किशोर : कला और कलम पृ0 248
अशोक प्रकाशन मन्दिर 27–ए, साकेत कालोनी
अलीगढ़–202001 (1999)

4–अग्रवाल, गिर्राज किशोर : आधुनिक भारतीय चित्रकला पृ0 46
संजय पब्लिकेशन्स शैक्षिक पुस्तक प्रकाशक
अस्पताल मार्ग, आगरा–3 (1999)

5–शर्मा, लोकेश चन्द्र : भारत की चित्रकला का सक्षिप्त इतिहास पृ0 175
कृष्णा प्रकाशन मीडिया (प्रा0) लि0
11, शिवाजी रोड, मेरठ (2005)

6–कादरी, एस0एम0
एस0एम0 असगर अली : भारतीय चित्रकला का इतिहास पृ0 271
स्टूटेन्ट स्टोर, 23–ए–1 रामपुर बाग बरेली 2002

7–वर्मा, अविनाश बहादुर : भारतीय चित्रकला का इतिहास पृ0 297
प्रकाश बुक डिपो, बड़ा बाजार, बरेली (1997)

ये उन कलाकारों में से माने जाते हैं जिन्होंने भारतीय शैली के महत्व के साथ–साथ एक नवीन शैली के माध्यम से कला के दर्शन को अपने विचारों से प्रस्तुत किया है। उनकी मूर्ति कला में 'छन्द' शीर्षक देखने योग्य है। एक अच्छे चित्रकार के मन में जो भावनाएँ जागृत होती हैं, उन्हें मूर्ति कला के माध्यम से भी स्पष्ट किया है। उनके भाव बड़े सरल व लयात्मकता वाले हैं; क्योंकि चित्रों में एक रेखीय रंग–योजना का सकारात्मक रूप से प्रयोग हुआ है।उनके द्वारा बनाया गया पैदल पथिक का उल्लेखनीय है। चित्र संख्या : 9
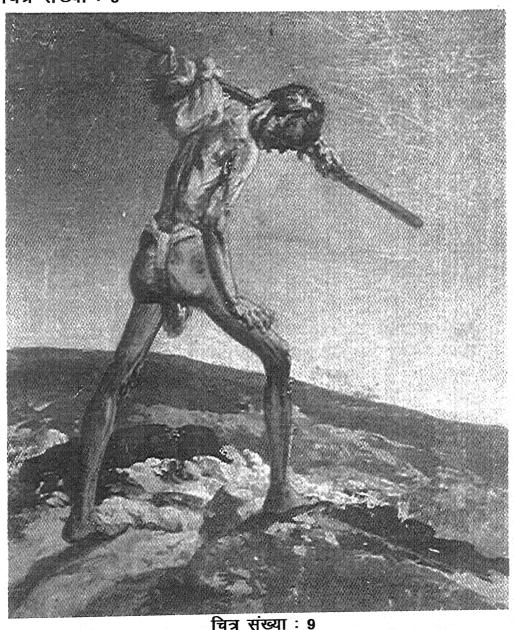
चित्र संख्या : 9
पैदल पथिक

मद्रास राजकीय कला स्कूल के प्रधानाचार्य के रूप में उन्होंनें कला की सेवा की। चौधरी 'ऑल इण्डिया फाइन आर्ट एण्ड क्राफ्ट सोसाइटी' तथा 'ललित कला अकादमी' के भी अध्यक्ष पद पर रहे। भारतीय शरीर शास्त्र के साथ–साथ इन्होंने पाश्चात्य शरीर शास्त्र का अध्ययन भी किया है, जो इनके चित्रों में व्यक्त होता है। आपके मुख्य चित्र 'क्यूरोसिटी', 'क्षत्राणी', 'प्रतीक्षमान', 'इतन', और 'अभिसारिका' है जो एक नवयुवक कलाकार को प्रोत्साहन देते हैं। व्यक्ति चित्रण (**Life study**) करने में तथा उसके व्यक्तित्व को उभारने का प्रयास इनके चित्रों में दिखाई देता है। 'एप्रोच ऑफ मिस्ट' में अन्धकार का आगमन प्रत्यक्ष रूप से देखने को मिलता है। 'मुसाफिर' नामक चित्र में मुसलमान यात्री का चित्र है, जो धर्म में श्रद्धा का जीवन दिखलाता है, उसे स्पष्ट किया गया है। चौधरी इस कला रूपी संसार में एक अलौकिक प्रतिभा के कलाकार रहे हैं तथा उनके मन में विचारों का संग्रह उनके कुशल व्यक्तित्व का परिचायक है।

(ब) समकालीन भारतीय चित्रकला का प्रासंगिक स्वरूप–एक रूपरेखा :

समकालीन शब्द का प्रासंगिक शब्द प्रायः किसी विशिष्ट घटना, विचारधारा या किसी कलाकार के व्यक्तित्व के परिप्रेक्ष्य में होता है। किसी भी पुस्तक एवं कला संग्रहों का किसी कलाकार के नाम से समकालीन होता है तो वहाँ पर मुख्य रूप से कला के स्वरूप एवं प्रवृत्तियों के बारे में उनके भाव व विचार व्यक्त किये जाते हैं। समकालीन कला का अर्थ स्वतन्त्रता के पश्चात् लगभग 40 वर्ष के बाद माना गया है। स्वतन्त्र भारत की कला पूरे विश्व में एक नई पहचान बनाने में सफल रही है। इस समकालीन कला में राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक पहलू भी उजागर हुए हैं। समकालीन कलाकारों के विचार तथा व्यक्तित्व महत्वपूर्ण आयामों के रूप में प्रदर्शित हुए। समकालीन होने के साथ–साथ सबसे अधिक महत्वपूर्ण तात्पर्य उसकी समय सीमा पर निर्भर रहा है। उस समय की प्रमुख प्रवृत्तियों के अनुरूप समसामयिक विषयों पर कलात्मक सृजन हुआ। कला विकास की प्रबल धारा ने अपनी सार्थकता को अपूर्व घटना के माध्यम से व्यक्त किया। समकालीनता की पहचान विभिन्न पहलूओं को नवीनता के आधार पर उजागर करना कलाकार का मुख्य उद्देश्य रहा है।

भारतीय चित्रकला के आधुनिक युग का सूत्रपात लगभग वर्तमान शताब्दी के आरम्भ के साथ हुआ। इतने कम समय में उसने जो प्रगति की है उसका श्रेय वर्तमान पीढ़ी के उन सभी कलाकारों को प्राप्त है, जिन्होंने परिस्थितियों की चिन्ता किये बिना अपनी साधना को अविरल रूप में बनाये रखा। ये कलाकार, जैसा कि उनकी विधाओं से स्पष्ट है, विभिन्न वर्गों से सम्बन्धित हैं। यद्यपि आधुनिक चित्रकला के तीन प्रमुख स्कूल माने जाते हैं : कलकता, बम्बई और दिल्ली; किन्तु उनके आधार पर चित्रकारों का वर्ग–विभाजन करना समुचित नहीं जान पड़ता।[1]

1–गैरोला, वाचस्पति : भारतीय चित्रकला पृ0 253
चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान
38, यू0ए0 जवाहरनगर बंगलो रोड
पो0बा0 नं0 2113, दिल्ली–110007 (1990)

आज के युग की कला व्यक्तिपरक तथा प्रयोगवादी है। यह प्रयोग शब्द ही वैज्ञानिक है और वैज्ञानिक प्रगति के साथ ही साथ इस शब्द में कला तथा साहित्य में पदापर्ण किया है। परन्तु प्रयोग केवल किसी निष्कर्ष पर पहुँचने के लिये ही किया जाता है। तो आज के कलाकार को पहले एक लक्ष्य बनाना होगा उ़स तक पहुँचने के लिये ही प्रयोग करने होंगे। आज जो कलाकार की दशा है उससे ज्ञात होता है कि लक्ष्य किसी को नहीं दिखाई दे रहा है। भावाभिव्यंजना की स्वतन्त्रता ही आज के कलाकार का नारा है। इसी से अभिव्यंजनावाद प्रारम्भ हो गया है।[1] कला सदैव अपने समकालीन प्राकृतिक परिस्थितियों तथा सामाजिक विकास की अभिव्यक्ति करती है। प्रत्येक चित्रकार की भावना में प्रादेशिक लोक पक्ष, धार्मिक पक्ष एवं सांस्कृतिक पक्ष, दर्शन एवं मनोविज्ञान पक्ष का पूर्णरूपेण स्वरूप प्रस्तुत हुआ है।[2]

समकालीनता को व्यापक धारणा द्वारा नवीनता के रूप में भविष्य की आवश्यकताओं को कला के लक्ष्य तक पहुँचाना है। इससे विभिन्न जन समुदाय, राष्ट्र एवं मानव जाति का अत्यधिक विकास होता है। कला का अनुसंधान मानव के लिये अत्यधिक महत्वपूर्ण होता है; क्योंकि समकालीन कला का प्रासंगिक स्वरूप अनेक दौरों से गुजरता है। समकालीन भारतीय चित्रकला की सम्भावना मानव के चरम मूल्यों की वास्तविकता से ज्ञात होती है। एक कलाकार की चेतना दार्शनिक, वैज्ञानिक तकनीकी एवं राजनैतिक दृष्टि से अधिक विकसित हो। इस प्रकार आधुनिकता से देशकाल, वातावरण एवं उसके समकक्ष समकालीन कलाकारों को पूर्णरूप से प्रोत्साहन देना ही कला की उच्चाशयता को प्राप्त कराना है।

1—शर्मा, लोकेश चन्द्र : भारतीय चित्रकला का संक्षिप्त इतिहास
पृ0 182—183
कृष्णा प्रकाशन मीडिया (प्रा0) लि0
11, शिवाजी रोड, मेरठ (2005)

2—नागिया, ऊषा किरण : रूप शिल्प पृ0 124
(सिक्ख चित्र शैली)
सम्पादक—श्याम बिहारी अग्रवाल
129, कामता प्रसाद कक्कड़ मार्ग
इलाहाबाद (1986)

आधुनिक कला आधुनिक मानव की कला है जो आधुनिक समय और आधुनिक परिवेश में हुए परिवर्तनों से उपजी है। आधुनिक कला के मूल में औद्योगिक क्रान्ति और संचार के विकसित साधनों को कारण माना जा सकता है। सम्पूर्ण विश्व पर इस क्रान्ति का इतना प्रभाव पड़ा कि वहाँ का सम्पूर्ण जन–जीवन, साहित्य, संस्कृति व कला के विभिन्न क्षेत्रों में आमूल परिवर्तन हुए। आधुनिक कला में जो परिवर्तन हुए उनका प्रादुर्भाव यूरोप में ही हुआ और वहीं से वह सम्पूर्ण विश्व में फैली।[1] समाज के आधुनिकीकरण के साथ कला के रूप में तद्नुकूल परिवर्तन होना अपरिहार्य है। आधुनिक गतिशील कार्य व्यस्त व फैले हुए मानव जीवन में दृश्य कलाओं को प्रभावी बनाने के लिए सरलीकृत बड़े आकारों, स्पष्ट रेखाओं व चमकीले रंगों का प्रयोग आवश्यक है एवं मानव के विचारों व कार्य क्षेत्र के विश्वव्यापी रूप को देखते हुए सृजन के मूल तत्वों पर आधारित सर्वगामी कला निर्मित के प्रयत्न स्वाभाविक हैं।[2]

कला इतिहास के पुस्तकों में आधुनिकता को इस तरह प्रस्तुत किया गया है जिसमें व्याख्या विशद् ढंग से वर्णित है। इसका मुख्य आधार कला शैली, तकनीक एवं विषय–वस्तु में अत्यधिक परिवर्तन दिखायी देता है। समकालीन कला की वर्तमान स्थिति में इतनी चर्चा, विचार–विमर्श, समीक्षा एवं समस्त विषयों पर जिज्ञासाएँ प्रेरणाप्रद रही हैं। आधुनिक कला में समकालीन कला का आभास हम भाव, हर्ष, पीड़ा, करुणा एवं कोलाहल इत्यादि से आभास कर सकते हैं। आधुनिक कला में कलाकार की विशिष्ट भावनाएँ, नवीनतम आयाम एवं गहन संवेदनाओं के साथ विभिन्न माध्यमों से अभिव्यक्त होती हैं। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात उनके समकक्ष रचनाधर्मिता तथा प्रत्येक व्यक्ति कलाकार के लिये न्याय प्रदान करने की प्रतिबद्धता का नियम लागू किया गया। कला सृजन की प्रगति से जुड़े कलाकार अपनी मातृभूमि के प्रति कला के विकास में प्रगतिशील थे। स्वतन्त्रता के 45 वर्ष बाद भी जन धारणा यह थी कि कला के विकास की प्रगति ने शहर से कस्बे तक कलाकार को आश्रित बना दिया।

1–कासलीवाल, मीनाक्षी : ललित कला के आधारभूत सिद्धान्त पृ0 37
राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी
जयपुर (2003)

2–साखलकर, र0वि0 : आधुनिक चित्रकला का इतिहास पृ0 315
राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर (2004)

नन्दलाल बोस, शैलोज मुखर्जी, रामकिंकर बैज, के0के0 हैब्बर, एन0एस0 बेन्द्रे, के0सी0एस0 पन्निकर, सोमनाथ होरे, भूपेन खक्कर जैसे कलाकारों ने जमीन से जुड़े रहने तथा पल्लवित रहने का सफलतम प्रयोग किया। भारत का आयामी रूप विदेशी व स्वदेशी आँचलिक कला प्रक्रियाओं से जुड़ा रहता है। समकालीन कला में इस तरह की प्रक्रियाओं को दर्शाया नहीं जाता बल्कि कला प्रयोग को अत्यधिक महत्व प्रदान किया गया। कलाकार के मन में आधुनिकता को लेकर जो प्रश्न हमारे समस्क्ष आये वे रचना प्रक्रिया को लेकर ही आये हैं।

किसी भी देश व काल में आधुनिक कही जाने वाली कला पर अनेक प्रभाव दृष्टिगत होते हैं तथा वे कला के प्राचीन व वर्तमान स्वरूप से प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से सम्बद्ध होते हैं। विभिन्न कला शैलियों में सृजन के विविध आयाम होते हैं तथा उनके पीछे विविध दार्शनिक दृष्टिकोण होते हैं।[1]

आधुनिक सदी की हर एक वस्तु के वैज्ञानिक विश्लेषण द्वारा समझने, विचारने तथा प्रयोग करने की वृत्ति ने पिकासो को नया मार्ग दर्शन दिया। पिकासो ने अपना ध्यान अपने आस–पास बिखरी हुई वस्तुओं पर केन्द्रित किया। कमरे में रखी किताबों, सिगरेट के डिब्बों, गिलास, अखबार आदि के वाह्य तथा भीतर के छुपे गुणों को उसी तरह समझने का प्रयास किया जिस तरह अभिनेता हर एक पात्र के गुणों को व आत्मा को आत्मसात कर लेता है। इन विभिन्न वस्तुओं से कलाकार ने भावनात्मक तादात्म्य ही स्थापित नहीं किया अपितु वस्तु की बनावट को, उसके आकार को अन्दर से, बाहर से तथा विभिन्न कोणों से समझने की कोशिश की तथा फॉविज्म के सिद्धान्तों को तार्किक कसौटी पर परखा। चित्र की सपाट सतह पर किस तरह बिना छाया, प्रकाश व पर्सपेक्टिव के दूरी दिखाई जा सकती है, किस तरह आकारों की गोलाई व मोटाई दर्शाई जाये इन सिद्धान्तों पर प्रयोग किये।[2]

1–राठौड़, मदन सिंह : वास्ट पृ0 83–84
(आधुनिक भारतीय चित्रकला में आकृति मूलक प्रवृत्ति) सम्पादक–रघुनाथ पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, उदयपुर (राजस्थान) (2003)

2–शर्मा, भवानी शंकर : रूप शिल्प पृ0 103
(पाब्लो पिकासो : जायन्ट और मार्डन आर्ट) सम्पादक श्याम बिहारी अग्रवाल
129, कामता प्रसाद कक्कड़ मार्ग
इलाहाबाद (1986)

समकालीन कलाकारों ने भारतीय कला मूल्यों पर मानव की उपलब्धियों को प्रमुखता से चित्रित किया है। समकालीन कलाकारों को विदेशों में महत्ता प्रदान नहीं हुई तो उन्होंने 'त्रैवार्षिकी भारतीय अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी' का आयोजन किया जिससे कला का प्रचार एवं प्रसार हुआ। चित्रों के माध्यम से अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर समाज के न्याय को जन–जीवन एवं मानवीय गरिमा के रूप में पहचान कराने का एक दिलचस्प ढंग था। कलाकृतियों के माध्यम से प्रजातांत्रिक पद्धति को लागू करने की पेशकस चलती रही तथा बाद में उस पद्धति को समाप्त कर दिया। इसके पश्चात भारतीय समकालीन कला का रुख अनोखा एवं परिवर्तित होता दिखायी दिया। चित्रों में अक्षर जैसे मण्डल, यन्त्र, चक्र, देवनागरी में ओम्, श्रीं आदि जैसे संकेत दिये गये। इससे कलाकार के मन में उद्वेलित भाव इस तरह के तथ्यों को उजागर किया गया। विपिन कुमार, वासुदेव, रंगास्वामी, नरेन्द्र पांचाल एवं सतीश गुजरात जैसे समकालीन कलाकार हैं जिन्होंने इन तथ्यों के साथ विभिन्न दिशाओं में अपने लक्ष्य को पूरा किया। इनके प्रयास से ऐसा लगता है कि आधुनिक भारतीय कला को एक नयी दिशा मिल गयी है जो समकालीन कलाकार के निरन्तर प्रयत्नशील होने का उदाहरण है। समकालीन भारतीय कलाकार विदेशों में जाकर पश्चिमी कला के गहरे तत्वों से प्रभावित हुए तथा इस संदर्भ में एक वर्ग के कलाकार वे भी थे जो अपनी तन्त्र कला में पहचान बना रहे थे। इनके चित्रों में तन्त्र सम्बन्धी चिन्ह स्वास्तिक, चक्र, त्रिशूल इत्यादि का चित्रण है।

भारत के समकालीन कलाकार अधिकांशतः अमूर्त कला का अनुकरण निरन्तरतः कर रहे हैं, जो समकालीन प्रवृत्तियों को प्रतिध्वनित करते हुए अपना मौलिक योगदान दे रहे हैं। भारतीय समकालीन कला पर विदेशी कला का प्रभाव तो अवश्य पड़ा है, लेकिन वह शीघ्र आत्मसात हो गया था। प्राचीन यूनानी कला का प्रभाव गान्धार कला के रूप में तथा ईरानी कला का प्रभाव मुगल चित्रकला के रूप में आया।

आधुनिक भारतीय कला में निरन्तर परिवर्तन होते गये जिससे यूरोपीय प्रभाव को कलाकारों ने आत्मसात करके नये आयामों का सृजन हुआ। यूरोपीय प्रभाव से भारतीय समकालीन कला में नवीनता का भाव अत्यधिक महत्वपूर्ण हो गया। भारतीय कला में आधुनिकता के आयाम पाश्चात्य कलाकारों के साथ उच्चस्थ विचारों तथा घनिष्ठता के सम्बन्धों को स्थापित करना था; क्योंकि

मानव द्वारा क्रियान्वित वातावरण के प्रभाव से ही समाज के वातावरण से कला के नवीनतम स्वरूप को प्रदर्शित किया जाता है। आज महत्वपूर्ण तथ्य की भावना प्रत्येक मनुष्य एवं प्रत्येक घर में प्रतीक के रूप में सम–सामयिक तौर पर देखने को मिलती है। प्रतीक चित्रों को देखने से कलाकृतियों की भारतीयता की भावनाओं को उत्प्रेरक माना जाता है। प्रेरणादायक चित्र भारत में अधिकांशतः देखने को मिलते हैं; क्योंकि चित्रकारों द्वारा निर्मित कलाकृतियों में राजनैतिक, सामाजिक एवं आर्थिक पहलुओं का प्रदर्शन किया जाता है। इससे जन–सामान्य में एक भावनात्मक विचार स्थापित होते हैं। कलाकार को समाज के प्रत्येक पहलुओं से सम्बन्ध रखना होता है। समाज से ही कलाकार को नये आयामों को रचने की प्रेरणा प्रदान होती है। कलाकार द्वारा रचित चित्र से समाज लाभान्वित होता है तथा कलाकार की भावना में समाज का परिदृश्य दिखायी देता है जो दर्शकों को सुखदायक लगती है।

रवीन्द्रनाथ टैगोर के चित्रों को देखने से यह प्रतीत होता है कि समाज की विचारधारा भावनात्मक रूप से जुड़ी हुई हैं। यामिनी राय ने समकालीन कला जगत में विशेष ख्याति अर्जित की। उनके प्रेरणादायक भाव व प्रतिभा सम्पन्न कुशलता होने का प्रमाण उनकी कलाकृतियों में दिखायी देता है।

आधुनिक कला में माध्यमों तथा रचना सामग्री की दृष्टि से भी बहुत विविधता है। जल, टेम्परा, वॉश, तैल, पेस्टल आदि के अतिरिक्त विभिन्न वस्तुओं को चिपकाकर कोलाज बनाये जा रहे हैं। कहीं–कहीं बहुत गाढ़ा रंग थोपा जा रहा है। प्लास्टर, मिट्‌टी, मोम, लुगदी आदि से आकृतियों को उभार देकर रंगा जा रहा है। थर्मोकोल पर भी उभारदार चित्र बनाये जा रहे हैं। लकड़ी के धरातल पर विविध प्रकार की धातुओं, प्लास्टिक के टुकड़ों तथा टेराकोटा टायलों को लगाकर भी चित्र का रूप दिया जा रहा हैं धातुओं को पीटकर रिलीफ का प्रभाव उत्पन्न किया जा रहा है।[1]

कलाकार अपनी चेतना से वाह्‌य जगत की रूपाकृति को विकसित करने में योजनाबद्ध ढंग से सृजन करता है। उसके अन्दर रचनात्मक संयोजन का गुण होना आवश्यक है।समकालीन कला के परिवेश में तत्कालीन विकास को क्रमबद्धता के रूप में पारस्परिक

1–अग्रवाल, गिर्राज किशोर : आधुनिक भारतीय चित्रकला पृ0 217
संजय पब्लिकेशन्स
शैक्षिक पुस्तक प्रकाशक
अस्पताल मार्ग आगरा–3 (1999)

विचारों से सृजित किया जाता है। कलाकृति की गुणवत्ता सामाजिक समस्याओं के निराकरण का मार्ग निर्धारित करती है। कलाकार के मन पर सामाजिक स्थितियो का व्यापक प्रभाव पड़ता है। पाश्चात्य कला के आकार एवं सिद्धान्त को परम्परा के आधार पर वस्तुगत रूप में चित्रित किया जाता है। स्वतन्त्र रूप से किसी भी आकार को पूर्णतः स्वतन्त्र कारणों से संयोजित किया जाता है।

भारतीय चित्रकला में विभिन्न शैलियों के अन्तर्गत परम्परागत विषय की प्रधानता है। जैसे–अजन्ता शैली, राजस्थानी शैली, मुगल शैली एवं पहाड़ी शैली आदि। इन शैलियों में कलाकार ने अपने निर्माण कार्यों की भूमिका निभाई है। समकालीन चित्रकार भी इसी तरह से निर्माण कार्य जैसे–प्रकृति के सुन्दरतम दृश्यों का चित्रण उनमें आन्तरिक भावों को स्थान देना उपलब्धियों का समन्वय है। चित्र रचना करते समय कलाकार अपने मन में योजना बनाता है जिससे वह चित्र निर्माण कर सके। अपने स्वच्छतम विचारों से चित्र तल पर साकार करने को उत्सुक रहता है। यही विचार विषय प्रधान रूप में चित्र में समायोजित होते हैं। कलाकार के मन में चित्र संयोजित करने के भाव विषय–वस्तु के रूप में दिखायी देते हैं।

समकालीन कला प्रवृत्तियों की समय–सीमा एवं कलाकार की क्रिया–कलापों में एक अद्भुत नवीनता देखने को मिली। इन्हीं समकालीन कलाकारों में रणवीर सिंह बिष्ट का नाम आता है। बिष्ट जी ने अपने समकालीन कलाकार जिसमें सतीश गुजराल, कॅवल कृष्ण खन्ना आदि के साथ एक नवीनतम परिवर्तन स्वतन्त्र देश को प्रदान किया। बिष्ट जी ने अपने अतीत की एक रूपरेखा तैयार की थी जो उनके बाल्यकाल से किशोरावस्था की समयावधि तक जब वे लैन्सडौन में रह कर 'किंग जार्ज स्कूल'[1]जो वर्तमान में राजकीय इण्टरमीडिएट कालेज, जयहरीखाल है। चित्र संख्या : 10 विद्यालय जाते समय उन्हें सुदूर नीले रंग की पहाड़ियाँ आकाश को स्पर्श करती हुई दिखायी देती थीं। चित्र संख्या : 11 इसी अतीत से प्रेरित होकर उन्होंने 'ब्लू श्रृंखला' का एक अद्भुत संकलन आधुनिक कला के स्वरूप को नई दिशा प्रदान की। यह

1–त्रिपाठी, आर0सी0 : लैन्सडौन (समाज–संस्कृति और इतिहास)पृ0 196
सम्पादक–कोटनाला, अश्वनी
लैन्सडौन पुस्तकालय समिति
बिनसर पब्लिशिंग कम्पनी 58/1, घोसी गली
पलटन बाजार, देहरादून (उत्तराखण्ड) (2004)
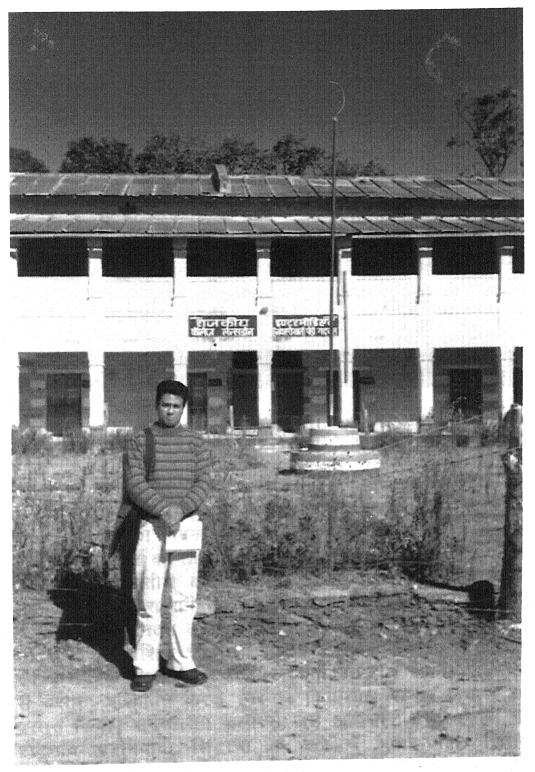
चित्र संख्या : 10

शोधार्थी ने राजकीय इण्टरमीडिएट कालेज जयहरीखाल, लैन्सडौन का भ्रमण किया, जिसमें रणवीर सिंह बिष्ट ने हाई स्कूल की शिक्षा ग्रहण की।
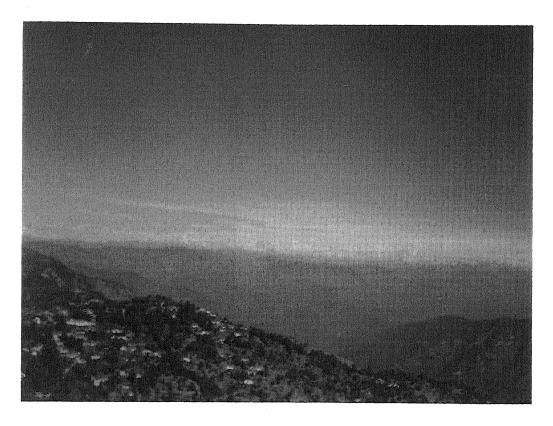
चित्र संख्या : 11
सुदूर पहाड़ियाँ जिन्हें देखकर रणवीर सिंह बिष्ट कला के प्रति प्रेरित हुए थे।

'ब्लू श्रृंखला' नीले रंग से तैयार है तथा कला को अपनी दृष्टि से देखने का उनका अपना अन्दाज था। चित्र संख्या : 12 वे एक प्रख्यात चित्रकार के साथ–साथ एक कुशल लेखक भी थे। उनकी कला यात्रा पर्वतीय क्षेत्र से लेकर लखनऊ कला एवं शिल्प महाविद्यालय के सम्मान को उत्कृष्ट श्रेणी तक ले गयी। बिष्ट जी ने कला के नवीनतम तत्वों के साथ कला के विभिन्न पहलुओं को भी छूने की कोशिश की तथा भारीय समकालीन कला में विचारों की वास्तविक स्थिति को उजागर किया। उन्होंने अपनी भावनाओं से वस्तुतः परिवर्तित करके निरन्तर क्रियाशील रहकर विचारों को प्रस्तुत किया। समकालीन कला से जुड़े अधिकांशतः कलाकारों का प्रादुर्भाव प्रयोगवादी सिद्धान्त के रूप में मुखर रहा, जिससे प्रगतिशील कलाकारों को आधुनिकता की दिशा में सृजनात्मक बनाया।
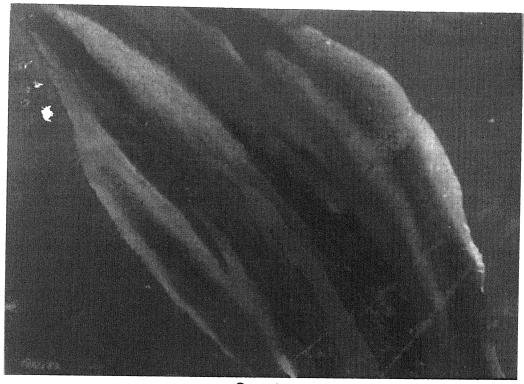
चित्र संख्या : 12
ब्लू शृंखला का चित्र

समकालीन कला के सापेक्ष किसी भी विचारधारा को विशेष घटना या परिप्रेक्ष्य में शब्दों के मंथन से चित्रकार के मन की भावनाओं को उद्वेलित करना ही कला की अनुभूति है। कलाकार की अपनी जिज्ञासा से ही कला यात्रा की महत्वपूर्ण साधना व आध्यात्मिक स्वरूप माना जाता है। बिष्ट के समक्ष ये समस्त वैचारिक तत्व तथा मूल भावनात्मक परिवर्तनशीलता कला के विकास का मार्ग खोज रही थीं। इस तरह की अवधारणा से समकालीन कलाकार को कला के मार्मिक तत्वों को उजागर करके महत्वपूर्ण आयामों की अनुभूति होती है। यह एक ऐसी कौशलपूर्ण व्यापक काल्पनिक एवं वास्तविकता से सम्बन्धित है जो बिष्ट की कला शृंखला में स्पष्टतः दिखायी देती है। उनका अथक प्रयास एक साधना के स्वरूप को उजागर करता है; क्योंकि समाज से जुड़े रहने तथा विभिन्न वर्गों के लोगों से सम्पर्क होने के कारण उनके कार्य–कलापों को चित्रों के माध्यम से प्रस्तुत कराने का यह एक सरल ढंग था। कला में इस तरह के नये–नये प्रयोग समकालीन कला को नवीनता का आधार देते हैं। समकालीन कलाकारों की चित्रकारी का ढंग एवं गुणवत्ता विशेष विधा पर होती है। ये विधाएँ अपने आयामों में गतिशीलता का निरन्तर पालन करती हैं।

सांस्कृतिक परिवेश

भारतीय आधुनिक कला को अगर सांस्कृतिक परिवेश के रूप में देखें तो उसमें दर्शन की दृष्टि से चित्रकारों की मौलिकता की स्पष्ट झलक दिखायी देती है। भारतीय कला की सैद्धान्तिक अवस्था को समायोजित करें तो उसमें नवीनता की व्यापकता अनिवार्य रूप से परिलक्षित होती है। रणवीर सिंह बिष्ट एक ओर समकालीन कलाकार होते हुए भी आधुनिक कलाकार की पृष्ठभूमि में भी पीछे नहीं हटे। उन्होंने एक आधुनिक कला के क्षेत्र में प्रक्रिया को मूल स्वरूप में प्रदान करके समीक्षा की दृष्टि से अनेक तथ्यों को उजागर किया। बिष्ट ने कला में भारतीयता के विकास को एक सामाजिक क्रान्ति के रूप में आधुनिक दृष्टिकोण प्रदान किया। उनकी ''अन्वान्टेड सीरीज'' के नाम से चित्रों का संकलन प्रसिद्ध माना जाता है। समाज के लोगों का अभिशप्त जीवन को उन्होंने अपने नये आयामों से विकसित किया तथा अपनी कला श्रृंखला को विकसित करने के लिए विकास की ओर उन्मुख हुए जिससे उनकी यह कला श्रृंखला दर्शकों में प्रसंशनीय हुई।

आधुनिक कला ने 20वीं शताब्दी के अन्त में एक नया मोड़ लिया तथा समकालीन कला का विकास प्रारम्भ हुआ। इस कला ने विविध भावनाओं को उजागर किया। कलाकार के अन्दर समस्त प्रकार की भावनाओं को उद्वेलित कराकर इसी आयामों की एक श्रृंखला तैयार करके भारत ने पूरे विश्व में कला जिज्ञासुओं को समकालीन कला से अवगत करा दिया। इससे भारत में समकालीन कला के विकास की सम्भावनाओं को बल मिला। समकालीन कला के विचारधारा के प्रचलन ने कलाकृतियों की सम्भावनाओं को प्रोत्साहन प्रदान किया। जन–मानस व कला जगत के विचार–विमर्श से एक महत्वपूर्ण विशिष्ट धारा को सार्थक बनाया गया। समकालीन कला के आयामों की कलाधारा मूल तत्वों से उजागर हुई तथा उसकी वास्तविकता को लोकप्रिय बनाने में विकास की ओर उन्मुख हुई।

समकालीनता की प्रवृतियाँ आधुनिक कला आयामों की विभिन्न आवश्यकताओं को पूर्ण करने तथा उसके सृजन प्रक्रिया को प्रबलता प्रदान करना है। त्रिआयामी चित्रों की रचना में मानव के समस्त पहलुओं को अंकित किया जाता है। रंगों के संयोजन में

आयामों के संतुलन पर विशेष ध्यान दिया जाता है। आधुनिकता के प्रभाव से देश एवं समाज में कला का समावेश होता है। कला की गतिशीलता में समाज के परिदृश्य अवश्य दिखायी देते हैं। कला की उन्नति में एक क्रान्तिकारी प्रवृत्ति समाहित होकर गतिशील रही है। कल्पना योजना में लीन कलाकार के मन में उच्च विचार उसकी चित्रशाला में उपलब्धियों के रूप दिखायी देता है। समाज के विचार–विमर्श को अपनी कला योजना में चित्र के रूप में व्यक्त करना ही उसका योगदान है। कलाकार का चिन्तन उसकी उपलब्धियों को प्रकाशमय बनाता है। वह प्रयत्नशील रहकर अपनी उत्कृष्टता को कलाकृति में व्यक्त करता है। कला चिन्तकों ने आधुनिक कला को समकालीनता के उच्च विचारों के मंथन से चित्र की रचना माना है। उसने तकनीक एवं विषयवस्तु को आधार मानकर तत्परतापूर्वक चित्रण कार्य किया। आधुनिक परिवेश में समकालीनता की व्यापकता को मूल परिवर्तन एवं गतिशीलता का आधार माना है। आधुनिकता की पहचान को नवीन कार्य–कलापों एवं नवीनतम कृतियों एवं मानवीय अनुकूलता से माना है। मानवीय संवेदनाओं को अभिव्यक्ति के माध्यम से विभिन्न तरह के आयाम प्रदान करने का भरसक प्रयास रहता है। प्रेरक भावों से ही उसके दृष्टिगत बिन्दुओं का आंकलन होता है।

प्रासंगिक कलाकार

पद्मश्री रणवीर सिंह बिष्ट समकालीन कला के सुविख्यात कलाकारों में हैं जो अपने कला जीवन को दृश्य चित्रण के माध्यम से परिचित कराते हैं। उन्होंने अपने परिश्रम और सच्चाई से कला मार्ग की यात्रा को सफल बनाने में महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ अर्जित की हैं। बिष्ट का प्रारम्भिक जीवन पहाड़ में बीता तथा बाद में कला एवं शिल्प महाविद्यालय लखनऊ में। कलाकार के रूप में उन्होंने अपने को स्थापित किया। उन्हें अपने देश के प्रति अगाध लगाव था। यहाँ की मिट्टी को वे सब कुछ मानते थे। उनके बचपन की याद दिलाते ऊँचे– ऊँचे पहाड़ों, मन्दिरों को उन्होंने अपनी कला के द्वारा अभिव्यक्त किया। हिमालय की वादियों में बर्फीली चोटियाँ, बादल व मौसम के बदलते अन्दाज को भी उन्होंने चित्रित किया। उनके चित्रों में पारदर्शिता एवं स्वच्छता विशेष रूप से देखने को मिलती है। इनके

सुपरिचित कलाकारों में सुधीर खास्तगीर, मदन लाल नागर, अवतार सिंह पवॉर, सुरेश्वर सेन आदि थे। ये सभी कलाकार इनके साथ कला विषय की सृजन प्रक्रिया को उचित ढंग से विचार–विमर्श करते थे। सांस्कृतिक धाराओं से जुड़े कई प्रयोजन उनके प्रयासों की सीमाओं तक उनके अन्वेषक होने के प्रतीक हैं।

तकनीकी प्रक्रिया

तकनीकी प्रक्रिया से कार्यमूलक विचार एवं सम्प्रेषण का सर्वोच्च सिद्धान्त माना जाता है। आधुनिक कला का अस्तित्व एक आधारभूत प्रकृति एवं मानवीय उपलब्धि में विद्यमान है। आधुनिक कलाकार राजनैतिक, सामाजिक एवं वैचारिक आयामों के तथ्यों से सदैव उत्प्रेरित रहते हैं। मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से सरल जन–जीवन के सोपान प्रकट होते हैं। रणवीर सिंह बिष्ट ने अपने चित्र तकनीकी प्रणाली एवं आधुनिक संप्रेषण में एक नवीन आभा प्रदान करने का विकल्प चुना। उन्होंने जन–मानस की मानसिक भावनाओं को चित्रों के माध्यम से एक अलौकिक शक्ति के रूप में चित्रित किया। अपने चित्रों के संयोजन में उन्होंने आध्यात्मिक उन्नयन को उत्प्रेरित करके हृदय की गहराईयों को आभास कराया है। कलाकार के मन में भौतिक वाद का जब जन्म होता है तो वह आधुनिक कला का गुण है। इसके वैज्ञानिक विश्लेषण से आधुनिक तन्त्र के अन्वेषण का ज्ञान होता है। कलाकार के मन में नवीनतम विचार एवं विभिन्न पहलुओं का जन्म होते रहता है जो उसकी वैचारिकता के माध्यम को संप्रेषित करती है।

कलाकार की विचारधाराओं को विभिन्न तरह से भावपरक एवं आत्मपरक के आयाम में सृजनात्मक प्रक्रिया के रूप में संयोजित किया जाता है; क्योंकि कला के प्रस्तुतीकरण में मानव के विकास की अपेक्षा इंगित रहती है। इसी तरह समकालीन कला की कल्पना विशिष्ट प्रयोजन से व्यक्त होती है। आधुनिक कलाकार इस तरह की परम्परा को विशिष्ट रूप देकर विशेषताओं से अलंकृत करता है। उसके जीवन में समाहित मूल्यों की रूपरेखा को मनोवैज्ञानिक रूप में विकसित चेतना की ओर प्रेरित करता है।

कला स्वयं में एक सृजन शक्ति को लिये हुए होती है। आधुनिक कला के अन्तर्गत समस्त विषयवस्तु अपने विचारों को

संतुलित करती है। कलाकार की भूमिका एक पथ प्रदर्शक के रूप में होती है। समकालीन कलाकार का अपना एक विचार, तकनीक, विधि से कला के उत्कृष्ट गुणों को अपनाकर रचना कार्य में तत्पर रहता है। वैसे कलाकार के अन्दर विभिन्न तरह के वैचारिक तत्व होते हैं जो उसकी सार्थकता को कला की भाषा में व्यक्त करने का प्रयास करते हैं। व्यापक धारणाओं के द्वारा नीवनतम आयामों में कलाकार की प्रखरता प्रदर्शित होती है।

वर्तमान समय में अगर देखा जाय तो समकालीन कला की समीक्षा एवं उसका परिवेश कल्पना पर निर्भर करता है। वस्तु–चित्रण से लेकर दृश्य–चित्रण के सभी आयामों को स्पर्श करने की प्रवृत्तियाँ तत्पर रहती हैं। कलाकृतियों की मूल भावनाएँ तत्वों एवं तकनीक की उपलब्धता के आधार पर प्रस्तुत होने का आधुनिकतम विकसित गुण है।

रणवीर सिंह बिष्ट की कला प्रवृत्तियों पर दृष्टि डालें तो यही कल्पना चिन्तन एवं विकास से भरी अलंकृत आकृतियाँ एक नवीनतम स्वरूप प्रदान करती हैं। गहनतम वैचारिक कल्पना से योजनाबद्ध कलाकृति में प्राविधियों के माध्यम से यथार्थ अभिव्यक्ति होती है। कला के प्रयोजन में आधुनिक विषयों पर सृजन निरन्तर होता है; क्योंकि जन–मानस के विषयों से प्रेरित होकर कलाकार समकालीन प्रवृत्तियों को देखकर उसके मन में नवीनतम विचार उत्पन्न होते हैं। कलाकार द्वारा सृजित आयाम निरन्तरतः आकर्षण में वृद्धि कराते हैं। इस तरह के चित्रों में संयोजन की दृष्टि से आधुनिकता के परिप्रेक्ष्य में समकालीन प्रवृत्तियाँ अपने आकर्षण से जानी जाती हैं। सभी कलाकार समाज की आवश्यकता से कलाकृतियों के माध्यम से चेतना जागृत कर रहे हैं।

(स) समकालीन कला प्रवृत्तियाँ एवं रणवीर सिंह बिष्ट की कला:

समकालीन कला प्रवृत्तियों पर दृष्टिपात करते समय कलात्मक वातावरण का होना अति आवश्यक है। इससे कला का प्रवाहमयी स्वरूप विकसित होता है। समकालीन कला के द्वारा शहरी विकास में भी वृद्धि हुई है। समकालीन कला के विकास में कई तरह की कठिनाईयों का सामना करना पड़ा। जैसे कभी—कभी कला के प्रवाह में शिथिलता आने लगी। उसी तरह विकास की स्थितियाँ भी शिथिल होने लगी। इस समय के चित्रों का अवलोकन विभिन्न तरह से किया गया। समकालीन कला का विकास अधिकांशतः उत्तरी भारत में हुआ, जिनमें राजस्थान, उत्तर प्रदेश, दिल्ली एवं पंजाब हैं। चित्रों को कागज एवं कैनवास पर चित्रित किया जाता था। इन चित्रों में आकृतियों को रेखाओं के द्वारा चित्रित किया गया, जिनमें रंगों का संयोजन इस प्रकार से हुआ कि उनमें सजगता व साम्यता को प्रतीकात्मक भावों के द्वारा वर्णित किया गया। रणवीर सिंह बिष्ट द्वारा बनाये गये विभिन्न रेखाचित्र निम्नवत् हैं:— चित्र संख्या : 13, 14, 15, 16 एवं 17

चित्र संख्या : 13

चित्र संख्या : 14
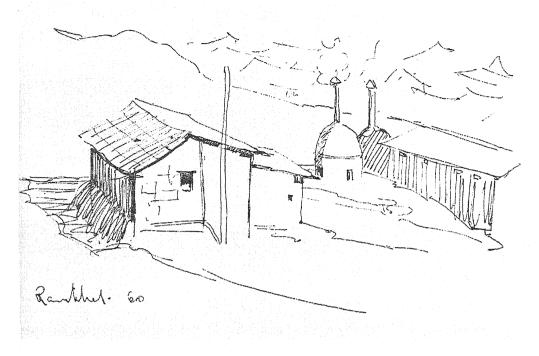
चित्र संख्या : 15
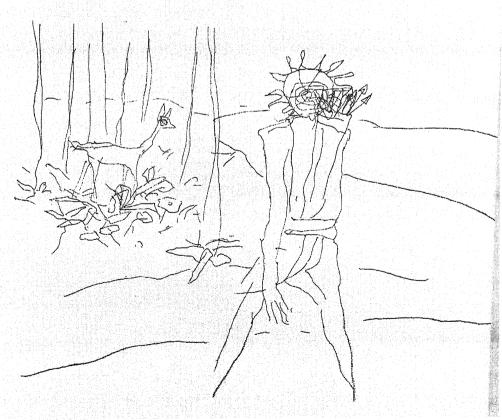
चित्र संख्या : 16

चित्र संख्या : 17

आधुनिक भारतीय चित्रकला का विस्तार उसकी समकालीन प्रवृत्तियों से हुआ। मानव ने जहाँ भी क्रिया–कलाप किये वहीं उसने कला की भावना को हमेशा ग्रहण किया। ऐसा ही विकास का दौर रणवीर सिंह बिष्ट के विभिन्न श्रोतों का माध्यम रहा। समकालीन कला में अन्तर्राष्ट्रीय कला जगत् की प्रवृत्तियों का विशेष महत्व रहा है। इस प्रकार के विशेष प्रभाव भारतीय समकालीन चित्रकला की प्रवृत्तियों में देखने को मिलते हैं। पाश्चात्य कला में सन् 1905–06 ई0 में कला आन्दोलन को 'फाववाद' के नाम से पहचाना गया। यह आन्दोलन जर्मनी में अभिव्यंजना के रूप में विस्तारित हुआ। इस अवधि में कलाकारों ने ग्रुप में रहकर अलग–अलग ढंग से अपने निजी प्रयासों से अग्रसर होने की कोशिश की। कलाकार का प्रयास सम्पूर्ण विश्व में एक आन्तरिक भाव की झलक को चित्रित करना रहा। स्वतन्त्रता के पूर्व चित्रकला पर यूरोपीय प्रभाव उसके अंश से ही उत्पन्न हुआ। भारतीय चित्रकारों में रवीन्द्रनाथ टैगोर, अमृता शेरगिल एवं यामिनी राय ने स्वतन्त्रता के पश्चात् अपने सृजनात्मक पहलू को अत्यधिक बढ़ावा दिया। तभी से कला की रूपरेखा में कला का जन संचार

तथा कला की अभिव्यंजना का प्रभाव देखने को मिलता है। एक ओर भारतीय कलाकार आधुनिकता के स्वरूप को कला में समाहित करने की भरसक कोशिश में लगे थे जो चित्रकला की नवीनता को साकार करने के लिए प्रयासरत दिखायी दिये।

परिणाम स्वरूप समकालीन कला का जो स्वरूप कला समीक्षकों, कलाकारों, विद्वानों के समक्ष उभर कर आया उनमें पाश्चात्य कला प्रयोगों के प्रभाव का अंश बहुत अधिक देखने को मिलता है। भारतीय समकालीन कला प्रभाव तीव्रता से जन सामान्य एवं नवीन कलाकारों के मनो मस्तिष्क पर पड़ा है।[1] किन्तु समकालीन कलाकारों द्वारा भारतीय आधुनिक कला शैली को नवीन स्वरूप देने की दिशा में किये जा रहे प्रयासों से यह सम्भावना अवश्य बनती है कि कालान्तर में भारतीय आधुनिक कला शैली का मौलिक स्वरूप उभर कर आयेगा।[2] समकालीन भारतीय आधुनिक कलाकारों के विचार से आकारों तथा रंगों में भावोत्पादक गुण तात्विक रूप से छिपे हैं। अतः शुद्ध अर्मूत पद्धतियों में भी चित्रण किया जा सकता है जो कलाकार की स्वयं की अनुभूति और आइडिया पर आधारित हो।[3] आज का भारतीय चित्रकार नये कथ्यों, नये परिवेशों, नयी कल्पनाओं और नये प्रतिमानों के अनुसंधान में व्यस्त है। कला के क्षेत्र में इधर के दर्शकों में जो विश्वव्यापी परिवर्तन हुए हैं उनके प्रभाव से भारतीय कलाकार भी प्रभावित हैं।[4]

भारतीय समकालीन कला को प्रोत्साहन देने के लिए पाश्चात्य दृष्टिकोण के आधार पर भारतीय चित्रकला के सम्मिश्रण से पहचाना गया, जो भी प्रयास उस समय किये गये वे सब चित्रकला की प्रगति को अग्रसर करने के लिए किये गये। नव

1–पाण्डेय, सन्ध्या एवं पाण्डेय, आर0पी. : भारतीय कला पुनर्जागरण एवं चित्रकार पृ0 78
मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ आकदमी
रवीन्द्रनाथ ठाकुर मार्ग बाणगंगा,
भोपाल–462003 (1997)

2–वही, पृ0 79

3–अग्रवाल, गिर्राज किशोर : आधुनिक भारतीय चित्रकला पृ0 133
संजय पब्लिकेशन्स शैक्षिक पुस्तक प्रकाशक
अस्पताल मार्ग, आगरा–3 (1999)

4–गैरोला, वाचस्पति : भारतीय चित्रकला पृ0 289
चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान
38, यू0ए0 जवाहरनगर बंगलो रोड
पो0बा0 नं0 2113, दिल्ली–110007 (1990)

कलाकारों को प्रगतिशील बनाने में यह प्रयास सार्थक रहा। भारत में यथार्थवादी पाश्चात्य सभ्यता व्यक्ति–चित्रण एवं रेखांकन की प्रगति का एक नया रूप उभरा। टैम्परा एवं तैल चित्रण को अधिक सर्वोत्कृष्ट माध्यम माना गया। प्रगतिशील कलाकारों में एन0एस0 बेन्द्रे, परमानन्द चोयल, मोहन सामन्त एवं के0एस0 कुलकर्णी का नाम अग्रणी है। कला में विस्तार लाना ही समकालीन कला का प्रयोग था। कला पारखियों के मन में जागरूकता का भाव उत्पन्न होकर सफलतम प्रयास रहा है। चित्रकार अपनी कृतियों में व्यवस्था की दृष्टि से रंग–योजना, रेखाओं का सम्मिश्रण इत्यादि को विकसित किया करते थे। प्रत्येक कलाकार अपनी–अपनी दृष्टि से नवीनतम प्रयोगों से अपनी कला यात्रा को तय करने में जुटे रहे। पाश्चात्य दृष्टि को भी कई कलाकारों ने ग्रहण किया जिससे कला के नये आयाम प्रस्तुत हुए। सभी कलाकार समकालीन कला के माध्यम से भारत को सुदृढ़ बनाने में अग्रणी रहे। एक नवीनता की दृष्टि से प्रत्येक कलाकार में अपने कला संसार को अपनी भावनात्मक विचारों से विकसित करने की योजना होती है। उस समय कलाकार अपनी समकालीनता की प्रवृत्ति को सुदृढ़ता प्रदान करने में तत्पर था।

समकालीन कलाकारों में रसिक रावल एवं ए0ए0 अलमेलकर ने अपने चित्रों को जल रंगों से चित्रित करके उचित विषयों पर कार्य किया। अमृता शेरगिल व यामिनी राय जैसे आधुनिक कलाकारों की प्रेरणा से समकालीन कलाकारों को भी प्रोत्साहन मिला। अलमेलकर की कला में राजपूत कला का भाव झलकता है। उन्होंने कला को राजपूतों का सर्वांगीण इतिहास बताया। अलमेलकर की कृतियों में परम्परागत भारतीय रेखात्मक शैली का विकास देखने को मिलता है। पक्षियों, आदिवासी महिलाओं आदि से सम्बन्धित चित्र देखने को मिलते हैं। चित्रों को दर्शाने में रेखीय एवं छाया–प्रकाश का अद्भुत प्रभाव देखने को मिलता है।

बिष्ट ने जल रंगों के इस माध्यम में लगभग एक वर्ष से कुछ प्रयोग किया है और उनके ही कथनानुसार वह वीरेश्वर सेन से प्रेरणा ग्रहण करते हैं, लेकिन यह बात बिल्कुल स्पष्ट है कि वीरेश्वर सेन ने इस माध्यम से प्रकृति को एक पारलौकिकता प्रदान करने का प्रयत्न किया था, ऐसी पारलौकिकता जो सुपरिचित है। इसके विपरीत बिष्ट प्रकृति को जिन रंगों में घटित करते हैं वह एक सजीव प्रक्रिया है। न इस प्रक्रिया में सुपरिचित लघु चित्रों की सुकोमलता या वायवीयता को ढूँढना ठीक होगा और न इन लघु

चित्रों में वह खिलवाड़ ही है जो कि बिष्ट के पुराने लघु चित्रों का एक 'मूड' रहा है।[1]

इस तरह बिष्ट जल रंगों और तैल रंगों की तकनीक में महारत हासिल करने की दिशा में चल पड़े। उनके एक समकालीन चित्रकार फ्रैंक वेसली, जो आजकल आस्ट्रेलिया में रहते हैं, की बिष्ट के कला-जीवन में बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। फ्रैंक वेसली के संवेदनशील जल रंगों की छाप उनकी कल्पनाशीलता पर स्पष्ट है। सम्भवतः इससे उनकी सृजनात्मकता को मदद मिली और रंगों के संदर्भ में खासा परिष्कार होने के साथ-साथ तकनीक भी पुष्ट हुई, परिणाम स्वरूप जल रंग चित्रण में उन्हें अनोखी सफलता मिली। इन दोनों चित्रकारों की क्षमता के जरिए जलरंगी-चित्रण में पैचवर्क तथा वॉश तकनीक समृद्ध व लोकप्रिय हुई। इसके लिए लखनऊ स्कूल प्रसिद्ध रहा है और इस बात का अपना ऐतिहासिक महत्व है। बंगाल स्कूल की वॉश तकनीक को लखनऊ के चित्रकार आगे ले गये थे। उन्होंने जल रंगों से वॉश चित्रण करके परिष्कार के लिए टेम्परा पद्धति से चित्रों को नफासत से पूरा किया। वॉश चित्रण में 'सबक', 'कवयित्री' और 'मूसलाधार वारिश' बिष्ट की उत्कृष्ट उपलब्धियाँ हैं।[2]

समकालीन कला का विस्तारीकरण भौतिक ढंग से सुन्दरतम नवीन प्रयोगों से माना गया है। एक ऐसा श्रोत चित्रकला को अलंकृत करने में लगा जो अपने बिम्ब पर देखने के लिए मूलभूत माना जाने लगा। रणवीर सिंह बिष्ट ने सौन्दर्य की अभिवृद्धि के माध्यम से समकालीन कलाकार के रूप में योगदान दिया। समकालीन चित्रकला में उनके अनुभवों का बिम्ब उनके चित्रों में दिखायी देता है। उनकी कलाकृतियों में समाज के प्रति जो भावनाएँ जागृत होती दिखायी दी जो उनके पदार्थ चित्रण की मौलिकता को स्पष्टतः चित्रित करने का अथक प्रयास रहा है।

1-एक बार फिर परीक्षण : दिनमान 6-12-1976 से संकलित
कला त्रैमासिक अंक 22 1985
राज्य ललित कला अकादमी, लखनऊ।

2-मोहन, सौमित्र : रणवीर सिंह बिष्टः समकालीन भारतीय कला
अनुवादक : वर्मा उमेश
श्रृंखला पृ0 3 ललित कला अकादमी रवीन्द्र भवन
नई दिल्ली-110001 (1990)

समकालीन कला की प्रवृत्तियों को ध्यान में रखते हुए बिष्ट ने चित्रों की रचना की। रंगों का संयोजन भारतीय परम्परा एवं गुणवत्ता के आधार पर किया है। उनकी कला में पर्वतों की बाहुल्यता देखने को मिलती है। उनकी कल्पना व्यापक दृष्टिकोण की रही है। चित्र संयोजन को अद्‌भुत स्वरूप प्रदान करना उनकी विशिष्टता रही है। उनके चित्रों में ग्रामीण जीवन से जुड़े कई पहलुओं पर आधारित विषय रहे हैं। वे सदैव अपने चित्रों को सजगता से चित्रित करते थे। अपने अन्दर छिपी कलाकार की प्रतिभा को उन्होंने चित्रों की श्रृंखला से उजागर किया। उनके चित्रों में दृश्य चित्रों को देखने से ऐसा आभास होता है कि उनकी भावना में आध्यात्म के प्रति भी अप्रतिम लगाव था; क्योंकि उनके चित्रों में मठवासी चित्र संख्या : 18 एवं केदारनाथ में हिमालय की निर्मलता देखने को मिलती है। चित्र संख्या : 19
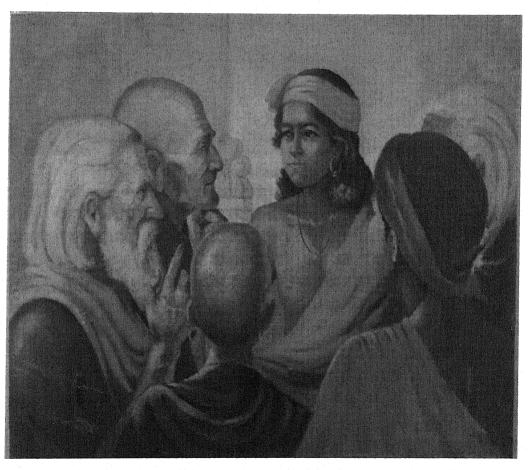
चित्र संख्या : 18
मठवासी

चित्र संख्या : 19
केदारनाथ मन्दिर

यह शैलीगत स्तर पर एक विचित्र प्रकार की टकराहट थी। एक ओर पहाड़ों में उनका प्रारम्भिक जीवन बिताना और साथ ही नागरिक जीवन की जटिलताओं से उनका साक्षात्कार– इन दो तथ्यों ने बिष्ट के व्यक्तित्व को एक विचारशील व्यक्ति और एक कलाकार का रूप प्रदान किया। यहाँ उनके विभिन्न चरणों पर द्रुत गति से दृष्टि डालना प्रासंगिक होगा। एक चित्रात्मक जल रंग के कलाकार, जिनमें मौलिक रंगों का प्रभाव अधिक है–बिष्ट ने कई मैदानी तथा पहाड़ी दृश्यों के चित्र बनाये हैं। उन्होंने पुष्पित होने वाले पेड़ों के चित्र बनाये, बड़े–बड़े फलक पर रात्रि–दृश्यों को बनाया, जिनमें रंगों के चौड़े आकार हैं, जिनमें कुछ स्पष्ट मकानों के दबे हुए दृश्य हैं या रात के वे फलक जो काले, लाल तथा पीले रंगों में बनाये गये हैं सब सम्मिलित हैं।[1]

1–बिष्ट एक कला घटना : स्टेटस्मैन 25 सितम्बर, 1977 से संकलित
कला त्रैमासिक अंक 22 1985 पृ0 14
राज्य ललित कला अकादमी, लखनऊ।

बिष्ट के चित्रों में नयी टैकनीक और नयी भावांकन पद्धति के साथ–साथ विषयों के चुनाव में भी नवीनीकरण है। रंगों की ताजगी और आकृति की स्वप्निल तरंगें उनके चित्रों में गति तथा जीवन भर देती हैं। एक ओर उन्होंने झुर्रियों से भरे हुए वृद्धावस्था के ऐसे प्रिय चित्र दिये हैं, जिनसे जीवन की गहन अनुभूतियों के स्वर मुखरित हैं और दूसरी ओर उद्दाम यौवन के उल्लास से भरी हुई दीपशिखा सी सुन्दर मुखाकृतियाँ हैं, जिनमें तीव्र भावावेश की अभिव्यक्ति है। श्रम, अभाव, उत्पीड़न और विषाद के समन्वय से उन्होंनें ऐसे चित्रों का भी निर्माण किया है, जिनमें जीवन की यथार्थताओं के दर्शन होते हैं।[1] उनकी कला में प्रकृति प्रेम का स्वर सबसे अधिक मुखर है। फिर भी उनकी कला सदैव प्रयोग–धर्मा रही है। कभी अत्यन्त आवेग में बनी उनकी आकृतियाँ अपूर्ण अथवा विस्फोटक सी जान पड़ती है तो कभी उन्होंने अत्यन्त धैर्यपूर्वक मनोरम आकृतियों की भी रचना की है।[2] बिष्ट के चित्रों में तकनीकी नवीनता और थीम्स (विषय) की मौलिकता है।[3] उनकी नये प्रयोगों में रुचि है इसीलिए उनकी रचनाओं में अनुभूति की तीक्ष्ण क्षमता और अभिव्यक्ति की कुशलता है। वे रंगों और आकारों को अपेक्षित सहजता के साथ जुटाते हैं।[4]

1–गैरोला, वाचस्पति : भारतीय चित्रकला पृ0 273–274
चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान
38, यू0ए0 जवाहरनगर बंगलो रोड
दिल्ली–110007 (1990)

2–अग्रवाल, गिर्राज किशोर : आधुनिक भारतीय चित्रकला पृ0 59
संजय पब्लिकेशन्स शैक्षिक पुस्तक प्रकाशक
अस्पताल मार्ग, आगरा–3 (1999)

3–वर्मा, अविनाश बहादुर : भारतीय चित्रकला का इतिहास पृ0 309
प्रकाश बुक डिपो, बड़ा बाजार,
बरेली (1997)

4–शर्मा, लोकेश चन्द्र : भारत की चित्रकला का संक्षिप्त इतिहास पृ0 182
कृष्णा प्रकाशन मीडिया (प्रा0) लि0
11, शिवाजी रोड, मेरठ (2005)

रणवीर सिंह बिष्ट के अर्मूत संयोजन आकाश के विस्तार व पहाड़ के सन्दर्भों में जुड़ते हैं। नीले रंग के ये संयोजन उनके यहाँ के संयोजनों की ही अगली कड़ी है, जिनमें से आकृतियाँ निकलती गयी हैं और शेष रह गये हैं—नीले और हरे रंगों के सूक्ष्म भेदों को दर्शाते कुछ आकार।[1]

सहज अभिव्यक्ति गतिशील और अस्थिर दोनों है। चित्र की आभा दर्शक की मानसिक और सौन्दर्यपरक प्रवृत्तियों को उत्तेजित कर देती है। कृति कुछ ऐसे सिद्धान्तों और विचारधाराओं का प्रतिपादन करती है जिसकी जड़े पुरातन अध्यात्म में गहरे पैठी हैं। गूढ़ ज्ञान अथवा अध्यात्म एक दूसरी दुनियाँ, अभिनव बिम्ब और मनुष्य की कल्पना व समझ से बाहर की दिव्य आभायुक्त वास्तविकता प्रस्तावित करता है। इस धरातल से उतर कर वह रोजमर्रा के ऐन्द्रिक संसार में आ जाता है, असंख्य विरोधाभासों द्वारा संचालित मनुष्य की जिन्दगी के तानों—बानों में। यही बिष्ट का कला संसार है—ऐसा संसार जो तमाम ब्रह्माण्ड की मन्त्रणा को सामने लाता है, जिसमें नीले और सलेटी रंगों की विभिन्न रंगतों तथा उठान और उतार के छाया—प्रकाश का विरोधी आवर्तन है और यही मानव मात्र की यातना एवं उसके सुख—दुःख को स्पष्ट करता है। बिष्ट के नये चित्रों की शृंखला की सृजनात्मकता की जान यही नीला और सलेटी रंग है।[2] इस श्रृंखला के चित्रों में बाद में बिष्ट ने स्वाभाविक रूप से तरल रंग को बहाने के बाद चाकू से रंग लगाकर और उस पर सीधे कलर ट्यूब से रेखांकन कर इस शृंखला को आगे बढ़ाया। इस तरह से संयोजित कैनवास पर रेखाओं के माध्यम से उन्होंने सशक्ता से नगर दृश्यों का

1—सिंह, सीमा : भारतीय समकालीन प्रयोगमूलक चित्रकला की मनोवृत्तियाँ एवं प्रवृत्तियाँ (शोध प्रबन्ध) पृ0 85 ललित कला विभाग, महात्मगा गाँधी काशी विद्यापीठ वाराणसी—2 (2000—01)

2—वर्मा, उमेश : समकालीन भारतीय कला श्रृंखला पृ0 1—2 (रणवीर सिंह बिष्ट) ललित कला अकादमी रवीन्द्र भवन नई दिल्ली (1990)

आभास बड़े मनोहारी रूप में दिया था।[1]'नगर दृश्य' शृंखला के दौरान वर्ष 1967–68 में बिष्ट को अमरीका और फ्रांस देशों की यात्रा पर जाने का अवसर मिला। वहाँ से लौटने के बाद उन्होंने अपनी इसी शृंखला पर काम जारी रखा, लेकिन उनके बाद के चित्रों में जो बदलाव आया वह यह था कि जब वह कैनवास पर रंग–बिरंगी क्षैतिजाकार पट्टियाँ बनाने लगे और फिर पट्टियों के क्रम को आवश्यकतानुसार किन्हीं धब्बेदार रूपाकारों से तोड़ देते।[2] उनके इन रूपाकारों वाले कैनवास धरती और आसमान के मिलन को साकार करते हैं, जैसे पहाड़ों के बीच कोई अपने को एकाग्र करके चिन्तन में डूब गया हो और आकस्मिक रूप से उसके चिन्तन को कोई रूप मिल गया हो या किसी नदी के किनारे खड़े होकर ठहरे हुए जल को धुंधलके में देखते हुए कहीं स्वच्छ जल की पट्टियाँ और फिर छायादार पट्टियाँ दिखने लगें।[3]

देश के महानगरों में कला का विकास आधुनिक कलाकारों द्वारा चित्रों को प्रदर्शित करने से हुआ। चित्रकारों ने देश के छोटे शहरों में भी समकालीन कला को विकसित कराने की कोशिश की। कलाकार के भावात्मक दृष्टिकोण से कला का स्वरूप एक नये अन्दाज में दिखायी देने लगा। लखनऊ, इलाहाबाद, वाराणसी, आगरा, कानपुर, मेरठ, दिल्ली आदि महानगरों में समकालीन कला की प्रवृत्तियाँ तीव्र गति से अग्रसर हो रही थी। इसके साथ–साथ कलाकार के उत्साह में भी अत्यधिक वृद्धि होने लगी। इससे समकालीन कला को एक नई दिशा प्रदान हुई।

1–निगम, अखिलेश : समकालीन कला पृ0 32
(माटी की गन्ध बरकरार है
चित्रकार रणवीर सिंह बिष्ट)
ललित कला अकादमी संख्या–3–4
नवम्बर, 84 मई, 85 नई दिल्ली।

2–वही, पृ0 32

3–निगम, अखिलेश : समकालीन कला पृ0 32
(माटी की गन्ध बरकरार है
चित्रकार रणवीर सिंह बिष्ट)
ललित कला अकादमी संख्या–3–4
नवम्बर, 84 मई, 85 नई दिल्ली।

समकालीन कला के प्रचार व प्रसार में तत्पर कलाकारों में रणवीर सिंह बिष्ट के साथ गोपाल कृष्ण खन्ना, बद्रीनाथ आर्य एवं मदनलाल नागर चित्रकला की माँग को महत्वपूर्ण माना तथा सृजनात्मक प्रवृत्तियों की ओर अग्रसर हुए। इनमें से कुछ कलाकारों ने भारतीय पारम्परिक शैली को अत्यधिक महत्वपूर्ण समझा। उन्होंने अन्य माध्यमों से कई विषयों को साथ रखकर एक नयी तकनीक को जन्म दिया। इस शैली में अधिकांशतः वॉश तकनीक के भाव जागृत हुए जो कलाकार की अभिव्यक्तियों में एक मानी जाने लगी। बद्रीनाथ आर्य ने भारतीय परम्परा को प्रबलता प्रदान करने में अपना योगदान दिया। वे बंगाल शैली को भी परम्परागत ढंग से अभिव्यक्त करने में अग्रसर रहे। वे कहते थे कि परम्परा देश की धरोहर है तथा यह धरोहर देश की संस्कृति व सभ्यता को विकसित करने का कार्य करती है।

रणवीर सिंह बिष्ट के समकालीन कलाकार मदन लाल नागर थे। उन्होंने नूतनवादी प्रवृत्तियों को एक साथ कला शैली के रूप में विकसित किया। इनके चित्रों में समीक्षावाद व अभिव्यंजनावाद का प्रभाव दिखायी देता है। चित्र संख्या : 20
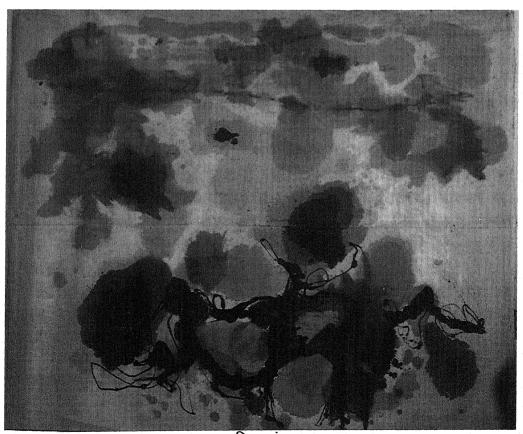
चित्र संख्या : 20
अभिव्यंजनावादी संयोजन

उनके प्रमुख चित्रों में सैरा चित्र, ब्लू सीरीज इत्यादि शृंखला की अत्यधिक प्रशंसा हुई। प्रकृति को विशेष रूप से अपने अनुभवों से तथ्यों के आधार पर चित्रित करने वाले लखनऊ के ये कलाकार विकसित कर रहे थे। कलाकार के अन्दर सृजन शक्ति को साकार करने के लिए इन्होंने समकालीन कला को विकसित करने में अपना अप्रतिम योगदान प्रदान किया। लखनऊ के कलाकारों में एक नयी चेतना जागृत हुई, यह चेतना समय के विभिन्न पहलुओं को विकसित करने का एक उचित माध्यम रही। समकालीन कलाकारों ने अपने अन्दर उदीयमान कीर्ति का प्रारम्भिक चरण पार करके एक अर्मूत चित्रण की ओर अग्रसर हुए। यहाँ अनेक चित्रकारों ने आधुनिक कला में समकालीन प्रवृत्तियों को उजागर करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

सन् 1956 तक श्री बिष्ट की ख्याति मुख्यतः एक रोचक जल चित्र भूखण्ड चित्रकार के रूप में थी। अब भी यदि हम लखनऊ के बहुत सारे कार्यालयों, स्मारक भवनों आदि में जायें तो उस समय के उनके जल चित्र टंगे हुए दिखायी देते हैं और अभी तक बहुत से ऐसे लोग हैं, जिनका उनके सम्बन्ध में ज्ञान सम्भवतः यहीं तक सीमित है कि वे बहुत अच्छे जल चित्रकार हैं। मुख्य बात उनके सम्बन्धों में यही है कि उन्होंने कला का आरम्भ एक लैण्डस्केप चित्रकार के रूप में किया था और इन 8–9 वर्षों के उपरान्त आज भी हम उन्हें मुख्यतः एक भूखण्ड चित्रकार के रूप में ही पाते हैं, लेकिन सन् 1954 के चित्रों और सन् 1963 के चित्रों में इतनी दूरी है कि उस व्यक्ति के लिए, जिसने श्री बिष्ट की प्रगति के हर चरण का अध्ययन न किया हो, ऐसा लगेगा कि सम्भवतः ये एक से अधिक चित्रकार के बनाये हुए हैं, लेकिन यह केवल उनका सतही (सुपरफीशल) अध्ययन ही होगा। हम उनके उन विभिन्न चरणों या दिशाओं का जिक्र करके यह सिद्ध करना चाहेंगे कि इतना लम्बा रास्ता तय करने के बावजूद चित्रकार बिष्ट के सारे रचनात्मक व्यक्तित्व में एक क्रमिक विकास है।[1]

प्रयोग की दृष्टि से सबसे पहला मुख्य चरण श्री बिष्ट का वह है जब उन्होंने जल चित्र के माध्यम को स्वीकार करते हुए केवल यथार्थ का सहारा नहीं लिया है और चित्रों की प्रभावोत्पादकता पर

1–कला–व्याकरण की गलियाँ : रणवीर सिंह बिष्ट की कला
धर्मयुग 7 जनवरी, 1972 पृ0 7
से संकलित कला त्रैमासिक अंक–22
राज्य ललित कला अकादमी
लखनऊ (1985)

महत्व देते हुए रात्रि तथा बरसात के चित्र बनाये हैं। इन चित्रों को हम केवल आभास के ही रूप में स्वीकार करेंगे। उनकी विशेषता तेजी से चलाये गये ब्रशों के कुछ स्ट्रोक्स के द्वारा अपेक्षित प्रभाव उत्पन्न करना है। उसके शीघ्र ही बाद उनके चित्रों में एक नया मोड़ आता है और कुछ समय के लिए वे, ऐसा लगता है, अपना विषय बदल रहे हैं और मानव आकृतियों पर महत्व दे रहे हैं। उस समय उन्होंने बहुत से ऐसे चित्र बनाये हैं जिनमें सिर गायब मिलेंगे। सम्भवतः उसके पृष्ठ में उनका यह विश्वास था कि आज की मानसिक जटिलताओं ने जीवन को दुःखमय बना दिया है और यदि उस प्रागैतिहासिक मनुष्य पर वापस आ जायें जिसके मस्तिष्क में जटिलताएँ नहीं आयी थी तो सम्भव हो कि आज के जीवन का विषाद कम हो सके और यही कारण है कि उस समय के चित्रों में हम उसी प्रकार की मुखाकृतियाँ पाते हैं जैसी कि उपलब्ध आदि–मानव की मुखाकृतियाँ। सम्भवतः यह श्री बिष्ट का उलझन तथा मानसिक संघर्ष का समय था और साथ ही मानसिक संस्कार का भी। इसके शीघ्र बाद ही वे फिर जल रंगों के प्रयोग पर आ जाते हैं और उन्होंने रंगों और साथ ही कुछ आकारों को महत्व दिया है, जिनमें यथार्थ की केवल छाया मात्र मिलती है। उन चित्रों की विशेषता मुख्यतः रंगों के प्रयोग हैं और कुछ अत्यन्त अस्पष्ट आकार। इसके फौरन बाद ही एक बार फिर हमको बिष्ट साहब का उस रूप में परिचय मिलता है, जिसमें प्रकृति की सारी रंगीनी और वसन्त की रमणीयता अपने सारे सौन्दर्य में मुखरित हो उठती है। वे तैल चित्र मुख्यतः फरवरी–मार्च के महिने में बनाये गये थे, जिस समय पेड़े नये वस्त्र पहनते हैं। उन चित्रों में समग्र प्रभाव पर ही विशेष महत्व दिया गया है और हम उन चित्रों को व्यापक रूप से रोमाण्टिक कह सकते हैं। जिन रंगों का प्रयोग उनमें किया गया है वे मूलतः आकर्षक हैं। अतः स्वाभाविक है कि लाल तथा पीले रंगों का उनमें प्राधान्य है। पुष्पित वृक्षों के ये चित्र इतने सजीव और रोचक हैं कि शायद अब उन चित्रों में से अधिक चित्र बिष्ट साहब के संग्रह में न मिल पायें क्योंकि अधिकांश लोगों ने खरीद लिये हैं।[1]

1–कला–व्याकरण की गलियाँ : रणवीर सिंह बिष्ट की कला
धर्मयुग 7 जनवरी, 1972 पृ0 7 –8
से संकलित कला त्रैमासिक अंक–22
राज्य ललित कला अकादमी
लखनऊ (1985)

समकालीन कलाकारों ने देश को गौरवान्वित किया। कला जिज्ञासुओं को जागृत करने के लिए सभी ने अपना अमूल्य समय दिया। ऐसे महत्वपूर्ण तथ्यों एवं तकनीक के विकास में समकालीन कला ने प्रतिनिधि के रूप में देश की पहचान करायी। कला के अंकन में जल रंग का प्रयोग महत्वपूर्ण रहा है। समकालीन कला में जल रंग का प्रयोग अत्यधिक हुआ है, इसके साथ–साथ वॉश तकनीक को अपनाया गया। पारम्परिक शैली के रूप में समकालीन कलाकारों की भूमिका अविस्मरणीय रही है। समकालीन कला के उत्थान में कलाकारों का पूर्ण सहयोग व प्रतिनिधित्व विषयवस्तु के रूप में सदैव जीवित रहेगा। एक नवीन शैली का विकास उसमें तत्परता बनाये रखने से होता है। रणवीर सिंह बिष्ट ने सभी कलाकारों को एक समकालीन कला के लिए प्रेरणादायक माना है। इन समस्त कलाकारों ने कला जगत में उत्तर प्रदेश के विभिन्न शहरों में अपनी साधना से पूर्ण सहयोग प्रदान किया। वे नवीनता को कला में एक नई प्रगतिशील प्रवृत्ति लाने में लगे हुए थे। प्रगतिशील उद्‌देश्य के साथ–साथ वे एक शीर्ष चेतना कला जागृति को अग्रणी रूप देना चाहते थे।

श्री बिष्ट ने अपने अनुभव का हमेशा विस्तार किया है। यहाँ अनुभव का अर्थ केवल सामाजिक अनुभव से नहीं है और न सामाजिक या व्यक्तिगत जीवन की जटिलताओं से है, यद्यपि इस दिशा में भी उन्होंने अपने जीवन को जिस सम्पन्नता से बिताया है और जिस प्रकार के अनुभव संग्रह किये हैं, वे किसी भी आधुनिक व्यक्ति के लिए आवश्यक होते हैं। उन्होंने भारत वर्ष के विभिन्न प्रदेशों का भ्रमण किया है, जहाँ के आहार–व्यवहार, जहाँ का वातावरण, जहाँ का आकाश, जहाँ की पर्वत–शीलाएँ, पेड़–पौधें, पत्ते, मन्दिर–इमारतें आदि सभी इतने विभिन्न और अनेक रूप हैं कि वे कलाकार के मन 'कनवेस' पर अनेक रंगीन चित्र बनाते रहे हैं। उनकी हर कलाकृति के पीछे कितने अधिक बनाये गये स्केचेज और मन में पड़ी हुई छापों का अंकन होगा।[1]

1–कला–व्याकरण की गलियाँ : रणवीर सिंह बिष्ट की कला
धर्मयुग 7 जनवरी, 1972 पृ0 7
से संकलित कला त्रैमासिक अंक–22
राज्य ललित कला अकादमी
लखनऊ (1985)

समकालीन कला में कलाकार की अभिव्यक्ति को व्यक्त करने का एक दृष्टिकोण है। नित नये समसामयिक आयामों को चित्रों के माध्यम से व्यक्त करना कलाकार की मौलिक दृष्टि रही है। कलाकारों ने आधुनिक कला की समीक्षा करके चित्रों को नवीनतम आयामों के रूप में स्वरूप प्रदान किया, जिससे कला को एक नई दिशा प्रदान हुई। कलाकार के भावों की अभिव्यक्ति अनुकूल परिस्थितियों को व्यक्त करने की निरन्तरतः उत्सुकता चित्रों में दिखायी दी। आधुनिक परिवेश को विविधतापूर्ण चित्रण द्वारा समकालीन कलाकारों ने प्रस्तुत किया। समकालीन कलाकारों ने राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति अर्जित की। कला की व्यापकता उसके विविध सोपानों में विषयगत शैली प्रमुख रही है; क्योंकि कला के द्वारा आदर्शों को उजागर किया जाता है।

समकालीन कला में कई तथ्यों को एक विषयगत रूप में चुन कर चित्रित किये गये। किसी विशेष परम्परागत आयामों को कला के द्वारा रूपायित किया गया है। यह प्रवृत्तियाँ समकालीन कलाकारों की समसामयिक प्रयोगमूलक रही हैं। भारतीय जन–जीवन को विषय के सापेक्ष स्वरूप प्रदान करने में आधुनिक प्रतीक के रूप में व्यक्त किया गया। यहाँ के विभिन्न समाज में भारतीय तत्व के विकास को स्वाभाविक रूप में व्यक्त किया गया। समकालीन कला में समाज एवं संस्कृति का अनुसरण देखने को मिलता है। समाज की अनेकानेक कार्य–कलापों को उजागर करने का सरलतम माध्यम कला ही रही है। कलाकार जन–मानस के भावनाओं को चित्र में संयोजित करके उनके हाव–भाव को व्यक्त करने की कोशिश करता है। सामाजिक घटनाओं को चित्रों के माध्यम से प्रेरक बनाने का प्रयास किया जाता है। ये सभी प्रवृत्तियाँ समकालीन कला को एकजुट करने में प्रयत्नशील रहती हैं। भारत में संस्कृति एवं सभ्यता का विकास चित्रों के माध्यम से भी देखा जाता है। यहाँ आध्यात्मिक आधार पर भी कला की अमूल्य निधि को चित्रण के माध्यम से जाना जा सकता है। कला के विकास में मूल तत्वों द्वारा मार्ग प्रशस्त हुआ है। कला में समाहित आकर्षण उसकी आन्तरिक एवं वाह्य सौन्दर्य को व्यक्त करती है। कला की पहचान कलाकार की सृजनात्मक प्रवृत्तियों से की जाती है।

अध्याय दो

रणवीर सिंह बिष्ट

का व्यक्तित्व

अध्याय दो

रणवीर सिंह बिष्ट का व्यक्तित्व

4 अक्टूबर, 1928 को लैन्सडौन में कल्याण सिंह बिष्ट और रामचन्द्री के घर पैदा हुए नन्हे रणवीर ने खेल–खेल में पता नहीं कब कूची पकड़ी, लेकिन जब लोगों देखा तो कागजों पर पहाड़ों का पूरा सौन्दर्य बिखरा पड़ा था। आठ साल के होते–होते रणवीर को आस–पास का पूरा क्षेत्र एक होनहार कलाकार के रूप में जान चुका था। प्रकृति से उनकी दोस्ती स्कूल के रास्ते से उन्हें भटका देती थी। स्कूल कहीं और बालक रणवीर कहीं और होता। अक्सर सजा मिलती और शिकायत घर तक जाती लेकिन शरारतें थमती न थीं। माँ दुःखी होती, पिता से शिकायत करती, लेकिन चंचल रणवीर की कूची का कमाल देखकर सब कुछ भूल जाती। लैन्सडौन गोरों की बड़ी छावनी थी और उन दिनों ब्रिटिश सेना के विरूद्ध बगावत का जज्बा भी था। बालक रणवीर ने कुछ मौकों पर सैनिकों की ऑखों में धूल झोंककर 'बागियों' की मदद भी की।[1]

रणवीर सिंह बिष्ट ने कला को अपना गुरु व उसकी शृंखला को साधना के रूप में स्वीकार किया है। कला के क्षेत्र में बिष्ट को विविधतापूर्ण के रूप में एक सरल व्यक्तित्व का श्रेय रहा है। अपनी विशिष्ट शैली से अप्रतिम कृतियों को रूपायित करने में उन्होंने अपनी कला की छाप अमिट कर दी। कला मर्मज्ञ व कला प्रेमी भी उनकी कला की सराहना करते हैं। उन्होंने भारत गौरवान्वित किया है। यह पर्वतीय प्रान्त उत्तराँचल जो वर्तमान में उत्तराखण्ड से जाना जाता है; क्योंकि उत्तराखण्ड उनकी जन्म स्थली रही है।

1–जोशी, नवीन : समाज–संस्कृति और इतिहास पृ0 238
(पद्मश्री रणवीर सिंह बिष्ट)
सम्पादकः कोटनाला, अश्वनी
लैन्सडौन पुस्तकालय समिति (पंजी0)
बिनसर पब्लिशिंग कम्पनी, 58/1, घोसी गली
पलटन बाजार, देहरादून (उत्तराखण्ड) (2004)

सामान्यतः बिष्ट का औसत कद, गौर वर्ण, छोटी–छोटी आँखें तथा उनकी मुखाकृति में पर्वतीय जीवन चरित्र की झलक स्पष्ट रूप से दिखाई देती थी, जिससे उनमें आकर्षण था। उनका जीवन सादा व सरल था तथा उनकी वेशभूषा भी सामान्य रही है। इसके बावजूद भी वे एक कुशल एवं ख्याति प्राप्त चित्रकार के रूप में जाने जाते हैं। उनकी मुखाकृति में कोमलता का भाव तथा ठोडी पर फ्रेंचकट दाढ़ी उनके कलाकार होने का एक शौक था। उनके पहनावे में जीन्स की पेंट व कुर्त्ता व जैकेट तथा पैरों में कैनवास शूज उनकी पहचान थी। उन्होंने अपने जीवन की 70 वर्ष की अवधि में 45 वर्ष की कला साधना को अपने भावुक चेहरे से कलाकार, प्रशासक, सामाजिक व पारिवारिक परिस्थितियों में आत्म विश्वास के साथ तत्परता से व्यतीत किया। उन्होंने अपनी कला को उत्कृष्ट कोटि के रूप में स्वयं को विद्वत के रूप में भी अवगत कराया। उन्होंने सदैव अपना आत्म विश्वास की परिपक्वता से कलाकार के स्थान को सुशोभित किया। वे अपने स्वास्थ्य के सम्बन्ध में हमेशा सतर्क रहा करते थे। मांस, मदिरा व धूम्रपान से उन्हें परहेज था। उनके द्वारा निर्मित कृतियों को देखने से उनके अनुभव का ज्ञान आभास होता है। उनकी कलाकृति में रस प्रधान तत्व व प्रेरणादायक अंश की अनुभूति होती है। उनकी चित्रण शैली में एक परम्परा है। वे सदैव कला के प्रति अपनी विशेष रुचि रखते थे।

समाज से जुड़े हुए कई पहलुओं से बिष्ट का नाता रहा है। परम्परागत समकालीन चित्रकारों की कृतियों को देखकर उनके मन में विचारों की अनुभूति हुई तथा एक सूझ–बूझ कलाकार की तरह वे समाज के प्रत्येक क्षण को आभास करते रहे। वे चित्रकला में बौद्धिक एवं मस्तिष्क का अन्तर्सम्बन्ध मानते थे। उनके शब्दों में– "All my paintings are nothing but the expression of my inner self." [1] इस प्रकार बिष्ट ने अपनी कला साधना की अवधि में विभिन्न श्रृंखलाओं का चित्रांकन किया। उन्होंने कला के आन्तरिक एवं वाह्य सम्बन्धों को हमेशा एकजुट होकर उसमें रचनाशीलता को भाव रूप में दर्शाया है।

1-Verma, S.P. : Reactions & Reflections P. 6
(R.S. Bisht & His "Realism" in Art)
All India Fine Arts & Crafts Society
New Delhi.

उनका एक चित्र 'मदर एण्ड चाइल्ड' जो पर्वतीय परम्परा को इंगित करता है। चित्र संख्या : 21
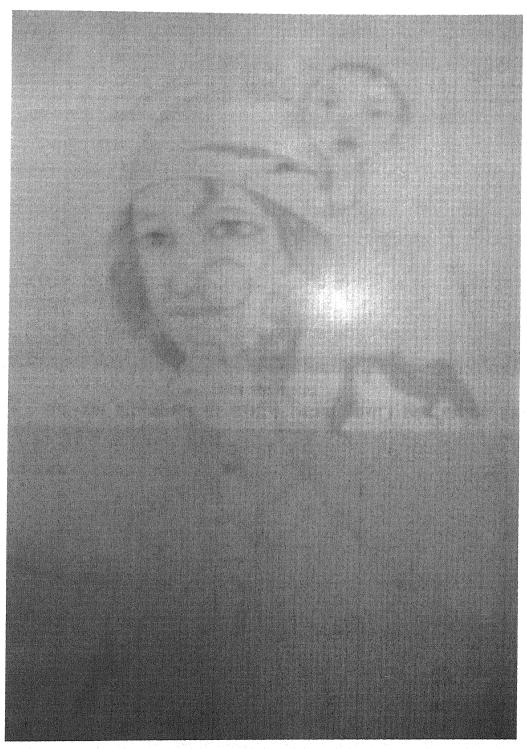
चित्र संख्या : 21
मदर एण्ड चाइल्ड

परम्परा से सम्बन्धित पहाड़ी घसियारिन को भी उन्होंने चित्रित किया है। चित्र संख्या : 22

चित्र संख्या : 22

गप–शप शीर्षक पर भी उन्होंने चित्रण किया। चित्र संख्याः 23

चित्र संख्या : 23

पर्वतीय विषय से सम्बन्धित पनिहारिन को भी उन्होंने चित्रित किया है। चित्र संख्या : 24
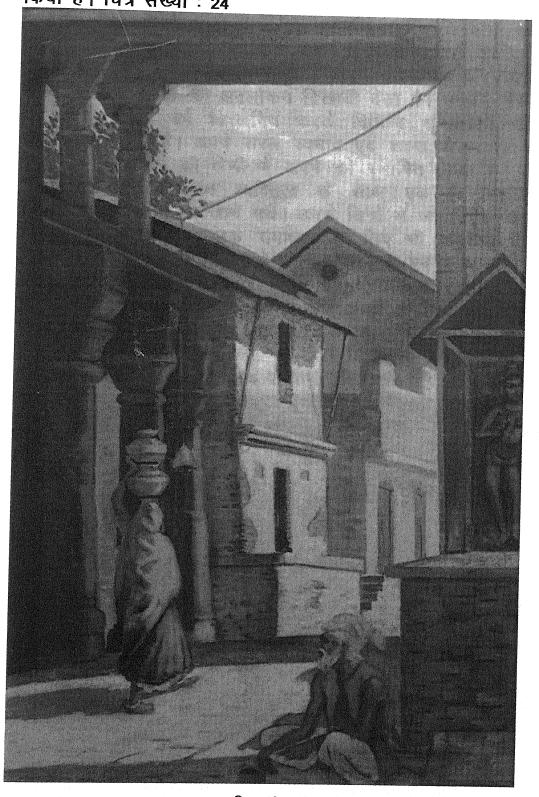
चित्र संख्या : 24
पनिहारिन

चित्रकला के प्रख्यात जल रंग चित्रकार रसेल पिलेट, फ्रंक ब्रैगइन की प्रभाववादी शैली, पैब्लो पिकासो की घनवादी शैली एवं नारायण बेन्द्रे की कला से बिष्ट पर प्रभाव पड़ा; क्योंकि कला का जो भी अंश उन्होंने धारण किया उसमें इन कलाकारों का पूर्ण प्रभुत्व रहा है। उनकी कला शैली में कार्य करने का ढंग तथा उनके मौलिक कार्यों का अवलोकन दिखायी देता है। उन्होंने ऐसी पद्धति से कार्यों को विश्लेषित करके विभिन्न शृंखलाओं को चिरस्थायी किया है। अपने सरल स्वभाव एवं शान्त वातावरण में रहते हुए कलाकार की श्रेणी में अपने को स्थापित किया है। वे विचारशील एवं धैर्यवान व्यक्तित्व के साथ एक चिन्तनशील कलाकार के रूप में भी जाने गये। उनके चित्रों में जो विषय प्रश्न के रूप में उठते थे, उनके समाधान के लिए भी रूपरेखा की विशेषता को व्यक्त किया है। वे सदैव स्पष्टवादी एवं सत्य बोलने पर ज्यादा बल देते थे। उनकी बाणी में मधुरता एवं गुणवत्ता की झलक प्रायः मिलती थी। ऐसा उनके लघु भ्राता श्री हीरासिंह बिष्ट सेवा निवृत्त वास्तुविद् जो बालासौड़,कोटद्वार में रहते हैं, ने दिनांक 26 दिसम्बर, 2006 को मेरे द्वारा लिये गये साक्षात्कार में बताया।[1] उनके परिवार के साथ शोधार्थी चित्र संख्या : 25

चित्र संख्या : 25

1—बिष्ट, हीरा सिंह : रणवीर सिंह बिष्ट के लघु भ्राता जो कोटद्वार में रहते हैं।

उन्होंने सदैव भावात्मक क्रिया–कलापों को एक मार्ग के रूप में चुना जो उनके जीवन शैली का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गयी। उनमें आत्मबल की दृढ़ता थी। वे एक कठोर अनुशासक भी थे जो उनके चरित्र में व्याप्त था। वे आदर्शवादी कलाकार के रूप में जाने जाते थे। बिष्ट ने भावुकता में शीर्ष विहीन शृंखला, नारी, श्वान शृंखला एवं अन्वान्टेड शृंखला उनके व्यक्तित्व के विशेष गुणों को दर्शाती है। उन्होंने समाज में व्याप्त कुरीतियों, संकट, अराजकता, आतंकवाद, भ्रष्टाचार, शोषण आदि विषयों पर अनेक शृंखलाओं को चित्रित किया। उनकी कृतियों को देखकर ऐसा लगता है कि उनका सहृदय भावुक मन में दया का विशेष अंश आभास होता है। वे विषम परिस्थितियों में भी विचारशील, गहन चिन्तन, मनन करते थे। कला की कठिनाईयों व समस्याओं के समाधान हेतु वे सदैव तत्पर रहते थे। उनमें विचारशीलता का व्यक्तित्व कई प्रकार की समस्याओं को प्रसन्नता के स्वभाव से सुलझाना उनका विशिष्ट गुण था। बिष्ट मुख्य रूप से कलाकारों के हित में एक विकल्प को ढूढने की भरसक कोशिश करते थे, जिसमें कलाकार अपने कर्तव्यों का निर्वाह कर सके। समाज हित में कलाकार की महत्ता को उन्होंने प्रेरक के रूप में दर्शकों तक पहुँचाया है।

मैने दिनांक 19 नवम्बर, 2006 को अपने शोध सर्वे के दौरान उनके आवास इन्दिरानगर, लखनऊ में शोध से सम्बधित सामग्री प्राप्त की। चित्र संख्या : 26

चित्र संख्या : 26

मैंने यह पाया कि जब बिष्ट अपने आवास में रहते थे तो वहाँ उनका एक स्टूडियो है, जिसमें चित्रों का विशाल संग्रह भी है। चित्र संख्या: 27 आवास में उनकी मझली पुत्री रमिला द्वारा प्रदान किये गये उनके कैटलॉग इत्यादि सामग्री से मुझे अपने शोध प्रबन्ध को सार्थक करने में सफलता प्रदान हुई।

चित्र संख्या : 27

वे अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त चित्रकार के साथ एक अच्छे व्यक्तित्व के थे। उनका परिचय अच्छे लोगों से था। उन्होंने कला की साधना में विभिन्न वर्गों का संग्रह भी किया। वे प्रकृति के प्रति प्रगाढ़ स्नेह रखते थे। शायद बचपन से ही प्रकृति को करीब से देखने पर उनमें यह गुण समाहित हुआ होगा।

वे अपने बचपन को याद करते थे तो अपने भविष्य के बारे में सोचते थे। पर्वतीय जीवन को उन्होंने करीब से देखा तथा उन्हें लैन्सडौन की हमेशा याद आती रही। लैन्सडौन से जयहरीखाल स्कूल जाते वक्त मार्ग में उन्हें सामने हिमाच्छादित व नीले रंग की पर्वत श्रृंखलाएँ आकर्षित करती थी। घने वन के बीच पड़ने वाले झारापानी जहाँ बुराँश के वृक्षों ने भी उन्हें प्रेरित किया। उसके ऊपर की चोटी पर टिफन–टॉप का दृश्य भी उनको आकर्षित करता था। मन्दिरों, इमारतों आदि की कलाकृतियाँ वे बनाया करते

थे। अपने बाल्यकाल में वे अंग्रेजों को दृश्य चित्रण करते देखते थे तो उनके मन में चित्र सृजन की भावना जागृत हुई। वे विभिन्न स्थानों का भ्रमण करके चित्रों की शृंखला बनाया करते थे।

वे लखनऊ के हजरतगंज में एक कॉफी हाउस में कॉफी पिया करते थे तो वहाँ संगीत का लुत्फ उठाया करते थे। बिष्ट कला के साथ संगीत प्रेमी भी थे। समस्त क्रिया–कलापों के अंश उनके चित्रों में देखने को मिलते हैं। लगभग 60 के दशक में उनके चित्रों की लोकप्रियता बढ़ गयी इससे दर्शकों में नया उत्साह आया। बिष्ट ने कला एवं संगीत के प्रचार–प्रसार को निरन्तर बढ़ाया। उन्होंने अपनी मित्र मण्डली के साथ–साथ एक जनादेश से गुणवत्ता की पहचान बनायी। बिष्ट अपने को आत्म केन्द्रित करके अपने सरल स्वभाव को अनुभवों के आधार पर आत्मसात करते थे। उनकी मित्र मण्डली में राज बिसारिया, के0एन0 कक्कड़, प्रो0 एस0पी0 वर्मा, प्रो0 एन0 खन्ना आदि थे। पूर्व प्रधानमंत्री चन्द्रशेखर से भी इनकी नजदीकी थी। बिष्ट का व्यक्तित्व वैविध्यपूर्ण था। वे हमेशा नये सृजन के विकास से चित्र शृंखला को जन्म देते थे। वे यह भी मानते थे कि कला का कोई भी अंश संसार से अलग नहीं है। वे यह भी मानते थे कि संसार की प्रत्येक वस्तु में कला का स्वरूप है। उनमें किसी भी जटिलता का निरूपण करने में आत्मभाव की प्रेरणा थी। मानव जीवन के विचारों को अपनी कलाकृतियों के माध्यम से व्यक्त करने में एक निःस्वार्थ भावना थी। वे कला के उपासक के साथ ही जनहिताय की भावना भी रखते थे।

शिक्षा के श्रोत

रणवीर सिंह बिष्ट की प्रारम्भिक शिक्षा पाँचवीं तक उनके पैतृक ग्राम–पोखरी, विकासखण्ड–यमकेश्वर, तहसील–बिठाणी, जनपद–पौड़ी गढ़वाल में हुई। शोध सर्वे में लिया गया चित्र बिष्ट के पैतृक आवास में शोधार्थी चित्र संख्या : 28। छठी से हाईस्कूल तक की शिक्षा उनकी किंग जार्ज हाईस्कूल जो वर्तमान में राजकीय इण्टरमीडिएट कालेज जयहरीखाल है, में हुई। यहाँ की ऊँची–ऊँची पहाड़ियाँ उनके जीवन की प्रेरणा बनीं। गॉव से विद्यालय बहुत दूरी पर था। रास्ते की दूरी अधिक थी जिसमें जंगल भी था, पीने का पानी भी अधिक दूरी पर था। उन्हें बाल्यकाल में कष्टों से संघर्ष करने की प्रेरणा मिली। अपनी दृढ़ता से वे एक ऊँचे शिखर पर पहुँचे। लैन्सडौन में स्थित आवास

जिसमें रणवीर सिंह बिष्ट का जन्म हुआ। चित्र संख्या : 29 पाँचवी कक्षा उत्तीर्ण करने के उपरान्त बिष्ट ने लैन्सडौन नामक Hill Station से छठवीं की पढ़ाई प्रारम्भ की। यहाँ उनके पिता जी श्री कल्याण सिंह बिष्ट कैन्टोनमेंट बोर्ड में नौकरी करते थे। अपने पिता के अनुशासन में उन्होंने सन् 1948 में दसवीं की कक्षा उत्तीर्ण की। हाईस्कूल में उनका एक विषय चित्रकला भी था।
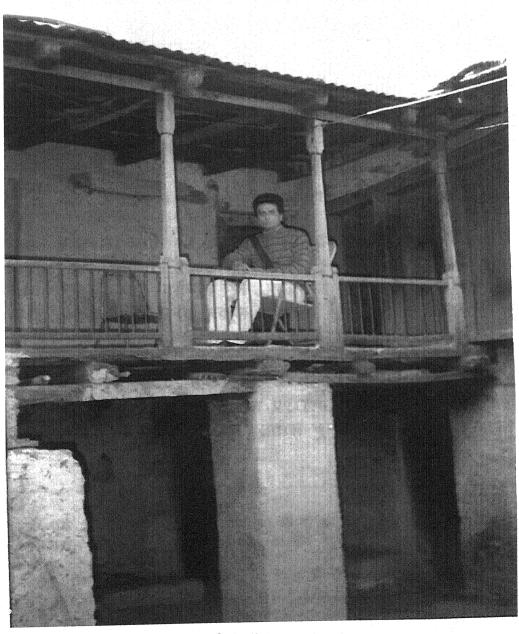
चित्र संख्या : 28
रणवीर सिंह बिष्ट के पैतृक आवास में शोधार्थी
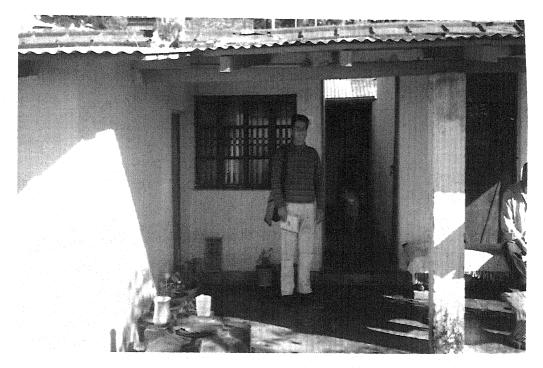
चित्र संख्या : 29
लैण्ड्सडौन स्थित आवास जिसमें रणवीर सिंह बिष्ट का जन्म हुआ

उनके स्कूल सहपाठी श्री सुरेशानन्द ढौडियाल लैन्सडौन निवासी ने दिनांक 25 दिसम्बर, 2006 को साक्षात्कार में बताया कि वे किंग जार्च स्कूल जो वर्तमान में राजकीय इण्टरमीडिएट कालेज जयहरीखाल है, में उनके स्कूल सहपाठी थे।[1]बिष्ट के पिता जी के सहकर्मी के पुत्र श्री सतीश चन्द्र नैथानी ने दिनांक 26 दिसम्बर, 2006 को कोटद्वार में मुझे यह जानकारी दी कि बिष्ट के पिता जी श्री कल्याण सिंह बिष्ट अपने घर के मन्दिर में जब पूजा करते थे तो रणवीर सिंह बिष्ट पूजा स्थल पर लगे देवी–देवताओं के चित्रों को रेखांकित करते थे।[2] श्री सतीश चन्द्र नैथानी से जानकारी

1– दिनांक 25 दिसम्बर, 2006 को शोध सर्वे के दौरान श्री सुरेशानन्द ढौडियाल लैन्सडौन निवासी से साक्षात्कार में बिष्ट के बारे में उक्त जानकारी प्राप्त हुई।

2– श्री सतीश नैथानी के पिता जी बिष्ट के पिता जी के सहकर्मी थे। दिनांक 26 दिसम्बर, 2006 को कोटद्वार में साक्षात्कार में उक्त जानकारी प्राप्त हुई।

प्राप्त करते हुए शोधार्थी का चित्र संख्या : 30
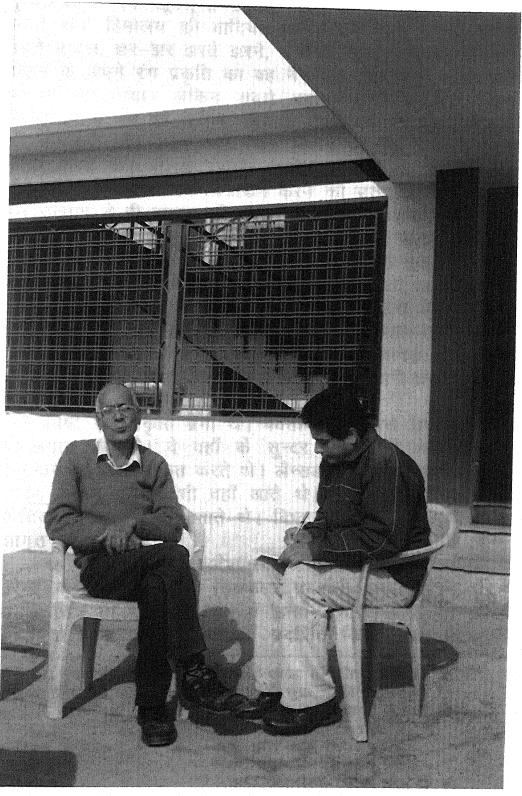
चित्र संख्या : 30

ब्रिटिश शासन काल में अंग्रेज लैण्डस्केप पेन्टर यहाँ की सुन्दर–शान्त एवं खूबसूरत प्रकृति के बीच रह कर कलाकृतियाँ बनाते थे।[1] हिमालय की वादियाँ, बर्फीली चोटियाँ, टुकड़े–टुकड़े उड़ते बादल, झर–झर झरते झरने, अनोखी सुबहें व शामें और हर मौसम के अपने रंग प्रकृति का वह नैसर्गिक वातावरण उनके बाल मन में धर गया। लेकिन सबसे ज्यादा उन्हें प्रभावित किया लैंसडाउन में रह रहे आंग्ल परिवारों ने। इनमें से कुछ परिवारों की महिलाएँ और पुरुष वहाँ स्थल विशेष पर बैठ कर चित्रांकन किया करते थे। बालक रणवीर उन्हें उत्सुकता से देखता और धीरे–धीरे उसका भी मन चित्रांकन करने को उत्साहित होने लगा। इस उत्साह ने ही बालक की कला–प्रवृत्ति को उजागर किया और स्कूल आते–जाते पहाड़ों की चट्टानें उसके लिए फलक का काम देने लगी। लैंसडाउन से जेहरीखाल, जहाँ इनका स्कूल था, का लगभग तीन किलोमीटर लम्बा रास्ता कब कट जाता, उन्हें पता ही नहीं चलता। धीरे–धीरे इस बालक को काफी लोग जानने लगे। हालात यह हो गये कि अब चित्र–रचना में इनका समय ज्यादा बीतता और पढ़ाई में कम। स्कूल के कला अध्यापक और दूसरे अध्यापकों से भी कला प्रेरणा मिलती, पर वहीं दूसरी तरफ घरवाले कहते कि यह कुछ बन नहीं सकता।[2]

बिष्ट एक प्रकृति प्रेमी थे। पर्वतीय स्थलों से उनका बचपन से लगाव रहा है। वे वहाँ के सुन्दर दृश्यों को अपनी कलम रेखांकन के द्वारा अंकित करते थे। लैन्सडौन पर्यटक स्थल होने के कारण अंग्रेज पर्यटक भी वहाँ आते थे। वे पर्यटक हिमालय की चोटियों के दृश्य चित्र बनाते थे। बिष्ट को इससे भी एक प्रेरणा जागृत हुई।

15 अगस्त 1947 को देश स्वतन्त्र हुआ तो उसके उपलक्ष में नरेन्द्र क्लब लैन्सडौन में चित्रकला प्रदर्शनी लगाई गई। उसमें उनके चित्र भी थे। एक चित्र में उन्होंने भारत माता को तिरंगे झण्डे के साथ एक बड़े पर्दे में प्रदर्शित किया। उस चित्र को

1–बंसल, सुभाष एवं बिष्ट, हीरा सिंह : राष्ट्रीय ज्वाला (त्रैमासिक) पृ0 25 (प्रकृति के सुप्रसिद्ध चितेरे चित्रकार रणवीर सिंह बिष्ट) जनवरी से मार्च, 2002

2–निगम, अखिलेश : समकालीन कला पृ0 30 (माटी की गन्ध बरकरार है चित्रकार रणवीर सिंह बिष्ट) नवम्बर, 84/मई, 85 संख्या 3–4 ललित कला अकादमी रवीन्द्र भवन नई दिल्ली–110001.

देखकर सभी बुजुर्ग एवं गणमान्य लोग सब भाव विभोर हो गये।[1]

रणवीर सिंह बिष्ट ने हाईस्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात उन्होंनें कला एवं शिल्प महाविद्यालय लखनऊ में सन् 1948 में ड्राईग टीचर्स ट्रेनिंग की प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण की तथा सन् 1950 ई0 में ड्राईग टीचर्स ट्रेनिंग की शिक्षा पूर्ण करने के पश्चात उन्होंने पॉच वर्षीय फाइन आर्ट्स डिप्लोमा हेतु प्रवेश लिया। सन् 1954 ई0 में पॉच वर्षीय फाइन आर्ट्स में डिप्लोमा उत्तीर्ण किया। सन् 1955 ई0 में उन्होंने फाइन आर्ट्स में विशेष योग्यता प्राप्त की। उन्होंने कला की शिक्षा के साथ रंगों की वॉश तकनीक को अत्यधिक महत्व दिया। उसी दौरान कला एवं शिल्प महाविद्यालय में कला के पारखियों को शिक्षित करने के लिए असित कुमार हल्दार अध्यक्ष पद पर नियुक्त हुए। उन्होंने शान्ति निकेतन से कला की शिक्षा प्राप्त की थी। वे वॉश तकनीक को प्रभावशाली बनाने लगे। इस महाविद्यालय से रंगों के संयोजन में कलाकारों को नये आयाम प्रदान हुए।

बिष्ट ने कला एवं शिल्प महाविद्यालय लखनऊ के प्रवक्ता प्रो0 ललित मोहन सेन जो वॉश तकनीक के उत्कृष्ट कलाकारों में थे, से वॉश तकनीक में लगभग पॉच वर्ष तक अथक् परिश्रम के साथ शिक्षा ली जिससे बिष्ट ने अपना नाम ऊँचा किया। बिष्ट की जल रंग चित्रण में अधिक रुचि थी। तैल रंग चित्रण में बिष्ट ने अमिट छाप छोड़ी है। तैल रंग चित्रण का प्रयोग उन्होंने अपनी चित्र श्रृंखलाओं में किया है। उन्हें जल रंग में वॉश तकनीक का कलाकार माना जाता है।

कलाकार का व्यक्तित्व उसकी कला में प्रकट होता है और व्यक्तित्व का परम्परा, परिस्थितियों, अनुभवों और आदर्शों से इतना घनिष्ठ सम्बन्ध है कि किसी भी व्यक्ति के लिए इन चीजों से अपने–आप को पूर्ण रूप से अलग कर सकना कठिन है।[2] चित्रकार रणवीर सिंह बिष्ट देश के उन समकालीन चित्रकारों में से हैं,

---

1–नेगी, कुँवर सिंह सम्पादक : गढ़ गौरव पृ0 3–4 ग्रीष्म कालीन विशेषांक 15 मई, सन् 2001 कोटद्वार, गढ़वाल

2–गैरोला, वाचस्पति : भारतीय चित्रकला पृ0 287 चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, 38, यू0ए0 जवाहरनगर, बंगलो रोड, पो0बा0 नं0 2113, दिल्ली–110007 (1990)

जिन्होंने सैरा चित्रकार (लैण्डस्केप पेन्टर) के रूप में अपना कला–जीवन प्रारम्भ किया था। अपनी लम्बी कला–यात्रा के विभिन्न पड़ावों के बावजूद आज भी वे उसी रास्ते पर बराबर आगे बढ़ते जा रहे हैं। ऐसा नहीं कि सैरों के अलावा उन्होंने अन्य विषयों पर चित्र रचना की ही न हो लेकिन सबसे ज्यादा माटी की गन्ध ने ही उन्हें अभिभूत किया है। यह गन्ध बचपन से ही उनमें ऐसी रची–बसी कि इसे झुठला देना उनके लिए असम्भव था। शायद यही वह कारण है जिसने उनकी पहचान प्रमुख रूप से सैरा चित्रकार के रूप में करायी।[1]

माहौल और जिन्दगी के स्थितियों में बिष्ट को जकड़ रखा था, तो दूसरी तरफ स्कूल के अपने नियम–कायदे थे। इसके बावजूद बिष्ट ने अपनी क्षमता को पहचाना और खासी–हिम्मत बटोर कर चित्रण की सर्वमान्य धारणाओं से हटकर काम करने की ठानी। सोचना शुरू किया तो पाया कि जो कुछ हो रहा था उसमें किसी हद तक चाक्षुष गुण तो थे, जीवन्त सक्रियता नहीं थी जो किसी भी कलात्मक अभिव्यक्ति की जान होती है। इस तरह 1962 में उनकी जोसिली खोज शुरू हुई जिसे मिश्रित माध्यम में निर्मित रूपाकार में देखा जा सकता है।[2]

बिष्ट ने जल रंग से अपने चित्रण में भावों की अभिव्यक्ति करने के लिए माध्यम बनाया। वे सदैव सृजनशीलता की ओर अग्रसर रहते थे। वे कहते थे–"केवल जल रंगों से सृजन करने से कलाकार एक सीमा में बँध जाता है अथवा चित्रकार एक सीमित दायरे में रहकर ही कलाकृति सृजित कर सकता है"। बिष्ट जल रंगों को तैल रंगों की तुलना में अधिक प्रभावशाली व आकर्षक मानते थे। तैल माध्यम में उनकी एक श्रृंखला है जिसे 'ब्लू श्रृंखला' के नाम से जाना गया। उनके सबसे अधिक पसन्ददीदा रंगों में नीला था, जिनका प्रयोग उन्होंने अधिकांशतः किया है। मानवाकृति की शरीर रचना व मुखाकृति बनाने में वे असित कुमार

1–निगम, अखिलेश : समकालीन कला पृ0 30
(माटी की गन्ध बरकरार है चित्रकार रणवीर सिंह बिष्ट) नवम्बर 84/मई, 85 संख्या 3–4
ललित कला अकादमी, नई दिल्ली–110001.

2–वर्मा, उमेश अनुवादक : समकालीन भारतीय कला श्रृंखला पृ0 3–4
(रणवीर सिंह बिष्ट)
ललित कला अकादमी रवीन्द्र भवन,
नई दिल्ली (1990)

हल्दार को अपना गुरु मानते थे; क्योंकि हल्दार जी मुखाकृति बनाने वाले कलाकारों में जाने जाते थे। हल्दार जी ने बंगाल शैली के मार्ग को प्रशस्त किया तथा उसे आगे बढ़ाया। बिष्ट ने अनेक चित्रों का संयोजन किया जिनमें 'नल पर भीड़', 'भगवान बुद्ध को भिक्षा माँगते हुए' चित्र संख्या : 31 'मन्दिर के सामने चेहरे', 'श्रम', 'जूते बनाता मोची' चित्र संख्या : 32 आदि कलाकृतियाँ प्रेरणादायक हैं।

चित्र संख्या : 31

चित्र संख्या : 32

कलाकृतियों के सृजन में उनकी इमानदारी व कर्त्तव्यनिष्ठता की झलक दिखायी देती है। उन्होंने एक युग पुरुष के रूप में उत्तराखण्ड में गढ़वाल का नाम रोशन किया तथा कला एवं शिल्प महाविद्यालय लखनऊ में प्रिंसिपल रहते हुए भी अपने कला गौरव के शीर्ष को ऊँचा किया। उन्होंने देश के समकालीन कलाकारों में अपनी पहचान बनायी।

शिक्षक एवं प्रशासक के रूप में

रणवीर सिंह बिष्ट ने कला एवं शिल्प महाविद्यालय लखनऊ से शिक्षा पूर्ण करने के उपरान्त उन्हें सूचना एवं प्रसारण विभाग लखनऊ में नौकरी मिली। यहाँ उन्होंने एक वर्ष तक सेवा दी। यह कितना विचित्र संयोग रहा कि जिस कला एवं शिल्प महाविद्यालय लखनऊ में इन्होंने अपनी कला को उभारा वहीं वे मात्र 39 वर्ष की अल्पायु में उत्तर प्रदेश राज्य लोक सेवा आयोग, इलाहाबाद से प्राचार्य पद पर चयनित कर लिये गये। जो कि तत्कालिक समय में काफी विशेष गर्व की बात थी।

फिर अभी तक इस महाविद्यालय में नियुक्त हुए समस्त प्राचार्य अंग्रेज अथवा बंगाली थे। ये उत्तर भारत के उ0प्र0 से प्राचार्य बनने वाले प्रथम व्यक्ति थे। ये 1967 से 1972 तक प्राचार्य पद पर रहे। बाद में कला एवं शिल्प महाविद्यालय को लखनऊ विश्वविद्यालय में विलय कर दिया गया। तब इन्हें ललित कला संकाय का संकायाध्यक्ष नियुक्त किया गया। एक बार ये ललित कला एकेडमी में चैयरमैन भी नियुक्त हुये। इस नैसर्गिक प्रतिभाशाली चित्रकार रणवीर सिंह बिष्ट को कई फैलोशिप, पुरुस्कार एवं देश–विदेश में चित्र प्रदर्शनी एवं घुमने का अवसर मिला। इनके चित्रों में प्रकृति के आसीन सौन्दर्य से प्रत्यक्ष रू–ब रू हुआ जा सकता है। सन् 1991 को इनको भारत सरकार ने 'पद्मश्री' पुरूस्कार से सम्मानित किया।[1] चित्र संख्या : 33

चित्र संख्या : 33

1–बंसल, सुभाष एवं बिष्ट, हीरा सिंह : राष्ट्रीय ज्वाला पृ0 25–26 जनवरी से मार्च 2002 कोटद्वार, पौड़ी गढ़वाल

तत्पश्चात सन् 1956 ई0 में बिष्ट कला एवं शिल्प महाविद्यालय लखनऊ में प्रवक्ता के पद पर नियुक्त हुए। सन् 1962 ई0 में वे कला एवं शिल्प महाविद्यालय लखनऊ में ही प्रिंसिपल के पद पर नियुक्त हुए। सन् 1972 ई0 तक वे प्रिंसिपल के पद पर कार्य करते रहे। उन्होंने 16 वर्षों तक कला के प्रचार एवं प्रसार को बड़ी कुशलतापूर्वक कलारूपी मन से आगे बढ़ाया। सन् 1972 ई0 में वे अधिष्ठाता के पद पर आसीन हुए तथा सन् 1989 में सेवानिवृत्त हुए। उनके मन में कला सृजन का अपार जोश भरा हुआ था। वे सदैव सृजन कार्य में तत्पर रहते थे। अपने चित्रों में वे कला के भाव को व्यक्त करते थे।

उनकी 'अनवान्टेड सीरीज' को देखने से ऐसा आभास होता है जैसे कि कलाकार समाज के प्रति अपनी कलाकृति के माध्यम से कर्त्तव्यों का निर्वाह कर रहा है। उनके चित्रों में गरीब, अनाथ व असहाय बच्चों को कूड़ा बीनने वाले तथा झुग्गी–झोपड़ियों में रहने वाले लोगों की दयनीय दशा को चित्रित किया है। उनके इन चित्रों में मनुष्य को जीवन जीने के लिए संघर्षों व मुसीबतों का सामना करना पड़ता है। ये सब भावों को उन्होंने बखूबी व्यक्त किया है। समाज के प्रति उन्हें विशेष लगाव था।

अपने प्रशासनिक कार्यक्षमता को वे तत्परता से करते थे। उनमें बहुत बड़ा आत्मबल था। वे जिस विषय पर विचार करते थे तो उसकी गहराई तक पहुँचने की कोशिश करते थे तथा उस भाव को अपनी कलाकृति में चित्रित करते थे। उनके अन्दर जो भाव आये उन्हें अपने माता–पिता के आशीर्वाद का प्रतिफल मानते थे। बिष्ट स्वयं उदारवादी दृष्टिकोण के थे। वे हमेशा सोचते थे कि समाज कल्याण हेतु कला के माध्यम से नवीनता की शुरूआत की जाय। सत्यता, यथार्थता एवं परिश्रम को वे महत्व देते थे।

रणवीर सिंह बिष्ट ने लखनऊ में रहकर अपनी कला यात्रा से समकालीन कला को प्रबलता प्रदान करने का अथक प्रयास किया। उन्होंने समकालीन कला को नवीनता के रूप में सृजित करने हेतु अधिक ध्यान दिया। वे सदैव रचनाशीलता को प्रमुखता से मानते थे।

शोध सर्वे में विभिन्न संग्रहालयों का भ्रमण

रणवीर सिंह बिष्ट की कलाकृतियों के संकलन हेतु मैंने विभिन्न संग्रहालयों में स्वयं जाकर शोध कार्य किया।

मैंने दि0 21 जुलाई 2006 को म्यूनिसिपल संग्रहालय हलाहाबाद जाकर शोध कार्य किया। चित्र संख्या : 34
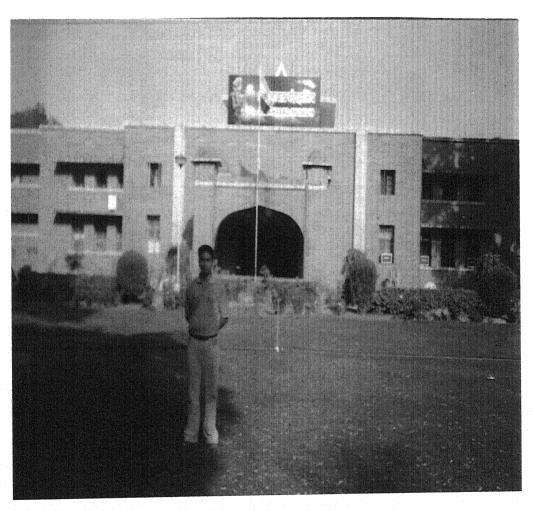
चित्र संख्या : 34
म्यूनिसिपल संग्रहालय इलाहाबाद

मैंने दि0 20 नवम्बर 2006 को राष्ट्रीय ललित कला केन्द्र लखनऊ में शोध हेतु कार्य किया। चित्र संख्या : 35
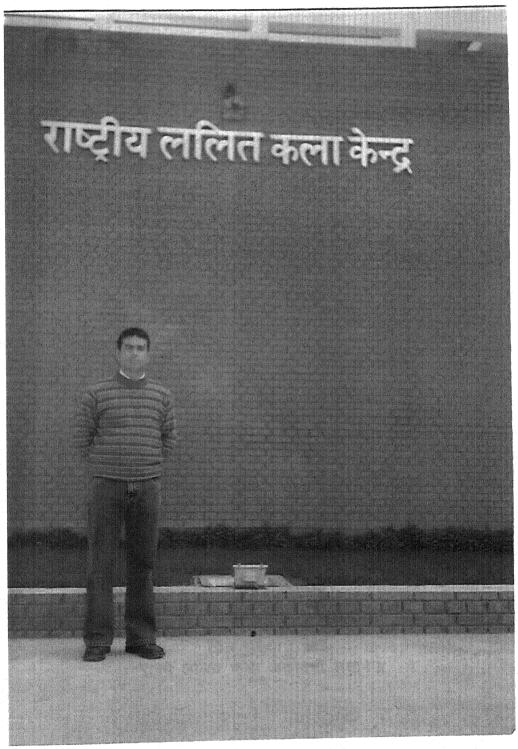
चित्र संख्या : 35
राष्ट्रीय ललित कला केन्द्र लखनऊ

दि0 21 नवम्बर 2006 को राज्य ललित कला अकादमी के पुस्तकालय में अपना शोध से सम्बधित कार्य किया।चित्रसंख्या: 36
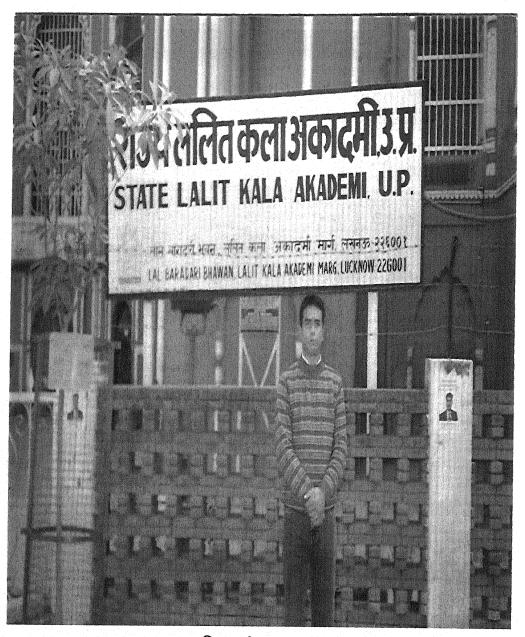
चित्र संख्या : 36
राज्य ललित कला अकादमी लखनऊ

राज्य ललित अकादमी में कार्यरत श्री स्वदेश मिश्रा ने मुझे शोध कार्य हेतु अपना सहयोग प्रदान किया। चित्र संख्या : 37

चित्र संख्या : 37

दि0 23 फरवरी 2007 को मैंने ललित कला अकादमी नई दिल्ली में अपने शोध से सम्बधित कार्य किया। चित्र संख्या : 38

चित्र संख्या : 38
ललित कला अकादमी रवीन्द्र भवन नई दिल्ली

दि0 14 फरवरी 2007 को मैंने राष्ट्रीय आधुनिक संग्रहालय जयपुर हाउस इण्डिया गेट, नई दिल्ली के पुस्तकालय में शोध कार्य किया। चित्र संख्या : 39

चित्र संख्या : 39
राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय जयपुर हाउस इण्डिया गेट, नई दिल्ली

रणवीर सिंह बिष्ट की विभिन्न उपलब्धियाँ

रणवीर सिंह बिष्ट ने अपने जीवन काल में विभिन्न तरह की उपलब्धियाँ अर्जित की हैं। उन्होंने विभिन्न स्थानों पर देश–विदेश में अपने चित्रों की प्रदर्शनियाँ आयोजित की जिससे उन्हें कई पुरस्कारों से भी सम्मानित किया गया। उनकी प्रदर्शनियाँ निम्नवत् हुईः–

एकल प्रदर्शनी (One Man Shows)

NEW DELHI

Fifteen exhibitions in various galleries including SHRIDHARANI GALLERY, 1981. AIFACS, 1972 organized by AIFACS, 1978, 1995. DHOOMIMAL GALLERY 1987, Ravindra Bhawan 1988. Restrospective organized by L.k.A DHOOMIMAL CENTRE 1991. GALLERY AURBINDO, 1990. DELHI ART GALLERY 1995. BHUVNESHWARI ASHRAM ART GALLERY 1995.

LUCKNOW

Eight including one restrospective show of one decade in which over one hundred and fifty painting were exhibited and one Exhibition "BISHT'-85 –restrospective exhibiton of painting sculptures, graphics, portteries and drawing. 1948 to 1985 organized by U.P. state L.K.A Lucknow, January 1986, shriste gallery 1985,

- Mussorie - Two
- Simla - One
- Jhansi - One
- Kanpur - One
- Landsdowne - Two
- Pauri -One

- Allahabad -One
- Mumbai – Four, Jahangir Art Gallery 1983, 1985, Taj Art Gallery 1980, Gallery OASIS, 1970
- Chandigarh-One Punjab University Chandigarh, 1985
- Newyork- One

रणवीर सिंह बिष्ट की संयुक्त प्रदर्शनियाँ निम्नवत् स्थानों पर हुईः–

संयुक्त प्रदर्शनियाँ (Group shows)

- Four painters- Organized at Jyoti Art Gallery, New Delhi- 1961.
- Four painters- Organized Silpi Chakra, New Delhi-1964
- Three Painters-Organized at N.B.G Lucknow-1965
- Sixty eight U.P Artist at Ravindra Bhawan, New Delhi
- Organized by State Lalit kala Academy, U.P- 1965
- Four Painters- Organized by Press club Lucknow-1968
- Painters on christ by eminent Indian Painters Organized by Methodist chruch in South asia.
- Trend in Indian painting (Kunika Chemould Gallery) Cottage emporiam, New Dehli, 1987
- Sixteen eminent Indian Artists, organized by Camlin Ltd. (painting done by camel colours) 1967

- Exhibition of nine contemporary Artists of India orgainzed by the student Gymkhana I.I.T. in collaboration with Gallery Chanakya, New Delhi at Kanpur, 1970

- Miniature 70 International Gallerie, 66 H.G. Krupp Franfurt West Germany, 1970

- Contemporary Indian Painting (ii), The National Museum of Modern Art, (Tokyo) and many Others big centres in Japan, 1970

- Sao paulo and many other Latin American Countries, 1971.

- Three senior Artists, Exhibitions sponsered jointly by AIFA and C.S and U.P L.K.A 1975

- Ten Contemporary Artists in Lucknow organized by the Visual Arts Society, 1975

- Seven Artists in Hotal Clarks Avadh, Lucknow organized by U.P Arts coucil, 1976. 4th Trinal International India, New Delhi 1972.

- Lucknow Group Exhibition, at Jahagir Art Gallery, Mumbai, 1987

- Lucknow Group Exhibition at State L.K.A Lucknow, 1987 3rd Asian Art show Fukuoka, Japan, 1989 participated in almost all leading exhibition of the Country Including National Academy of Art (Lalit Kala Academy) New Delhi for the last 34 Years.

बिष्ट की विभिन्न सेमिनारों (Conferences) में सहभागिता

- All India Artists Conference 1964 in Hyderabad.
- International Arts Education Conference 1969, New York (U.S.A)
- International colloquim on "Language and reality" ICPP and Philosophy Department, Lucknow University, Lucknow 1983
- International Seminar on "Influence and Interaction in Ancient Indian Art 1982-83 Lucknow University, Lucknow
- Art Education Banglore 1984 organized by Central L.K.A New Delhi
- Avadh Painting, Lucknow 1984
- 9th Conference all India Seminar Literacy house Lucknow organized by Ethographic and Folk culture society
- South Asian Religious Art Studies Second International Conference panteours of Power, State Museum, Lucknow 1984
- All India Painters camp (Nainital) organized by SLKA, 1984
- AIHDA Third annual convention Nainital 1986
- Creativity and Contemporary Art in India Aligarh, 1986
- Lectured in various Universities and Art college in U.S.A

Commission Work On Public Site

- Educated Mural in "Bharat Mein Uttar Pardesh, Exihibition in Lucknow 1973.
- Educated Mural in Medical College Lucknow 1956.
- Commissioned by council house Decoration Committee to Execute for U.P civil Secretariat the Portrait of Dr. "Basari" and Sketehes on Varanasi Ghats.
- Executed Mural in H.A.L.K Orwa, 1984.
- Executed Oil Painting Portait of Smt. "Indira Gandhi", for metroplolition Council, Old Delhi. 1987.
- Executed historical painting on National movement of 29th July. Pt. Nehru addressing a mammoth crowd in frunt U.P secretariat 1989.
- Executed Oil Painting, portait of "Mahadevi Verma" for Council House, U.P 1994.

प्रो० बिष्ट विभिन्न संस्थानों में नामित सदस्य के रूप में

- Member, Board of studies, Faculty of Visual Arts, B.H.U 1989.
- Member, Governing Body. NCZCC, Allahabad 1989.
- Member, General Council (Nominated) SLKA Lucknow 1989.
- Member Philalelic Advisory Committee Ministry of Communication, 1980.

- Member, T.V programme Committee Lucknow.
- Editor, "Unity Supreme" Lucknow Monthly.
- Member, General Council Central Lalit Kala Academy from 1984.
- Member working gruoup, 7th Five Year Plan, Department of Culture U.P State Government.
- Member, Board of faculty of fine Arts, Rajasthan university, 1984.
- Member Thinkers forum, Bharat Seva Sansthan, Moti Mahal Lucknow 1984.
- Expert Member, Udaipur University Rajasthan.
- Expert Member, Banaras Hindu university, Varanasi.
- Expert Member, Aligarh Muslim University, Aligarh.
- Expert Member, Vishwa Bharti Shantiniketan.
- Expert Member, Gorakhpur University, Gorakhpur.
- Expert Member, Garhwal University, Garhwal.
- Expert Member, Meerut Universtiy, Merrut.
- Expert Member, Agra University, Agra.
- Expert Member, Kashi Vidyapeet , Varanasi.
- Expert Member, Kurukshetra University.

- Technical advisor, U.P Higher Education Commission, Allahabad.
- Indian Commission for compiling the exhibition of Contemporary Indian Art on Festival of India, Sweden.
- Technical adviser, Madhya Pradesh service Commission, Indore.
- Technical advisor, Rajashten Public service commission, Ajmer.
- Vice-President, Awadh chapter all India housing and development association (AIHDA) 1984-85.
- Acting Chairman, U.P S.L.K.A Lucknow 1990
- Member, T.V committee to consider sponsered T.V serials, Film etc. 1991.
- Member, Chairman subject panel in painting of Government India Standing Commission for Scientific and Technical Terminology, Ministry of education.
- Member, General council of L.K.A (National) 1968-One Term.
- Member, U.P Museum advisary Board, 1968.
- Member, Board of studies on fine Art and Music, Aligarh Muslim University, 1969.
- Representative of the L.K.A New Delhi of all India Board of technical studies 1969.
- Member, Research Degree committee Meerut University.

- University new Building Decoration committee Meerut.

- Member, High Powar committee of U.P Education Department for award of Assistance Under Government of India scheme to distinguished persons who have made contributions in Art and letters but are now in indigent circumstances to dependents or such writers and Artists left unprovided for 1969.

- Member, Text book committee of U.P Education Deapartment for making preliminary selection of publishers and painters for their painting.

- Member, pilot pottery project advisory committee, planning research and action institute, Lucknow 1971.

- Elected Vice-Chairman, U.P,S.L.K.A. Lucknow 1974 and 1983.

- Appointed Dean faculty of Fine Arts University of Lucknow 1973.

- Member, Executive council, Lucknow University 1985.

- Member, 4th committee Trinale of India 1977.

- Elected Member, purchase committee of International section of 4th Trinale India 1977.

- Elected Member, Purchase committee of International and National sections and Kala Mela, 4th Trinale India 1991.

- Member sub Committee (culture) India Naitional commission for co-operation with Unesco 1981.

- Member, Chandigarh Museum and Art Gallery advisory Committee.

- Member, Advisory Committee, Patna University for re-organising the College of Arts and crafts, Patna 1982.

- Member, Committee of Regional Tourism Department of creating new designs and molifs according to the need and liking of tourists-1983.

- Member, Board of studies in Drawing and Painting, Kumaun University Nainital 1981.

- Member, Board of studies Kanpur University Kanpur.

- Expert Member, Board of studies in Drawing and Painting Garhwal University, Srinagar (Garhwal)

- Vice-President, Ethographic and folk culture society. India 1987.

- Member, of Governing council AIHDA 1986.

- Member, of Academic council, Lucknow University since 1984.

- Member, Board of faculty of Arts, Udaipur University-Rajasthan 1984.

- Member, Board of faculty of Arts Gorakhpur University U.P.

- Member, Board of studies Agra University.

- Chairman, craft council U.P 1995.

रणवीर सिंह बिष्ट कई प्रदर्शनियों एवं सेमिनारों में अपने योगदान के साथ–साथ विभिन्न पुरूस्कारों से भी सम्मानित किये गये जो निम्नवत् हैं:–

Prizes (पुरूस्कार)

- National Award 1965 (City scape N.2)
- Unesco fellowship for visual Art 1967-68
- Chief Minister Gold medal 1956 (for the best water colour in U.P Artist Annual Exhibition 1956).
- Fellow of the U.P State Lalit Kala Academy 1984.
- Fellow of National Lalit Kala Academy New Delhi 1988.
- पद्मश्री 1991.
- कला रत्न पुरस्कार 1991 (By all India fine Arts and crafts Society 1991)
- कला सेवा सम्मान (स्वतन्त्रता की पचासवीं वर्षगाँठ पर, 1998)

विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित बिष्ट के आलेखों का संग्रह देखने को मिलता है, जिसमें उनके कलाकार जीवन की अभिव्यक्ति का उल्लेख वर्णित है, जो निम्नवत् हैं:–

पत्रिका	–	स्थान
नेशनल हेराल्ड	–	नई दिल्ली, लखनऊ
टाईम्स ऑफ इण्डिया	–	लखनऊ

यूनिटी सुप्रीम	–	लखनऊ
कला त्रैमासिक	–	आर्ट मैगजीन एस0 टी0 के0 एस0, लखनऊ
रिएक्शन एण्ड रिफ्लेक्शन	–	नई दिल्ली, 1999
रूप लेखा	–	ए0 आई0 एफ0 सी0 एस0 नई दिल्ली
दि पॉयनियर	–	लखनऊ
हिन्दुस्तान टाईम्स	–	नई दिल्ली

उक्त के अतिरिक्त विभिन्न पत्रिकाओं में बिष्ट के आलेख प्रकाशित हुए जिनमें–आर्ट न्यूज, धर्मयुग, रिद्म, कथाक्रम, दिनमान, लिंक, साप्ताहिक हिन्दुस्तान, आज कल, डिलाइट टूगेदर यू0 एस0 ए0 मिनिएचर इत्यादि 79 पत्रिकाएँ आपके विशेष सहयोग से प्रकाशित हुईं।

बिष्ट की कलाकृतियाँ भारत के विभिन्न संग्रहालयों में स्थित हैं:–

- इलाहाबाद संग्रहालय – इलाहाबाद
- वी0 आई0 सी0 क्लब – कानपुर
- जुहारी देवी डिग्री कॉलेज – कानपुर
- सर्किट हाउस – वाराणसी
- गवर्नमेण्ट ऑफ इण्डिया – नई दिल्ली
- शिक्षा मंत्रालय – नई दिल्ली

- राष्ट्रीय ललित कला अकादमी– नई दिल्ली
- कला महाविद्यालय – नई दिल्ली
- साहित्य कला परिषद – नई दिल्ली
- ऑल इण्डिया फाइन आर्ट एण्ड क्राफ्ट सोसाइटी – नई दिल्ली
- नेशनल गैलरी ऑफ मॉडर्न आर्ट – नई दिल्ली
- होटल ताज महल – नई दिल्ली
- इन्दिरा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा – नई दिल्ली
- पंजाब विश्वविद्यालय – चण्डीगढ़
- चण्डीगढ़ संग्रहालय – चण्डीगढ़
- राज्य ललित कला अकादमी – लखनऊ
- किंग जार्ज मेडिकल कॉलेज – लखनऊ
- राज्य संग्रहालय – लखनऊ
- लखनऊ विश्वविद्यालय – लखनऊ
- सूचना विभाग उ0प्र0 – लखनऊ
- गवर्नमेन्ट हाउस उ0 प्र0 – लखनऊ

- असेम्बली हॉल, उत्तर प्रदेश सचिवालय – लखनऊ
- उद्योग विभाग उ0प्र0 – लखनऊ
- शिक्षा विभाग उ0प्र0 – लखनऊ
- विधान सभा भवन उ0प्र0 – लखनऊ

विदेशी संग्रहालयों में रणवीर सिंह बिष्ट की कलाकृतियाँ स्थित हैं, जो निम्नवत् हैं–

- Gallery of henry Foundation- St. Paul U.S.A
- Dr. Harolod Kelman - U.S.A
- Donald E. Jaybson - U.S.A
- Czehoslavakia - Czehoslavakia
- Ulieval Hospital - Oslo, Narway
- Museum of Eastern culture - Mascow, U.S.S.R
- Russian Indologist - U.S.S.R

and many other private and public collection throughout the world.

यात्रा (Travel)

बिष्ट ने अनेक देशों में अपनी यात्रा की तथा कला के क्षेत्र में विभिन्न कार्य किये–

- Travelled extensively in India, U.S.A., London, Paris and worked in New York.

अध्याय तीन

रणवीर सिंह बिष्ट की कला यात्रा–कला साधना के विविध सोपान

अध्याय तीन

रणवीर सिंह बिष्ट की कला यात्रा–कला साधना के विभिन्न सोपान

रणवीर सिंह बिष्ट ने अपने जीवन में अधिकांश चित्रों का संग्रह किया, उनमें अध्यात्म व सौन्दर्य से जुड़े उनके विचारों की झलक मिलती है। उनके विचारों में इस तरह की उत्त्प्रेरणा ऊँचे शिखर के गगनचुम्बी हिमालय से रही है जो उनके बाल्यकाल में दिखायी दी। प्रकृति के मनोरम वातावरण जिनमें वृक्षों के झुरमुट, झरने, नदियाँ–इत्यादि ने उनके मन को चित्रों के सृजन के लिए सदैव प्रेरित किया। प्रातः काल की शीतलता से उत्तराखण्ड की प्राकृतिक सुन्दरता ने उन्हें अलौकिकता प्रदान की। उनके चित्रों में नीले रंगों का प्रयोग हुआ है; क्योंकि वे नीले रंग को अध्यात्म का स्वरूप मानते थे। अपने जीवन में वे कला सृजन में लीन रहे। उन्होंने कला की साधना से अपने को एक उपासक के रूप में साबित किया। वे यह भी मानते थे कि सौन्दर्य में ईश्वर समाहित रहता है तथा कला का सृजन सौन्दर्य से ही होता है।

सन् 1948 ई0 में रणवीर सिंह बिष्ट ने हाईस्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण की। कला के प्रति लगाव होने के कारण वे कला एवं शिल्प महाविद्यालय लखनऊ चले गये, जहाँ उन्होंने प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण की। उन्होंने द्विवर्षीय आर्ट मास्टर ट्रेनिंग का कोर्स उत्तीर्ण किया। उसी दौरान सुविख्यात चित्रकार सुधीर खास्तगीर कला एवं शिल्प महाविद्यालय लखनऊ के प्रिंसिपल नियुक्त हुए। उनके मार्गदर्शन एवं प्रेरणा लेकर बिष्ट ने फाइन आर्ट में चार वर्षीय डिप्लोमा किया। यहाँ उनके मन में कला के प्रति सृजनात्मक विचार उत्पन्न हुए। कला की गहराई को उन्होंने समझा। अपनी कला शिक्षा लखनऊ से पूर्ण करने के बाद उन्होंने ललित कला अकादमी में सन् 1959 में अपनी प्रथम राष्ट्रीय कला प्रदर्शनी का आयोजन किया। उनके इस प्रदर्शनी से कला प्रचलन का कार्य विभिन्न कला धाराओं पर पड़ने लगा तथा जन मानस में कला की वास्तविकता का भाव जागृत होने लगा। खास्तगीर की प्रेरणा ने उनके मन में कला सृजन के विचार तथा नये ढंग से कार्य करने की प्रेरणा जागी तथा बिष्ट प्रवक्ता के रूप में नियुक्त हो गये।

बाल्यकाल से ही बिष्ट के मन में अनेक प्रकार के भाव उद्वेलित हुआ करते थे तथा वे एक ऐसी वास्तविकता में खो जाते थे कि मानो वे किसी ऊँचाई को स्पर्श करने का प्रयास कर रहे हों। उनका जन्म पर्वतीय अँचल में हुआ, उनके गाँव से हिमालय की पर्वत चोटियाँ दिखायी देती थीं इससे उनके मन में कला के प्रति सृजन की उत्सुकता जागी।

सन् 1948 ई0 में लैण्ड्सडौन में उन्होंने भारत माता का तिरंगे झण्डे के साथ एक चित्र प्रदर्शित किया, जिसे देखकर वहाँ के लोग स्तब्ध रह गये।[1]

उनकी कला यात्रा प्रकृति के मनोरम वातावरण में हुई। मन को मोहित करने वाले चित्रों में केदारनाथ के पर्वतीय अँचल प्रेरणा के श्रोत हैं। हिमालय की ऊँची–ऊँची चोटियों को बिष्ट ने बखूबी ढंग से चित्रित किया है। बिष्ट ने जल रंगों एवं तैल रंगों से समकालीन कलाकार फैंक वेसली जो आस्ट्रेलिया में रहते हैं, का प्रभाव इन पर पड़ा।[2] लैण्ड्सडौन से जयहरीखाल तक का स्कूली मार्ग था। इनका मन पढ़ाई में कम लगता था। ये हमेशा सामने की नीली पहाड़ियों व हिमालय की छटा को निहारते रहते थे जिससे इनका मन कला की ओर बढ़ने लगा। कला का महत्व ये समझने लगे। कला शिक्षको से भी इन्हें मार्गदर्शन मिलता था।

बालक रणवीर सिंह बिष्ट ने अपने मन में एक दृढ़ संकल्प कर लिया कि वे एक अच्छे कलाकार बनकर समाज की बुराईयों को समाप्त कर सत्य के मार्ग को उजागर करेंगे। उनके इस आत्मबल ने उन्हें एक लक्ष्य प्रदान किया, साथ ही उनमें कला सृजन के प्रति ईश्वरीय शक्ति भी प्रदान की। अपने को कलाकार के रूप में स्थापित करने में उन्होंने विभिन्न तरह के उतार–चढ़ाव देखे। कई प्रकार के संघर्षमय वातावरण में उन्होंने सफलता अर्जित की। कलाकार के लिए अनुकूल वातावरण आवश्यक है। अपने कला जीवन में बिष्ट ने अथक परिश्रम किया। उन्होंने कला को अपनी उपासना, पूजा एवं आराधना माना। प्रातः कला महाविद्यालय जाना तथा देर रात तक घर पहुँचना उनकी जीवन–चर्या थी। उन्होंने अपनी चित्रकारी के माध्यम से रंगों के विभिन्न संयोजनों को

1–बंसल, सुभाष एवं बिष्ट, हीरा सिंह : राष्ट्रीय ज्वाला पृ0 25 (जनवरी से मार्च 2002) कोटद्वार, गढ़वाल

2–फैंक वेसली जो आस्ट्रेलिया में रहते हैं।

प्रखरता से स्वरूप दिया। उनके रंग मिश्रण आकर्षक होते थे। उनके जल रंग चित्रण सुन्दरतम् एवं मन को मोह देने वाले होते थे। सुन्दर चमचमाती 'काली घटा एवं रात्रि' तथा 'बाजार के दृश्य' को काफी आकर्षक बनाया। चित्र संख्या : 40

चित्र संख्या : 40

बिष्ट की कला–यात्रा का विवरण दिया गया है उससे यह आभास होता है कि आरम्भ से अन्त तक मानो सारी प्रक्रिया ही उलट गयी हो, लेकिन इन सब के बावजूद उनमें कोई न कोई ऐसा तत्व अवश्य है जो उन्हें बाँधे रखता है। सरल शब्दों में बिष्ट एक भूखण्ड चित्रकार हैं, वे रंगों की विविधता और उनके पारलौकिक गुण से वाकिफ हैं, वे मनुष्य जाति की चिंताओं में संलग्न हैं–विशेष रूप से उनके संघर्ष में। उनके विकार, उनकी विकृतियों को मिलाकर, एक गहन तथा सजीव सारभौमिक शक्ति का हिस्सा बन जाते हैं। अपने लगभग पच्चीस वर्षों के कलात्मक जीवन में बिष्ट ने काफी सीमा तक इस बात में सफलता प्राप्त की है कि यथा सम्भव एक अपनी ही दुनिया के अन्तर्गत वाह्य बहुमुखी यथार्थ को सुनियोजित करें–एक ऐसी दुनियाँ जो हर कलाकार अपने लिए बनाता है और जो पलायन का नहीं वरन् उसके दृश्यावलोकन का हिस्सा होती है। विभिन्न प्रयोजनों के माध्यम से उन्होंने वृहत अन्तरिक्ष को ऐसे रहस्यों के माध्यम से

अभिव्यक्त किया है कि वे ऐसे आकारों और बिम्बों में अभिव्यक्त हों जिसको केवल रंगों के द्वारा ही किया जा सकता है।[1]

अपने कला जीवन में वे लखनऊ के हजरतगंज के विभिन्न होटलों में अपने मित्रों के साथ बैठकर कला के बारे में विचार विमर्श किया करते थे। यहाँ वे कई नवयुवकों एवं बुद्धिजीवियों को अपने विचारों से भी अवगत कराते थे। इस वातावरण से प्रेरित होकर उन्होंने **See Scape Painting** बनायी जिसे उन्होंने 'नाईट श्रृंखला' नाम दिया। यह उनकी सन् 1960 के लगभग की रचना है। उनकी यह श्रृंखला यूरोपीय चित्रकार देगा के चित्रों से मेल खाती है। इस तरह प्रकृति का अनुकरण करने में उनकी सक्षमता विभिन्न तरह से दिखायी देती है। उन्होंने स्मृति चित्रण में भी सृजन किया। उनका मानना था कि सौन्दर्य को स्मृति पटल पर भी आभास किया जा सकता है। वे यह भी मानते थे कि चित्रकार किसी वस्तु के चित्रण में अपनी कल्पना को सौन्दर्य के माध्यम से उजागर करके चित्रित करना होता है। कलाकृति में कलात्मक गुणों का समावेश ही महत्वपूर्ण है। कलात्मक गुणों को अपनी प्रतिभा के माध्यम से व्यक्त करना उनकी विशेषता थी। सन् 1954–56 में उन्होंने आकृति मूलक चित्रों से सृजन कार्य किया। सन् 1956 में एक मन्दिर का चित्रण किया। इस चित्र में एक महिला को प्रसाद वितरण करते हुए चित्रित किया गया है, साथ में उसकी दासियाँ टोकरी लिये हुए खड़ी हैं। इस महिला को उच्च घराने की दिखाया है। भिखारियों की भीड़ ने उक्त महिला को चारों ओर से घेरा है, वे सभी भिक्षा माँगने के लिए आग्रह कर रहे हैं। इस चित्र में रेखांकन का अद्भुत स्वरूप, रंगों का संयोजन भाव प्रधान है। बिष्ट ने अपने चित्रों में आकृतियों की मुखाकृति को उजागर करने का अथक प्रयास किया है। बिष्ट ने अपने स्टूडियो में ही कला को धरातल माना तथा प्रकृति के स्वरूप को अपना सृजन कार्य मानकर रचना की। उन्होंने तैल माध्यम से अपने चित्रों को आकर्षक व पारदर्शक बनाकर ख्याति अर्जित की।

1–स्टेट्समैन 25 सितम्बर 1977 : (बिष्ट : एक कला घटना) से संकलित
कला त्रैमासिक अंक 22, 1985
कला राज्य ललित कला अकादमी, लखनऊ

आर0 एस0 बिष्ट की लैण्डस्केप कला आधुनिकता के नये प्रतिमान स्थापित करती है। उसमें रंग अपनी निजी पहचान को वातावरण की जरूरत के साथ बहते चले गये हैं और इस लिहाज से उन्होंने बंगाल की वॉश पद्धति को प्रगतिशील एवं प्रयोगशील धरातल पर अपने दृश्य चित्रों में समेटने की कोशिश की है। बिष्ट साहब दृश्य चित्रण के एक बेजोड़ कलाकार थे और उन्होंने इस दिशा में भारत की आधुनिक दृश्य चित्रण विधा में एक नयी पहचान के साथ प्रस्तुत किया। इन चित्रों में भारतीय जीवन की अलग–अलग पहर प्रकाशित हुयी है परन्तु यहाँ भी एक साइनटिस्ट की तरह रंग, मैटीरियल व अपने कम्पोजीशन्स में जद्दोजहद करते दिखाई पड़ते हैं। दरअसल उनके मन में उपजी प्रयोगशीलता हर बार कुछ न कुछ नया करने के लिये मजबूर करती रहती है।[1]

सन् 1967–68 ई0 में अपनी 'नगर दृश्य' श्रृंखला की रचना के समय बिष्ट को अमेरिका व फ्रांस देशों की यात्रा करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। यह यात्रा उनके लिए अति महत्वपूर्ण रही; क्योंकि इस श्रृंखला का कार्य करने के पश्चात् उनके चित्रों की तकनीक में नवीन तरह के बदलाव आने लगे। उनके चित्रों में रंग–बिरंगे, क्षैतिजवत् प्रट्टियाँ, छल्लेदार अलंकरणों के स्वरूप दिखायी देने लगे। उनके इस तरह के चित्रों में उत्तर प्रभाववादी चित्रकार पॉल सेजॉ[2]के निकट प्रतीत होते हैं।

सन् 1962 ई0 में बिष्ट ने अपनी कला यात्रा में एक और श्रृंखला पर कार्य किया जिसका शीर्षक 'पीपुल विदाउट ब्रेन एण्ड कांशस'' था। इस शीर्षक से उनकी विदेश यात्रा का अनुभव स्पष्टतः आभास होता है। उनकी रचना में वे जन मानस के समस्त समुदाय को एक साथ चित्रित करने का प्रयास करते थे। बिष्ट ने प्राकृतिक एवं आध्यात्मिक विषयों को लेकर चित्र रचना की जिसमें उन्होंने सफलता की सीढ़ी पार की।

1–काजी, शब्बीर हसन : कलावार्ता पृ0 86
(आर0 एस0 बिष्ट–एक बुलन्द दृश्य–चित्रकार)
संयुक्तांक 109–110 नवम्बर 2005
स्वर्ण जयन्ती वर्ष 2005–2006
उस्ताद अल्लाउद्दीन खाँ संगीत एवं कला
अकादमी रवीन्द्रनाथ ठाकुर मार्ग,
भोपाल–462003

2–पॉल सेजॉ उत्तर प्रभाववादी चित्रकार हैं।

अपने प्रिंसिपल के कार्यकाल में भी उन्होंने चित्र रचना में निरन्तरता बनाये रखी। सन् 1975–76 ई0 में उनके प्रसिद्ध चित्र श्रृंखला में 'नारी और श्वान' माना गया। इसमें उन्होंने नारी को श्वान के माध्यम से समाज की कुंठित वासनाओं को समाप्त करने के लिए एक सीख दी। उनके चित्रों में आध्यात्मवाद व सौन्दर्य का भी वर्णन मिलता है। बिष्ट ने समाज को अपनी चित्रकारी के माध्यम से सुन्दर समाज तथा स्वस्थ समाज के रूप में संदेश देने का अथक प्रयास किया। चित्र रचना में उनका मन हमेशा उद्वेलित रहता था। उनमें कार्य करने की अपार क्षमता थी। वे अपने चित्र श्रृंखलाओं के द्वारा एक कुशल चित्रकार के रूप में जाने गये। अच्छे मित्रों का साथ उन्हें हमेशा मिला इसलिए हर वक्त उनके मन में सृजन का भाव उभर कर स्वरूप लेता रहा। अपनी कला यात्रा में उन्होंने विचारों की कल्पना को योजनाबद्ध ढंग से अपनी जीवन शैली में उतारा। उनमें अपार लगनशीलता थी, जिससे उन्हें कार्य की प्रतिबद्धता का प्रतीक माना गया है। उनकी कृतियों में भावातिरेकी तीव्रता है। आकारों के परिमाण और तनावों का संयोजन, इंगितों–संकेतों को अर्थ देना या फिर लय का संरचना–निर्धारण जैसे चित्रण मूल्यों को हासिल करने के लिए बिष्ट यथार्थ के साथ–साथ अमूर्तन का सहारा लेते हैं। कलाकर्म के प्रति पूर्ण आस्था का परिणाम है कि उनकी कृतियों में संगति नजर आती है। जिस दौर में तमाम कला आत्मपरक, स्वच्छंदतावादी और अभिव्यंजनावादी बनकर रह गयी है, बिष्ट अपने कुछ गिने–चुने समकालीन चित्रकारों की तरह कला की मूल प्रकृति से सम्बन्धित आकारिक सौन्दर्य और मानवीय अर्थवत्ता के सन्दर्भ में कुछ शाश्वत सत्य पुनः प्रतिपादित करने में सफल हुए हैं।[1]

1–वर्मा, उमेश अनुवादक : समकालीन भारतीय कला श्रृंखला पृ0 6 (रणवीर सिंह बिष्ट) ललित कला अकादमी, रवीन्द्र भवन नई दिल्ली–110001 (1990)

According to S.P Verma:– Professor Bisht is a man of strong convictions propgation of art-consciousness and art-education from the most important part of his mission. He foresees a grand wedding of painting and performing arts in near future on the national level with Lucknow as the venue.[1]

बिष्ट का कला संसार बहुत व्यापक है और रंगों का अद्भुत प्रयोग एवं उपयोग भी। एक दौर में वे नीले रंग की चित्र श्रृंखला के लिए खूब चर्चित हुए, लेकिन बाकी रंगों की रचनाएँ भी किसी मायने में कम नहीं हैं। उनकी शुरूआती ख्याति लैण्डस्केप कलाकार के रूप में हुई और आज तक उनकी यही मुख्य छवि चली आई है, लेकिन यह उनके साथ पूरा न्याय नहीं है। सामाजिक चेतना के सजग कलाकार के रूप में उन्होंने कम काम नहीं किया। बाद के दौर की तमाम पेंटिग्स इसकी गवाह हैं। बाढ़ और भूस्खलन की त्रासदी पर उनके चित्र शीश विहीन मानवों की उनकी श्रृंखला, अमूर्तन वाले ढेरों चित्र, 1994 के रामपुर तिराह काण्ड के बाद तैयार 'लोकतन्त्र की हत्या' श्रृंखला और उनके जीवन के अन्तिम समय की 'अवांछित (अनवांटेड) श्रृंखला के चित्र बिष्ट को गहरे सामाजिक सरोकारों वाला प्रतिबद्ध कलाकार साबित करते हैं।[2]

उनकी रचनाशीलता में उनके स्वतन्त्र भावों को प्रतिबद्धता का प्रतीक माना गया है। उनकी कलाकृतियों में अमूर्त–संयोजन होने लगा। उनके चित्रों में ग्रामीण सैरा–1 एवं ग्रामीण सैरा–2 जैसी रचनाएँ हैं। इन चित्रों में उन्होंने स्लेटी, हरे एवं धूमिल सफेद रंगों का मिश्रण किया है। विरोधी रंगों में उन्होंने मोटे रंगों को गहरी रेखाओं से चित्रित किया है। उनके चित्रों में रंगों की तरलता तथा रंगों के संतुलन दिखायी देते है। उनके शहरी सैरा–3 चित्र से उन्हें सन् 1965में राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उनके कार्य करने का मुख्य माध्यम तैल रंग रहा है। बिष्ट के प्रमुख चित्रों में 'निष्क्रमण' चित्र संख्या : 41एवं 'बाढ़ के दृश्य' चित्र संख्या : 42

1–Verma, S.P : Reactions & Reflections P.7
(R.S.Bisht and his "Realism" in Art)
All India Fine Arts & Crafts Society,New Delhi (1999)

2–जोशी, नवीन : लैन्सडौन (समाज–संस्कृति और इतिहास) पृ0 239
(पद्मश्री रणवीर सिंह बिष्ट)
लैन्सडौन पुस्तकालय समिति बिनसर पब्लिशिंग कम्पनी
58/1,घोसी गली (पलटन बाजार)
देहरादून (उत्तराखण्ड) (2004)

इत्यादि रहे हैं। उन्होंने विषयगत चित्रों को विशद ढंग से चित्रित किया है। उनमें बौद्धिक प्रतिक्रिया उनके कलाकार होने का परिचायक है। मानवीय संवेदनाओं से परिपूर्ण भावों की झलक उनके चित्रों में देखने को मिलती है। व्यंग्य एवं कटाक्ष के प्रतीक चित्र भी उन्होंने बनाये हैं।

चित्र संख्या : 41

चित्र संख्या : 42

बिष्ट की एक प्रमुख विशेषता यह रही है कि वे समाज को राजनीति से सम्बन्धित मानते थे। इस सच्चाई को उन्होंने अपने चित्रों में उजागर किया है। चित्रों में कल्पना को वे वास्तविकता का केन्द्र मानते थे। उन्होंने अपने जीवन काल में वास्तविकता को वैज्ञानिक व भौतिकवादी दृष्टि से मानवीय संवदेना का श्रोत माना है। वे सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों को क्रमशः व्यक्त करने की कोशिश करते थे। नारी के अद्भुत सौन्दर्य को उसकी शरीर रचना तथा उसके मन के हाव–भाव को चित्रित किया है। उनके इस तरह की अभिव्यक्ति से सौन्दर्य में यथार्थता को साकार करता है।

उनको यही आन्तरिक आग्रह वास्तव में उनके लहजे और उनके अन्दाज को निर्धारित करती है। एक लेखक तथा अभिनीत कलाकार के अन्दाज को समझना आसान होता है। लेखक की कृति पढ़िये, किसी की संगीत संरचना को सुनिये, किसी नर्तक को नृत्य करते देखिये या इसी प्रकार किसी अभिनेता को अभिनय करते हुए देखिये, यद्यपि इस सारी प्रक्रिया का पूर्वाभास आसान नहीं है; क्योंकि वह एक जटिल प्रक्रिया है फिर भी किसी व्यक्ति में आन्तरिक बोध हो तो उसके लिए उसे समझ सकना आसान होता है–हालांकि इन क्षेत्रों में भी कभी–कभी आश्चर्य चकित करने वाला अनुभव लोगों को होता है। एक दृश्य कलाकार विशेष रूप से जिसका चरित्र ऐसा है जिसको हम रणवीर सिंह बिष्ट से रेखांकित करते हैं।[1]

रणवीर सिंह बिष्ट की कला यात्रा में देशाटन की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। वैसे किसी भी कलाकार की कला यात्रा में देशाटन का प्रमुख स्वरूप माना जाता है। कला की साधना में बिष्ट ने कला रचना में एक विशिष्ट शक्ति को आभास किया है। मनुष्य का भी निराकार–शक्ति के प्रति एक श्रद्धा का भाव जागृत होता है। अपने देश–विदेश के भ्रमण में उन्होंने नवीनतम रूपाकारों को अपनी कला दृष्टि से आभास किया। अपने चित्र संयोजन में उन्हें पर्वतीय चट्टानों एवं सागर के तट पर रेत के विस्तार को मानवीय रूप में अनुभूति हुई। उनके चित्रों में सन्तुलन एवं छाया–प्रकाश को योजनाबद्ध ढंग से संयोजित किया है। उनके चित्रों में रंगों के समायोजन स्वयं को अभिभूत करती है। उनके

1–उत्तर प्रदेश अकादमी प्रदर्शनी कैटा–लौग 1985(कलाकार बिष्ट : एक अन्दाज) से संकलित कला–त्रैमासिक अंक 22 1985 राज्यललित कला अकादमी लखनऊ

चित्रों को देखकर ऐसा लगता है कि उन्होंने अधिकांशतः चित्रकारों की शैलियों में कई गुण ग्रहण किये, इसीलिए उनके चित्रों में विभिन्न प्रकार के प्रभाव दिखायी देते हैं। यह प्रभाव उनके गहन चिंतन एवं मनन पर निर्भर करता है। उनकी कलाकृतियों में प्रमुख विशेषता भावों की तीव्रता रही है। उनके चित्रों में आकारों के परिमाप में संयोजनों को संरचना के यथार्थ भाव में उत्पन्न किया है। उन्होंने समकालीन चित्रकारों की भाँति प्रकृति के प्रति अपना आन्तरिक लगाव सौन्दर्य के सन्दर्भ में प्रतिपादित किया है। दृश्य चित्रण में आकृतियों को संयोजित करके सहानुभूति के भाव से व्यक्त होती है कलाकार के चिन्तन से ही एक शैलीबद्ध अभिव्यक्ति होती है। उनके विभिन्न माध्यमों में किये गये कार्यों में लिनोकट चित्र, लिथोग्राफ चित्र, सिरेमिक कृतियाँ एवं मूर्तिशिल्प हैं। ये सब सृजन प्रक्रियाएँ हैं। उन्होंने अपनी कला यात्रा में जो भी मूर्ति–शिल्प निर्मित किये उनमें मिट्टी एवं पत्थर के अतिरिक्त विभिन्न धातुओं के टुकड़ों को तोड़कर एक नवीनतम आकारों को आकर्षक बनाया।

सन् 1967 ई0 में बिष्ट को यूनेस्को में कला का उत्कृष्ट अध्ययन करने के लिए भी फैलोशिप प्रदान हुई। उन्हें भारत व यूनेस्को की कला शैलियों का तुलनात्मक अध्ययन का सुअवसर मिला। उन्होंने इस कार्य को धैर्य एवं निष्ठा से पूर्ण किया तथा कला के क्षेत्र में अपनी राष्ट्रवादिता की छाप भी छोड़ी अमेरिका में प्रवास अवधि में उन्होंने रावर्ट मदरवेल के साथ घनिष्ठतापूर्वक रहकर कार्य किया। तत्पश्चात् वे भारत लौट कर तैल माध्यम से कार्य करने लगे। उनके चित्रों को देखकर ऐसा आभास हुआ कि उनके चित्र आकर्षक होने लगे। उन्हें सृजनात्मक सोच का कलाकार माना जाता था। वे समस्त विषयों पर सृजन कार्य करते थे। इन्हीं प्रयासों से वे काफी लोकप्रिय हुए। आज भी उनकी प्रशंसा होती रहती है। सन् 2006 में लखनऊ महोत्सव में उनके चित्रों की एक प्रदर्शनी लगी जिसे दर्शकों ने सराहा। वे आज भी कला जगत में जीवित हैं, क्योंकि उन्होंने कलाकृतियों के माध्यम से स्वयं को जीवित रखा है। उन्होंने ब्रह्माण्ड की ऊर्जा एवं धरती के मध्य सौन्दर्य के सम्बन्ध को चित्रित किया। नीले रंग एवं हरे रंग की विभिन्न रंगतों (तानों) को इस तरह लगाया मानो वे प्रकृति के शान्तमय व गाम्भीर्य को उत्पन्न कर रही हो।

बिष्ट ने अपने चित्रों की एकल प्रदर्शनियाँ दिल्ली, मुम्बई, लखनऊ एवं न्यूयार्क में लगायी। सन् 1985 तथा 1986 में उन्होंने दो अन्य प्रदर्शनियाँ लगायी। सन् 1985 में राज्य ललित कला अकादमी उत्तर प्रदेश में उन्हें रत्न सदस्य से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर उनके 30 वर्षों की सृजनात्मक कृतियाँ शामिल थीं। दूसरी महत्वपूर्ण प्रदर्शनी सन् 1986 में मुम्बई में आयोजित हुई। यह प्रदर्शनी अति महत्वपूर्ण एवं समृद्ध थी। इन चित्रों से बिष्ट के व्यक्तित्व की भावनात्मक मनोदशाएँ दार्शनिक रूप में स्पष्ट होती हैं। उन्होंने भावनाओं के माध्यम से भली–भाँति आभास कर लिया था कि रंगीय संयोजन से कला के ऊँचे स्तर को कार्य के माध्यम से समाज को व्यक्त किया जा सकता है। उनके चित्रों में सूक्ष्मतम अभिव्यंजना कला की अन्तरात्मा है, जिसके द्वारा उन्होंने वाह्य जगत् को भी आभास किया।

बिष्ट के मनन एवं चिन्तन से उपजी "उल्का शृंखला" है, जो दर्शकों को भी उत्साह से अभिभूत कराती है। इस चित्र शृंखला में नीले रंग का प्रयोग उत्कृष्ट, दिव्य एवं सांसारिक–बिम्ब को एक बन्धन में बाँधे हुए है। इस शृंखला में रंगों का संयोजन, संयोजन की गरिमा तथा सांसारिक तत्वों में अदृश्य ऊर्जा का चाक्षुषीय प्रस्फुटन है। बिष्ट के शब्दों में:–"मेरे चित्रों में पिछले कई सालों से लोकोत्तर और रंग के धब्बों जैसे दूसरे उग्र तत्व धीरे–धीरे न्यूनतम चाक्षुष रूपाकारों में तब्दील होते जा रहे हैं।"[1]

बिष्ट अन्तर्दृष्टि से भावानात्मक रूप में रंगों को संयोजित करके नीले रंग से कैनवास पर फैलाकर पर्वतीय ढलानों को चित्रित करके दर्शकों की भावनाओं पर लयात्मक के साथ संयोजित करते थे। वास्तविकता यह है कि उनके द्वारा नीले रंग का प्रचुर मात्रा में प्रयोग मृदुलता के माध्यम से समपूर्ण चित्र को सजीव बना देते थे। समय के वातावरण में उन्होंने स्वयं को अनुकूल बना लिया था ताकि समय की कसौटी पर खरा उतरा जा सके। वे अपने चित्र में विभिन्न पहलुओं को एकाग्रचित्तता के साथ चित्रित करते थे। उन्होंने सृजनशीलता को अपने चाक्षुषीय ढंग से नये रूपों में चित्रित किया उनकी कला के सापेक्ष वास्तविकता का

1–वर्मा, उमेश अनुवादक : समकालीन भारतीय कला श्रृंखला पृ0 5 (रणवीर सिंह बिष्ट) ललित कला अकादमी, रवीन्द्र भवन नई दिल्ली–110001 (1990)

अनुभव रहा है। उनके चित्रों में जीवन से जुड़े कई पहलुओं पर सौन्दर्य का प्रादुर्भाव देखने को मिलता है। उन्होंने अपनी कला के माध्यम से बौद्धिक विशिष्टताओं को सदैव चित्रित किया है। उनके चित्रों में समकालीन कला की स्पष्ट झलक तथा भविष्य का प्रत्यक्षतः दर्शन दिखायी देता है। उन्होंने स्वतन्त्र रूप से कार्य करने में अग्रणी कदम रखा। उनकी दृष्टि में कला प्रतीक, अलौकिक, यथार्थ, प्रकृति एवं दृश्य को अभिव्यक्त करती है। कलाकृति की शैली से मानवीय अनुभूतियों को व्यापक रूप से चित्रित किया जाता है। कलाकृति के द्वारा भारतीय कला समुदाय कला को उन्नति के शिखर का मार्ग प्रशस्त कर रहा है।

कला सृजन में मानवीय आधार

रणवीर सिंह बिष्ट ने मानवीय पहलुओं पर कई चित्रों को अभिव्यक्त किया, जिनमें मानव की संवेदनाएँ आशा एवं निराशा के रूप में दिखायी देती है। उनकी कला यात्रा से समकालीन कला की नींव को प्रबलता प्रदान हुई। दृश्य चित्रों के अतिरिक्त बिष्ट ने मानवीय चेतना से जुड़े हुए कई चित्रों पर संकलन किया। उनके प्रतीक दृश्य चित्रों से समानता की झलक सम्प्रेषण के भाव को उत्पन्न करती है। उनके चित्रों में सार्वभौमिकता होने के साथ नीले रंग की गहनता को प्रखरता एवं चटकीलेपन से दिखाया गया है। अपने ग्रामीण क्षेत्रों की पर्वत मालाओं के कई–दृश्य को नीले रंग से प्रदर्शित किया। उन्होंने मानवीय संवेग पर अपना ध्यान अत्यधिक केन्द्रित रखा तथा मनुष्य की मनोवृत्तियों को चेतना के माध्यम से सौन्दर्य को जगाया। वे चित्र रचना करते समय मानवीय दृष्टि को ध्यान में रखते थे। उनकी दृष्टि में सौन्दर्य बोध का ज्ञान मानव के लिए आवश्यक है। मानव की कल्पना से ही सौन्दर्य के प्रति जागरूकता उत्पन्न होती है ताकि कलाकृतियों का अलंकरण अनुभूतियों के द्वारा व्यक्त हो सके। समकालीन कला के अन्तर्गत कला में परिवर्तन तथा आधुनिक विचार को माध्यम से जाना जाता है। भारतीय कला परम्परा में प्रतीक धर्म के आधार पर उपयोगी माना जाता है। भारतीय समकालीन कलाकार सामाजिक एवं सांस्कृतिक सृजन से जाने जाते हैं।

यह कुछ ऐसी उपलब्धि है, जो संभवतः समय की कसौटी पर खरी उतरेगी। हमारे पास अगोचर महानता के गोचर लक्षण मौजूद हैं। अपने अन्दर की यात्रा तभी अर्थवान होती है जब उसे असंख्य रंगों और रूपाकारों से भाव बाहरी सजावट न दी गयी हो और कला के हर पहलू में प्राण फूँक दिये गये हों दिव्य अवरोहण की प्रासंगिकता भौतिक तत्वों के सापेक्ष आरोहण से ही सम्पादित होती है। बिष्ट की सृजनशीलता का नवीनतम चरण तथा कथित अज्ञात की चाक्षुष और रचनात्मक संभावनाओं से सम्बद्ध जागरूकता को स्पष्ट करता है।[1]

बिष्ट के कई चित्र संग्रहों की देश–विदेश में प्रशंसा हुई। उनके चित्रों में आधुनिक भारतीय कला के परिदृश्य दिखायी देते हैं। अपनी कला में मौलिकता लाने के लिए बिष्ट ने कई शैली को जन्म दिया, जिसमें आधुनिकता को सदैव उजागर किया गया। उनके चित्रों में रंगों की मार्मिकता एवं पारदर्शिता से यथार्थवादी अभिव्यक्ति मिलती है। उनका वर्षा ऋतु का सिटी स्केप वास्तविकता को व्यक्त करता है। उनके चित्रों में प्रभाववाद की झलक मिलती है, लेकिन बाद में वे अमूर्तवाद की ओर सृजन करने लगे। उनके चित्र संयोजन में संतुलित ढंग से विशिष्ट रंगों का प्रयोग मिलता है। चित्रों को सजीवता के भाव में दिखाया गया है। भवनों एवं मानवीय आकारों को उन्होंने ज्यामितीय रूप देने का प्रयास किया है। लखनऊ की विशालकाय इमारतों को परिप्रेक्षीय ढंग से चित्रित किया है। वे कला सृजन को जनहित का कार्य मानते थे। मानवीय संवेदनाएँ उनके अन्दर समाहित थीं जो उनके "बाढ़ का दृश्य" में उनकी भावुकता को आभास कराती है। उन्होंने मिश्रित माध्यम में कलाकृतियाँ बनायी। व्यक्ति चित्रण में वे स्ट्रोक्स को बड़ी कुशलतापूर्वक उभारते थे। उनकी लगभग तीन दशकों की इस कला–यात्रा के मध्य सबसे खास बात यह रही है कि कमोबेश बिष्ट अपने रचनाकर्म में बराबर तल्लीन रहे हैं।[2] बिष्ट

1–वर्मा, उमेश अनुवादक : समकालीन भारतीय कला श्रृंखला पृ0 6
(रणवीर सिंह बिष्ट)
ललित कला अकादमी, रवीन्द्र भवन
नई दिल्ली–110001 (1990)

2–निगम, अखिलेश : समकालीन कला पृ0 35
(माटी की गन्ध बरकरार है चित्रकार रणवीर सिंह बिष्ट) नवम्बर 84/मई, 85 संख्या 3–4
ललित कला अकादमी, नई दिल्ली–110001.

ने कला पर काफी कुछ लिखा भी। राष्ट्रीय और प्रान्तीय अखबारों में उनके कई लेख छपे। अपने एकान्त क्षणों में पहाड़ की याद में खोए हुए वे चुपके से कविताएँ भी लिख दिया करते थे।[1]

बिष्ट की कला साधना में विभिन्न प्रयोगों की अवधारणाएँ मूर्त आकार में परिपक्वता को लिये हुए दिखायी देती हैं। वे रंगों के अलौकिक प्रभाव को मार्मिक ढंग से व्यक्त करने में सिद्धहस्त थे। उनके अनुभव में रंगों की तकनीक नये स्वरूप में दिखायी देती हैं। बिष्ट ने प्राकृतिक व आध्यात्मिक पक्ष को अपनी कला साधना में सर्वोपरि रखा। उन्होंने रंगों के विभिन्न अवयव से अपने चित्रों में विविधता के लाक्षणिक प्रभाव को व्यक्त किया। बिष्ट की कला यात्रा उत्कृष्ट कला साधना के विभिन्न सोपानों को विस्तारित करने में सफल रहे। उन्होंने सदैव चटकीले रंगों का प्रयोग सृजन की भूमिका में किया। चित्रों में विषयगत भावों को अभिव्यक्त करना उनका अथक प्रयास था।

बिष्ट ने अपनी कला यात्रा में विभिन्न कलाकृतियों को सन् 1950 से सृजित किया, उन्होंने सन् 1998 तक चिरस्थाई सृजन कार्य किया। जिसमें उनके चित्रों में केदारनाथ मन्दिर, मन्दिर के सामने, मठवासी, बुद्ध को भिक्षा माँगते हुए, पर्वतीय अँचल के दृश्य चित्र, बाढ़ दृश्य, व्यक्ति चित्र, विद्रोह शृंखला, अभिव्यंजनावादी संयोजन, प्रलोभन, नीला अनुभव शृंखला, उल्का शृंखला, आतंकवाद एवं अन्तिम चित्र हैं। इन समस्त चित्रों में बिष्ट का संयोजन, रंग योजना, आकार, सरल परिप्रेक्ष्य, चित्रों की बनावट आदि मुख्य रहे हैं। चित्र सृजन में उनका प्रत्यक्ष दृष्टिकोण सौन्दर्यात्मक पहलू, सामाजिक एवं राजनैतिक पहलुओं पर अत्यधिक ध्यान दिया।

मानवीय संवेदनाओं से जुड़े कई पहलुओं को बिष्ट ने अपने चित्रों से अभिव्यक्ति दी। उनकी कला यात्रा में आशा एवं निराशा का स्वरूप दिखायी देता है। कला यात्रा में समकालीन कला के आधार को प्रबलता प्रदान होती है। उनके द्वारा बनाये गये दृश्य चित्रों में प्रतीकता की झलक मिलती है। चित्रों में समानता की झलक से संप्रेषण का भाव उत्पन्न होता है। नीले रंग की गहनता

1–जोशी, नवीन : लैन्सडौन (समाज–संस्कृति और इतिहास) पृ0239
(पद्मश्री रणवीर सिंह बिष्ट)
लैन्सडौन पुस्तकालय समिति (पंजी0)
बिनसर पब्लिशिंग कम्पनी
58/1, घोसी गली (पलटन बाजार)
देहरादून (उत्तराखण्ड) (2004)

सार्वभौमिक होते हुए भी अत्यधिक प्रभावी है। उनके चित्रों में मानव के मानसिक संवेग का अत्यधिक ध्यान दिया गया है। मनुष्य की जागृत चेतना को व्यापक मनोवृत्तियों से उल्लेखनीय मानकर चित्रित किया गया है। मानवीय दृष्टि का अत्यधिक ध्यान रखा गया है। कलाकृतियों को संयोजित करने के साथ अनुभूतियों का तार्किक प्रभाव रहता है। कलाकृतियों को उत्कृष्ट स्तर पर आवश्यक माना गया जिससे भारतीय समकालीन कला को परम्परा से जोड़ा जाता है।

बिष्ट के चित्र संग्रह देश–विदेश में प्रशंसनीय रहे हैं। उनके चित्रों में भारतीय कला के परिदृश्य की झलक मिलती है। उन्होंने अपनी शैली में मौलिकता लाने के लिए नवीनता को आधार माना है। रंगों की तरलता एवं पारदर्शिता उनके श्रृंखलाओं में यथार्थवादी अभिव्यक्ति मिलती है। वर्षा ऋतु से सम्बन्धित दृश्य चित्र (सिटी स्केप) में वास्तविकता दिखायी देती है। संयोजन चित्रण में गहरे रंगों का प्रयोग मिलता है। अधिकांश चित्रों में नीले रंग की प्रचुरता देखने को मिलती है। प्रभाववादी चित्रकार के रूप में उनकी कृतियों में अमूर्तवाद का नया रूप देखने को मिलता है। उन्होंने तैल या जल को माध्यम अपनाकर अपनी कृतियों को संतुलित ढंग से संयोजित करके बनाया है। मानवीय आकारों एवं भवनों को ज्यामितीय स्वरूप देकर प्रस्तुत किया है। भवनों को परिप्रेक्षीय ढंग से नये आयामों के साथ चित्रित किया है।

बिष्ट सामाजिक जीवन की विभिन्न गतिविधियों को अपने कला के माध्यम से सृजित करने की भरपूर कोशिश करते थे। सजीव चित्रण से वे गहराई की अनुभूति करते थे। पाश्चात्य संस्कृति की चकाचौंध को उन्होंने स्ट्रोक्स के माध्यम से चित्रित किया है। अपनी कला साधना में उन्होने प्रयोगमूलक अवधारणाओं को परिपक्वता का स्वरूप देने की कोशिश की है। रंगों के अनुभव से उन्होंने अलौकिक एवं विस्मित करने वाली कलाकृतियों को स्वरूप प्रदान किया। उनके द्वारा चित्रित रूपाकृतियों से समाज की नयी झलक दृष्टिगोचर होती है। उनकी कलाकृतियों में प्राकृतिक व आध्यात्मिक स्वरूप की रूपरेखा को सर्वोपरि माना है। उन्होंने सौन्दर्यात्मक दृष्टिकोण से प्रत्यक्ष रूप में समस्त पहलुओं पर अनेकों चित्र बनाये।

अध्याय चार

रणवीर सिंह बिष्ट की रचनाशीलता एवं उनकी कृतियों का कला विवेचन

अध्याय चार

रणवीर सिंह बिष्ट की रचनाशीलता एवं उनकी कृतियों का कला विवेचन

रणवीर सिंह बिष्ट की रचनाशीलता की प्रशंसा जितनी भी की जाय वह कम है। वे एक सरल स्वभाव से भरे एवं सत्यता से कला की बारीकी तथा उसमें यथार्थता की झलक मिलती है। समकालीन कलाकारों में उनका नाम अग्रणी रहा है। वे कला के साथ सामाजिक एवं राजनैतिक पहलुओं पर कार्य करते रहे। उनकी कला साधना से मनुष्य को एक कलाकार बनने की प्रेरणा जागृत करती है। उनके विभिन्न कला संग्रहों से ज्ञात होता है कि उनमें आन्तरिक क्षमता, सहजता, आशा व करुणा व्याप्त थी। अपने जीवन काल में उन्होंने कला के प्रति निष्ठावान रहकर चित्रण कार्य किया। उन्होंने बाल्यकाल से ही एक सफल कलाकार बनने का लक्ष्य निर्धारित किया तथा वे एक सफल सम्मानित कलाकार हुए।

उन्होंने अपने चित्रों के माध्यम से गढ़वाल के प्राकृतिक सौन्दर्य विशेषकर हिमालय पर्वत, नदी इत्यादि से शेष संसार से परिचित कराया। उनके चित्रों से जहाँ कलाकार प्राकृतिक सौन्दर्य से प्रभावित होकर कोमल हृदय एवं सौम्यता से परिचित होते हैं, वहीं इनकी एकल चित्रों की प्रदर्शनी में जो कि 25 अक्टूबर 1995–31 अक्टूबर 1995 तक आईफेक्स आर्ट गेलरी नई दिल्ली में प्रदर्शित हुई, जिसका उद्घाटन माननीय पूर्व प्रधानमंत्री चन्द्रशेखर के कर कमलों से 25 अक्टूबर 1995 को उद्घाटित किया गया। उसका शीर्षक ''ब्लैक पेजेज ऑफ इण्डियन रिपब्लिक'' (भारतीय लोक तन्त्र का काला पृष्ठ) दिया था देखने से अवगत होता है कि कलाकार समसामयिक–सामाजिक–राजनीतिक परिस्थितियों के प्रति सजग रहा।[1]

उनकी रचनाशीलता को विभिन्न तरह से देखने पर ऐसा लगता है कि उनमें सहज अभिव्यक्ति, गतिशीलता समाहित थी। उनके चित्रों की आभा से दर्शक सौन्दर्य के प्रति आकर्षित होता था। उनकी कृतियों में सिद्धान्तों एवं विचारधाराओं का प्रतिपादन दिखायी देता है। उनके चित्र आध्यात्म की गहराई को वास्तविक

1–नेगी, कुँवर सिंह : गढ़ गौरव पृ0 5
सम्पादक कोटद्वार गढ़वाल, 15 मई 2001 ई0

रूप में अर्थगम्य बनाते हैं। उनकी रचनाओं में ब्रह्माण्ड की परिकल्पना की अनुभूति होती है। उनके द्वारा प्रयुक्त नीले व स्लेटी रंगों की विभिन्न रंगतों (तानों) का चित्रण दिखायी देता है। उनके द्वारा रचित सैरा, पहाड़ी सैरा एवं दऊघाट में जलरंगों को गूँजते हुए लगाया है। उनकी चित्रण तकनीक में रंगों को ध्वनित रूप में प्रयुक्त किया है। उनकी यही विशेषताएँ उन्हें श्रेष्ठ कलाकारों की श्रेणी में शामिल कराती हैं।

उनके द्वारा वॉश तकनीक में चित्रों की रचना की गयी जिनमें कवयित्री एवं मूसलाधार वारिश उनकी विशेष उपलब्धियाँ हैं। उन्होंने जल एवं तैल रंगों के माध्यम को अपनाकर अपनी कृतियों को प्राणवान बना दिया। इनकी कृतियों में मुख्यतः मनन–चिन्तन एवं शान्ति के विषयों में लयात्मक भावों का सम्मिश्रण है तथा प्रकृति की शक्तियों का आभास भी मिलता है। कला यात्रा के प्रारम्भ में उन्होंने उत्साहपूर्वक जल रंगों से विभिन्न तरह के चित्र बनाये, जिनमें पुष्पों, बादलों, गाँवों एवं पहाड़ों से सम्बन्धित मनोरम दृश्यों का उत्कृष्ट चित्रण किया है।

सन् 1962 ई0 में उनकी रचना से एक जोश भरा रूप मिश्रित माध्यम के रूप में उभर कर आया। उनके ग्रामीण सैरा–1 एवं ग्रामीण सैरा–2 महत्वपूर्ण चित्रों के रचना को एक नया आयाम मिला। इन चित्रों में रंगों का मिश्रण तरलता से संतुलन के भावों को दिखाया गया। उनके चित्रों को देखकर कलात्मक विवेचन करें तो जल एवं तैल दोनों रंगों की तकनीक से व्यापक प्रयोग दृष्टिगोचर होता है। सन् 1970–71 में चित्रों के संयोजन की दृष्टि से उनमें तात्विक चिंतन की प्रमुख उपलब्धियाँ रही हैं।

बिष्ट की रचना में 'नारी एवं श्वान' को समसामयिक समाज के प्रति कठोरता की दृष्टि को व्यक्त किया है। इस चित्र को देखकर ऐसा लगता है कि कला की साधना ही उसका परिणाम है। समकालीन कला के द्वारा आत्मपरक, स्वच्छंद एवं अभिव्यंजित रूप को व्यक्त किया गया। प्रकृति को सौन्दर्य के स्वरूप में उभारकर उसके शाश्वत को प्रतिपादित किया गया। कला की रचनाशीलता में स्वच्छंदता के प्रादुर्भाव से ही चित्र में अभिव्यक्ति होती है। आकार में रंगों का सम्बन्ध उनमें निहित तत्वों पर निर्धारित है। कलाकार की सृजन प्रवृत्ति से ही उसके चित्रों को देखकर अनुमान लगाया जाता है। बिष्ट ने लीनोकट या लिथोग्राफ के माध्यम से चित्रों को सृजित करने में प्रयोग किया है। उन्होंने इस प्रक्रिया के माध्यम से चित्र रचना की अभिव्यक्ति की है। उनके

ये समस्त कार्य विकास कार्य के विविध माध्यम बने। सिरेमिक एवं टेराकोटा में भी उनके कार्य प्रशंसनीय रहे। उन्होंने अनेक आकारों के माध्यम से मूर्ति शिल्प की कृतियाँ निर्मित की। इस तरह की विभिन्न विधा में कार्य करने की ललक को देखकर ऐसा लगता है कि उन्हें संस्कृति एवं सभ्यता का पूर्ण ज्ञान रहा हो। विदेशों में भी इनकी विशेषताओं को सराहा गया। उनके माध्यम को उनकी भावनाओं से प्रेरित प्रयास माना जाता है।

बिष्ट ने शृंखला चित्रों को तैल रंग माध्यम से प्रारम्भ किया। ''नाइट शृंखला'' तैल रंग में अत्यधिक प्रशंसनीय हुई। कलाकार की कल्पनाशीलता में जन–जीवन का चित्रण अधिकांशतः प्रभावी रहता है। बिष्ट के चित्रों में ''मन्दिर के सामने'' तथा उच्च वर्ग के स्त्री–पुरूष का चित्रण मिलता है। उन्होंने नीले रंग से ही चित्रों को दर्शाया है। उनकी रचनाशीलता में नीले रंग का ही प्रयोग अधिकांशतः हुआ है। उनकी रचनाओं में प्रवत्तियों एवं चिन्तन की आहट की अनुभूति होती है; क्योंकि चित्र इतने सक्षम संयोजित किये गये जो कि कलाकृतियों में उभरते नजर आते हैं। कला की अभिव्यंजना कला यात्रा में गहन दृष्टि से होती है। बिष्ट की ''उल्का सीरीज'' नामक कृतियों में जो प्रभाव है उनमें गहन चिन्तन एवं मनन है। रंगों का सरस अंकन तथा चाक्षुषीय तत्वों की विशेष झलक मन्त्रमुग्ध करती है। उनकी कृतियों में कैनवास पर रंगों को फैलाना पर्वतीय ढलानों में आकारों का अवरोहण अतिशोभनीय लगता है। उनकी सृजनशीलता में नवीन आयाम समाज को जागरूक करके वास्तविक सम्भावनाओं को स्पष्ट करना रहा है।

शुरू के ये चित्र उनके आज के आकृति विहीन चित्रों से भिन्न हैं। इन्हें भी उन्होंने तैल रंगों में बनाया है, जिनमें जनजीवन, कहवाधर आदि विषय हैं। उस काल की उनके कुछ शबीहें भी मैंने देखी हैं, जिसमें उन्होंने रंगों के माध्यम से व्यक्ति के चरित्र को उजागर करने का सफल प्रयास किया है। इन चित्रों के लिए उन्होंने कभी भी किसी व्यक्ति को विशिष्ट मुद्रा में बैठाकर काम नहीं किया। इस काल के बाद कुछ समय तक जरूर उन्होंने स्थल विशेष का चित्रण जल रंगों में किया है; लेकिन 1995 के बाद इस तरह का चित्रण उन्होंने नहीं किया और स्टूडियो को ही उन्होंने सबसे बेहतर माना। शायद वह इस बात को भली–भाँति समझ चुके थे कि प्रकृति को प्रत्यक्ष देखकर चित्रण करने की आदत पड़ने से, स्वतन्त्र रूप से विचार करके, रचना करने की

प्रेरणा नहीं मिल सकती।[1]

बिष्ट की कृतियों को देखकर ऐसा लगता है कि उन्होंने कला के अद्‌भुत रूप में लयात्मक अंशों को समाहित किया। कला पारखियों ने उनकी कला को विस्तारीकरण एवं संघर्षशीलता के रूप में जाना। उनके मन में आये विचारों को अपनी रचना श्रृंखला के द्वारा प्रस्तुत किया। अपने गुरु वीरेश्वर सेन व मोहन सेन से कला की तकनीक सीखने में वे हमेशा तत्पर रहे। उन्होंने अपने चित्रों को विषयों के रूप में व्यक्त किया।

बंगाल शैली के चित्रकारों में अवनीन्द्रनाथ टैगोर, क्षितीन्द्रनाथ मजूमदार इत्यादि ने चित्रण की वॉश तकनीक को लखनऊ के चित्रकारों के इस पद्धति में कार्य करने हेतु प्रेरित किया। बिष्ट ने वॉश चित्रों में सबक, कवयित्री, मूसलाधार बारिश प्रमुख हैं। उनके चित्रों की रचनाशीलता में श्रृंगार एवं काम की पराकाष्ठा का स्पष्ट उल्लेख है। चित्रों में अमूर्त अभिव्यंजनावादी संयोजन है तथा आकृतियों की रूप–रेखा का उपयोग मिलता है। बिष्ट ने अपने चित्रों से ऐसी शैली को जन्म दिया जो समकालीन कला में हमेशा याद रहेगी। उनके दृश्य चित्रों में यथार्थता की झलक दिखायी देती है। उनका हमेशा प्रकृति के प्रति प्रेम था। उन्होंने कला को आध्यात्म का स्वरूप बताया। वे अपनी पूर्ण निष्ठा के साथ कला के स्वरूप में सौन्दर्य के प्रति तत्पर रहे। कला की सकारात्मक सोच को उन्होंने चित्रों के माध्यम से व्यक्त किया। मानव चित्रण में उन्होंने व्यंग्य एवं कटाक्ष के चित्र बनाये।

उन्होंने कला के माध्यम से एक संकेत दिया कि मानव का प्रकृति के प्रति तथा प्रकृति का मानव के प्रति विविध लोकप्रियता का प्रभाव है। बिष्ट के मन में मानव का ग्रामीण जीवन समाया हुआ था। उनकी प्रत्येक कृति में पर्वतीय अँचल के ग्रामीणों की बेवशी की झलक दिखायी देती है। प्रकृति के निकट मानव जीवन की गतिशीलता को उन्होंने व्यक्त किया। भारतीय परम्परा का समावेश भी उनकी कृतियों में दिखायी देता है। बिष्ट के चित्रों में नवीनता का अद्‌भुत सम्मिश्रण मिलता है। चित्रकार के लिए निष्ठावान होना देश की संस्कृति व सभ्यता को सशक्त बनाती

1–निगम, अखिलेश : समकालीन कला पृ0 32 (माटी की गन्ध बरकरार है चित्रकार रणवीर सिंह बिष्ट) नवम्बर 84/मई, 85 संख्या 3–4 ललित कला अकादमी, नई दिल्ली–110001.

है। बिष्ट ने अपने चित्रों के माध्यम से कला सृजन हेतु प्रोत्साहन दिया है।

चित्र सृजन हेतु उनकी तत्परता अति प्रशंसनीय रही है। लखनऊ से कला शिक्षा प्राप्त करके उन्होंने अथक परिश्रम करके स्वयं को नव कलाकार के रूप में प्रस्तुत किया। उनके विचारों में गहन ज्ञान, आत्मा की आभा समाहित थी। वे कला को मानव के जन्म के समय का ही मानते थे; क्योंकि कला के प्रति मानव का आकर्षण प्रागैतिहासिक काल से रहा है। संसाधनों के अभाव में मानव ने कला के महत्व को गहराई से समझा। उनकी विभिन्न कृतियाँ ग्रामीण क्रिया–कलापों से प्रेरित हैं। उनके चित्रो में कला का अद्‌भुत स्वरूप कलाकार के मस्तिष्क पर कल्पित रहता है। सौन्दर्य से प्रेरित उनके वॉश चित्रण भी आकर्षक हैं। कला में सौन्दर्य की अभिव्यक्ति को सुखद, आदर्श एवं रौद्र स्वरूप में वर्णित किया जाता है। कला में अभिव्यक्ति मानसिक विकास, बौद्धिक क्षमता को सार्थकता मिलती है। उन्होंने अपने चित्रों में विभिन्न रूपाकारों को अंकित करके प्रतीकात्मकता पर विचार किया है। कलाकार किसी चित्र संयोजन में रूप निर्धारण करता है तो उसके आन्तरिक स्वरूप को अपने मन व मस्तिष्क में अंकित कर लेता है तथा उसके भाव के अनुसार उसमें चिन्तन–मनन करके चित्रित करता है। चित्र में उसका मौलिक भाव चमत्कार के अद्‌भुत स्वरूप का प्रतीक है। उनकी कलाकृतियों में कुछ सारगर्भित भावनाओं का स्वरूप धर्म के रूप में दिखायी देता है। उनके चित्रों में प्रकृति के दर्शन, मन्दिरों के दर्शन से ऐसा लगता है कि उनका प्रकृति व आध्यात्म के प्रति अप्रतिम लगाव था। उनके इस तरह के चित्रों में अद्‌भुत सौन्दर्य का आभास होता है।

बिष्ट की कलाकृतियों में मनोरंजन एवं अलंकरण की विभिन्न तरह की आकृतियों का समन्वय दिखायी देता है। उनके रेखांकन में विभिन्न प्राकृतिक दृश्यों का संग्रह है। उनके चित्रों में आस्था की सार्वभौमिकता तथा कल्पना की अलौकिकता समाहित है। उनके चित्र भावनापरक स्वरूप को भी लिये हुए हैं। मनोवैज्ञानिक विश्लेषण से उनके चित्र समसामयिक विषय को दृष्टिगोचर कराते हैं। इसके साथ ही कला प्रणाली को भी विकसित करने में सफलता प्रदान करते हैं; क्योंकि उनकी रचना में तत्परता का उपयोग हुआ है। मानव का स्वभाव सृजनात्मक होता है। कला का सृजन आंकलन से क्रियान्वित होता है। कला की व्यापकता में अंश रचना समाहित रहती है। कला के द्वारा भारत की अद्‌भुत झलक

विभिन्न रंगो के माध्यम दिखायी देती है। सुन्दरतम कलाकृतियों का स्वरूप प्रतिक्रियात्मक ढंग से होता है। इस तरह के चित्रों की क्रमबद्धता सरलतम प्रवृत्तियों में अभिव्यक्त है। बिष्ट के द्वारा निर्मित किये गये चित्रों में मनुष्य का निषेधों, प्रलोभनों एवं विकृतियों को सचेत किया है। उनके चित्रों में विद्रोह एवं प्रतिरोध से उनके जीवन की अद्‌भुत प्रतिभा नवीन रूप में दिखायी पड़ती है। कलाकार का जीवन उसके सृजनात्मक कार्यों पर निर्भर रहता है, वह विशेष रूप से कला के विकास को यथार्थ भाव से व्यक्त करता है। कला सृजन में नैतिक विचारों को भली–भाँति निर्धारित करके संयोजित किया जाता है। कला का प्रादुर्भाव परिस्थितियों के आधार पर सक्षम होता है। बिष्ट के अधिकांश चित्र संग्रहण जल रंगों में दिखायी देते हैं।

कला की गतिशीलता उसके प्रारम्भिक स्तर पर दिखायी देती है। एक कुशल चित्रकार स्वयं कृति सृजन करके अपने कार्य में अपनी पहचान बनाता है। बिष्ट के कला सृजन में वे एक आशावादी चित्रकार के रूप में जाने गये। वे कला को रंग व संयोजन से तकनीकी रूप में भावनाओं के माध्यम से उजागर करते थे। उन्होंने कला जगत् को अपनी रचनाशीलता के द्वारा उसके मौलिक तत्वों को अग्रणी माना। वे सृजन कार्य को कला के द्वारा अमूल्य निधि के रूप में भी मानते थे। विभिन्न कला केन्द्रों को स्वरूप प्रदान करने में उनका सहयोग सराहनीय रहा है। वे कला के विभिन्न श्रोतों से भाव जगत् के द्वारा मार्मिक आयाम देने में भी सिद्धहस्त रहे। नीली श्रृंखला में उन्होंने शीतलता, सत्यता, आनन्दता एवं स्थिरता को साकार करने में कला के कार्य को प्रशस्त किया। नीले रंग के साथ हरा, पीला, लाल एवं सफेद रंगों से कलाकृति में नवीनता लाने का भी प्रयत्न किया। अपनी रचनाशीलता के द्वारा उन्होंने विदेशों में भी स्वयं को भारतीय समकालीन कलाकार होने के गौरव को साबित किया। उनकी सृजनशीलता की अभिव्यक्ति आकृतियों के हाव–भाव में दृष्टिगोचर होती है। वे आकृतियों को चरित्रगत आधार पर चित्रित करते थे। वे किसी वस्तु को देखने पर उसमें निहित रंग, रूप की यथार्थता को आन्तरिक भाव से समझते थे कि कलाकार की अभिव्यक्ति में ये समस्त अवयव अनिवार्य होते हैं।

चित्र संयोजन में वे रंगों की तानों को जिस भाव में लावण्य युक्त स्वरूप देते थे उनमें उत्कृष्ट प्रभाव दिखायी देता था। वे चित्र में तानों के प्रभाव को बल देते थे। प्रो0 पी0एन0मागो के

अनुसार :–"In his recent paintings Bisht emages as tonulist."[1] अर्थात् बिष्ट के हाल के चित्रों में तान की विशिष्टता अलौकिक है। बिष्ट ने चित्र रचना में धरातलीय गुणों की संरचना एवं तकनीक का एक अंग माना तथा वे सदैव तान के गुणों को स्पष्ट रूप से प्रकाशमयी दिशा देने में दक्ष थे। वैसे कलाकार को कलाकृति के सृजन में धरातल की आवश्यकता होती है। बिष्ट यह भी मानते थे कि मानव द्वारा तैयार किया गया धरातल कपड़ा, लकड़ी इत्यादि जो रचना प्रक्रिया को साकार करने में समृद्ध है। इन्हीं धरातल पर सृजात्मक प्रयोग करके कलाकृतियों का निर्माण किया जाता है। वे सदैव सजीव चित्रण को प्रक्रियात्मक प्रभाव के रूप में साकार करते थे। इस तहर के चित्रों की अभिव्यक्ति को छाया–प्रकाश के माध्यम से विविध आयामी रूप में मानते थे।

उनकी कृतियों का कला विवेचन

रणवीर सिंह बिष्ट ने अपनी कला यात्रा में विभिन्न तरह की कृतियों की रचना की। उन्होंने जल रंग से लैण्ड स्केप चित्रण किया। वॉश तकनीक में भी उनकी विशेष दक्षता रही है। अपने अध्यापन काल के प्रारम्भ में उन्होंने आकृतिमूलक चित्रण एवं वॉश तकनीक पर कार्य किया। यथार्थ चित्रण को उन्होंने कुशलतापूर्वक किया है। उनके चित्रों में रंगों की चमक तथा पारलौकिकता का प्रभाव अधिकांशतः देखने को मिलता है।

प्रकृति से लगाव होने के कारण उनके चित्रों में पुष्प, पहाड़, बादल, बरसात आदि विषय हैं। उन्होंने जल रंगों से टेम्परा पद्धति से अपने चित्रों की रचना की है। उनकी कलाकृतियों में यथार्थवादी आकृतियों का अंकन स्पष्ट दिखायी देता है। उनकी रंग–योजना में मिश्रण प्रयोग अधिकतर दिखायी देते हैं। जल रंग के प्रयोगों में उनकी दक्षता विशिष्ट रही है। रंगों का आभास वे तरलता व पारदर्शिता के रूप में करते थे। रंगों का प्रयोग उनकी विभिन्न श्रृंखलाओं में दिखायी देता है। उनकी चित्रण तकनीक में यथार्थवादी एवं अभिव्यंजनावादी चित्रण शैली रही है, जिसमें चमकदार एवं उत्साह से पूर्ण रंगों का प्रयोग हुआ है। उन्होंने लाल, पीले, हरे व नीले रंगों का प्रयोग प्रकृति के अनुकूल भावों में किया है। मानव के जन–जीवन पर आधारित उनके चित्रों में सजीवता विद्यमान है।

1- Mago, P.N. : Former Principal College of Art New Delhi

बिष्ट ने अपने चित्रों की रचना में चित्रकला के तत्वों को आधार माना है, जिनमें बिन्दु, रेखा, आकार, रंग, तान, अन्तराल आदि हैं। उन्होंने रेखाओं का अंकन काफी सुदृढ़तापूर्वक किया है, जिनमें उनके स्केचेज इत्यादि हैं। आकारों में प्राकृतिक बनावट पर विशेष ध्यान दिया है। रंगों में भी प्राकृतिक छटा को वर्णित करने में अपनी दक्षता का परिचय दिया है। तानयुक्त रंगों का प्रयोग बखूबी किया है। चित्र को संयोजित करने में अन्तराल को कुशलतापूर्वक व्यवस्थित किया है।

बिष्ट ने मुख्यतः लाल, पीले, हरे, नीले रंगों का प्रयोग किया है। अधिकांशतः नीले रंग की बाहुल्यता उनके चित्रों में देखने को मिलती है। हरे रंग का प्रयोग भी प्रचुर मात्रा में हुआ है। नीले रंग का प्रयोग करने के पीछे यह धारणा रही है कि वे सत्यवादी विचारों के थे। सत्यता को यथार्थ रूप में दिखाने के लिये उन्होंने नीले रंग को अपनी कलाकृतियों में अधिकांशतः प्रयोग किया है। उनके चित्रों में रंगों का विशेष स्थान रहा है; क्योंकि विभिन्न रंगों के प्रभाव से मानव की भावनाओं को उद्वेलित करने की अपार क्षमता होती है। उन्होंने रंगों की धारणा को मनुष्य की भावना के साथ जोड़ा है। रंगों का यह प्रयोग मनोवैज्ञानिक आधार पर अन्तर्भावों को व्यक्त करता है। उनके द्वारा प्रयोग किये गये रंगों का संघात एक अनोखे प्रभाव को व्यक्त करते हैं।

बिष्ट ने जल रंगों से अपनी कृतियों का सृजन प्रारम्भ किया। रंगों को कोमलता के साथ स्वाभाविक रूप से प्रयोग करने में उनकी विशेष दक्षता रही है। उनके चित्रण करने की तकनीक में तीव्रता थी, उनकी बाद की कृतियाँ तैल रंग से सृजित होने लगी। उनकी कृतियों में जल रंगों की वॉश तकनीक का आभास होता है। उनके चित्रों की शृंखलाओं में अमूर्त स्वरूप दिखायी देता है। शृंखला चित्रण में सृजन की प्रक्रिया सतत् चलती रही है। नीले रंग का प्रयोग बिष्ट ने अपनी कलाकृतियों में बड़े सावधानीपूर्वक किया है। नीले रंग को अत्यधिक प्रभावी बनाने के लिये बिष्ट ने अपनी कुशलता का परिचय दिया है।

उनकी रचनाशीलता में वॉश चित्रण प्रारम्भिक चरण में महत्वपूर्ण रहा है। वॉश तकनीक को उन्होंने अपने अध्ययन काल में ही सीख लिया था तथा उस पर उनकी दक्षता हो गयी थी। व्यक्ति चित्रण भी उनके द्वारा बनाये गये हैं। अपने लैण्ड्सडौन के बाल्यकाल को उन्होंने दृश्य चित्रण के रूप में साकार किया। पर्वतीय क्षेत्र के भू–दृश्यों को देखकर वे प्रेरित हुए थे। उनके

विद्यालय जाते वक्त सुदूर नीली पहाड़ियाँ दिखायी देती थी तो उन्होंने उस समय की याद को अपने शृंखलाबद्ध चित्रों से साकार किया। पर्वतीय अँचलों में उल्कापिण्डों को भी उन्होंने शृंखलाबद्ध ढंग से चित्रित किया है। देश में आतंकवाद को भी उन्होंने अपने चित्रों के माध्यम से व्यक्त किया, इसकी भी एक शृंखला रची। उत्तराखण्ड आन्दोलन में लोकतंत्र की मर्यादाओं के उलंघन पर उन्होंनें विद्रोह शृंखला का चित्रण किया। वे मूर्ति शिल्प एवं ग्राफिक आर्ट में भी सिद्धहस्त थे।

रणवीर सिंह बिष्ट द्वारा सन् 1950 में एक महिला का व्यक्ति चित्र बनाया गया जिसमें रंगों का तानयुक्त प्रभाव यथार्थवादी ढंग से दिखाया गया है। चित्र संख्या : 43
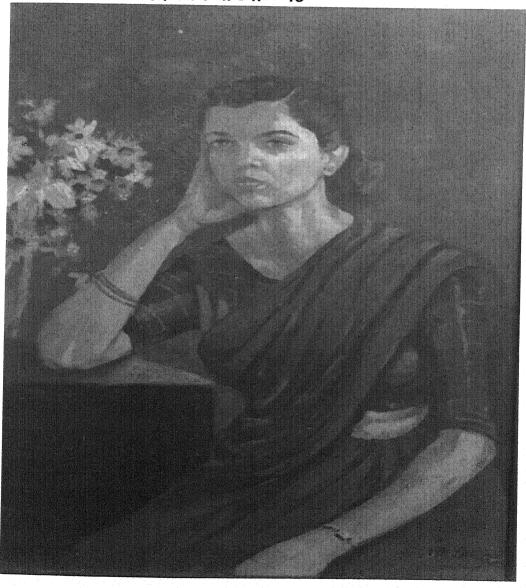
चित्र संख्या : 43

सन् 1956 में बिष्ट ने जल रग से अमूर्त संयोजन को नीले एवं लाल रंग से चित्रित किया। चित्र संख्या : 44
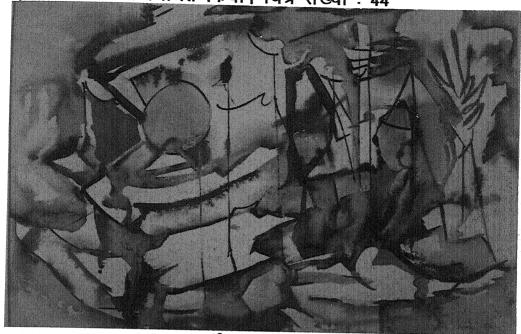
चित्र संख्या : 44
अमूर्त संयोजन

सन् 1960 में ही बिष्ट द्वारा चित्रित किया गया वर्षा ऋतु का सिटी स्केप है जो उन्होंने लखनऊ के प्रतीक में चित्रित किया है। चित्र संख्या : 45

चित्र संख्या : 45

सन् 1959 में तैल रंगीय पद्धति से विश्राम शीर्षक को उन्होंने अपनी तन्मयता से चित्रित किया है। चित्र संख्या : 46
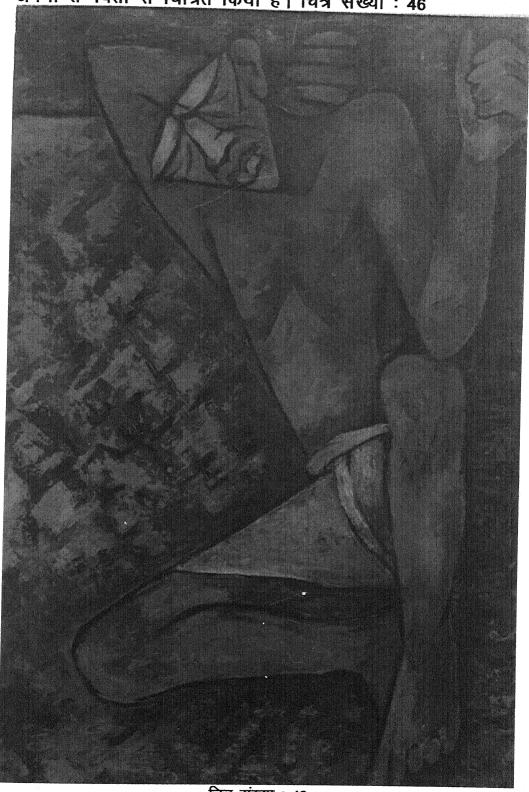
चित्र संख्या : 46
विश्राम

सन् 1960 में मिश्रित पद्धति से बनाया गया एक व्यक्ति चित्र है। इस चित्र की पृष्ठभूमि को रंगयुक्त दिखाने का अथक प्रयास किया गया है। चित्र संख्या : 47
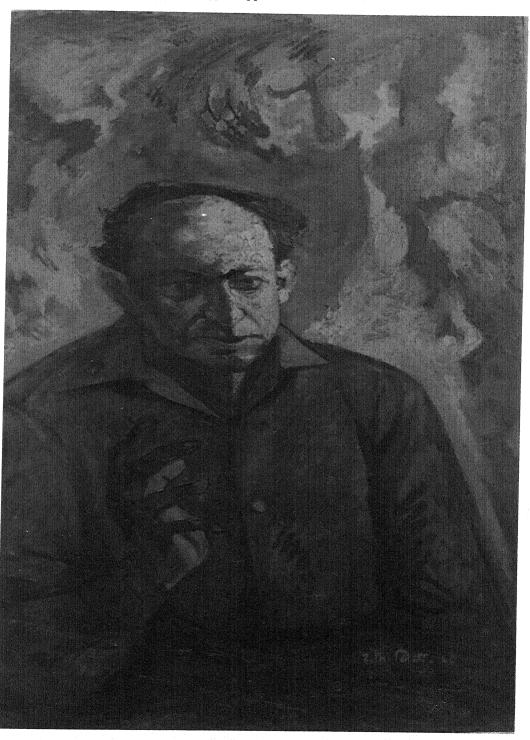
चित्र संख्या : 47
व्यक्ति चित्र मिश्रित पद्धति

सन् 1962 में उन्होंने मिश्रित पद्धति से मुखाकृति चित्रित की है। चित्र संख्या : 48

चित्र संख्या : 48
मुखाकृति

सन् 1962 में उन्होंने लाल, हरे, पीले एवं नीले रंगों से संयोजन चित्रित किया है जिसमें मन्दिरों का आभास होता है। चित्र संख्या : 49

चित्र संख्या : 49
संयोजन

सन् 1962 में उन्होंने तैल रंगीय संयोजन को व्याकरणीय दृष्टि से चित्रित किया है। चित्र संख्या : 50
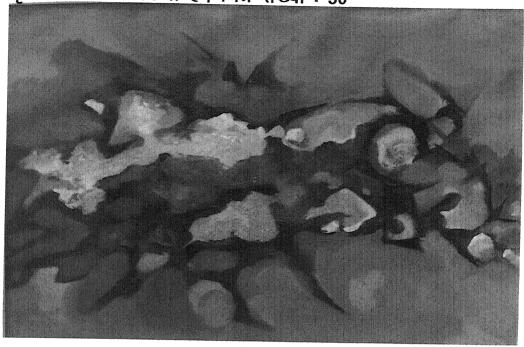
चित्र संख्या : 50
संयोजन

सन् 1965 में तैल रंगीय संयोजन में बिष्ट ने अपनी भाव प्रवणता व्यक्त की है। चित्र संख्या : 51
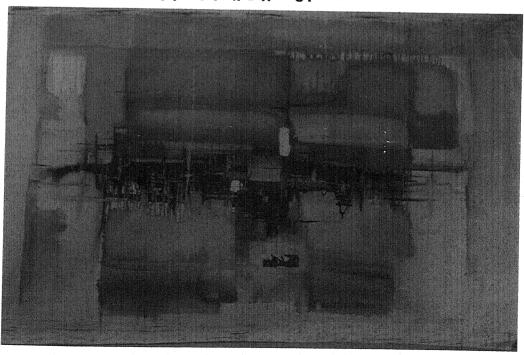
चित्र संख्या : 51
संयोजन

सन् 1965 में तैल रंगीय पद्धति से उन्होंने रंगो के सघन प्रभाव से संयोजन चित्रित किया है। चित्र संख्या : 52
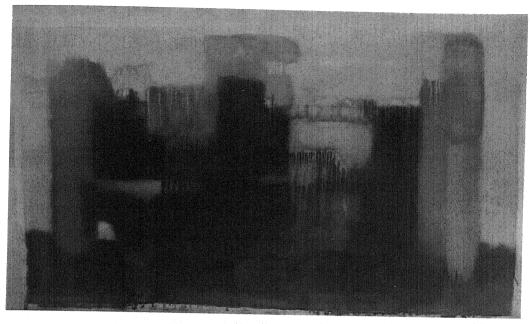
चित्र संख्या : 52
संयोजन

सन् 1965 में उन्होंने विद्रोह शृंखला पर चित्रण कार्य किया, जिसमें मुखाकृतियों को विभिन्न प्रतीक के रूप में कुशलतापूर्वक चित्रित किया गया। चित्र संख्या : 53

चित्र संख्या : 53
विद्रोह

सन् 1970 में उन्होंने अभिव्यंजनावादी संयोजन को अमूर्त ढ़ग से चित्रित किया है। इसमें रंगो को प्राथमिक आधार पर लगाया गया है। चित्र संख्या : 54, 55
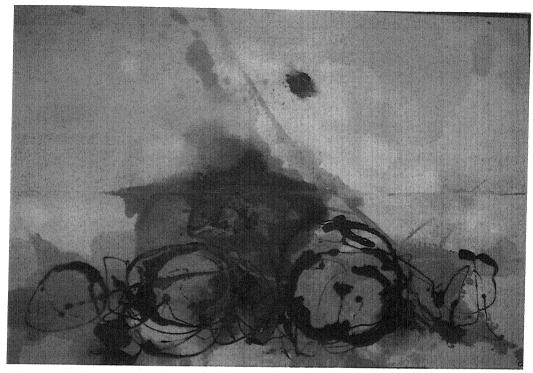
चित्र संख्या : 54

चित्र संख्या : 55

सन् 1971 में बिष्ट द्वारा बनाया गया लखनऊ का दृश्य चित्र तैल रंगीय पद्धति से बनाया गया है, जिसमें जल से मग्न सरिता चित्रित की गयी है। चित्र संख्या : 56
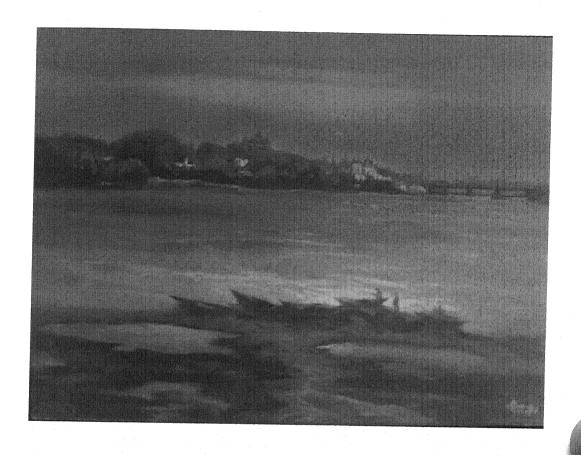
चित्र संख्या : 56
दृश्य चित्रण

रणवीर सिंह बिष्ट को दृश्य चित्रण के प्रति अप्रतिम लगाव था। दृश्य चित्रण ही उनके कलाकार बनने के प्रेरणा का मुख्य श्रोत रहा है। बाल्यकाल से ही दृश्य चित्रण के प्रति सृजनात्मक भावों को उन्होंने प्रकृति को आधार माना है, जिसके फलस्वरूप वे एक भू–खण्ड चित्रकार के रूप में भी जाने गये।

सन् 1973 में बिष्ट ने सृजन की गहराई में जाकर प्रलोभन शीर्षक पर चित्रण किया, जिसमें मानव का सृजन अमूर्त ढ़ग से किया गया है। चित्रि संख्या : 57
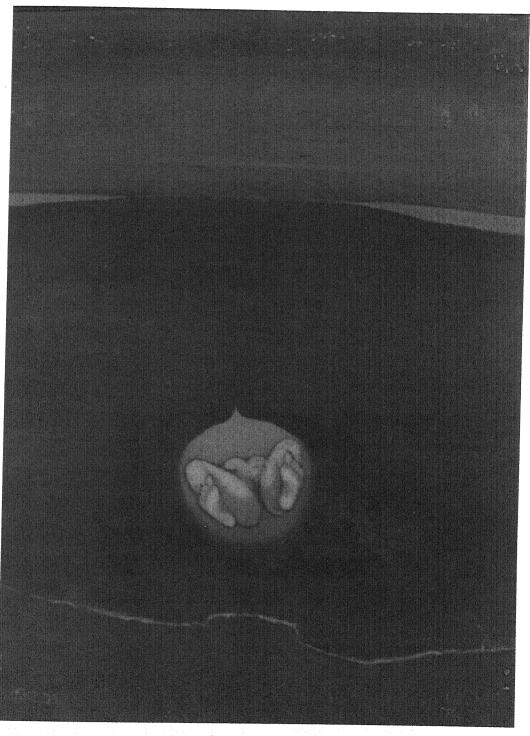
चित्र संख्या : 57
प्रलोभन

श्वान शृंखला :

बिष्ट ने श्वान शृंखला में पर्वतीय नारी की कष्टप्रद एवं संघर्षमय जीवन को करीब से देखा, जिसमें उन्होंने पाया कि वनों में नारी के साथ श्वान एक रक्षक के रूप में रहता है। चित्र संख्या : 58, 59 एवं 60

चित्र संख्या : 58
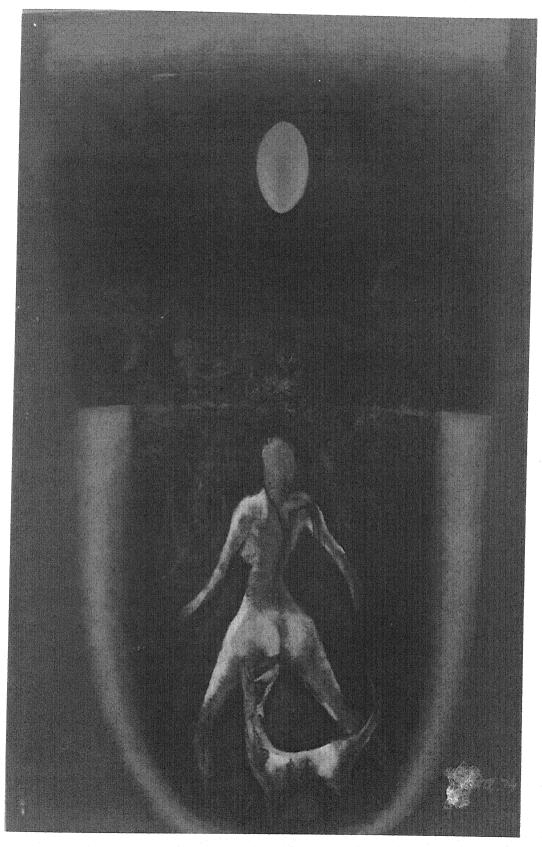
चित्र संख्या : 59
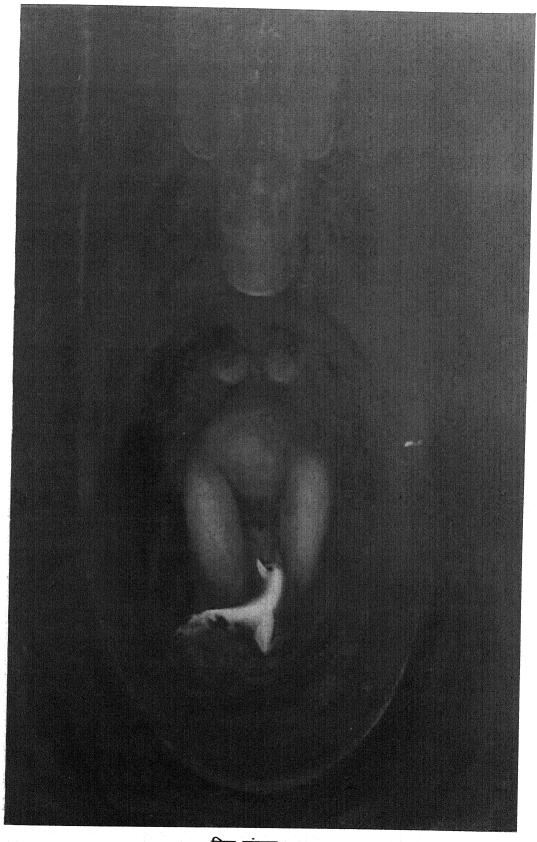
चित्र संख्या : 60

उल्का पिण्ड शृंखला:-

बिष्ट ने अपने बाल्यकाल में पर्वतीय क्षेत्रों में उल्का पिण्डों को गिरते हुए देखा। उस अतीत को उन्होंने "उल्का पिण्ड शृंखला" नाम से कई चित्र बनाये। पर्वतो में विभिन्न वातावरण को चित्रित करते हुए नीले रंगो की बाहुल्यता के साथ उक्त शृंखला रची। चित्र संख्या : 61, 62, 63 एवं 64
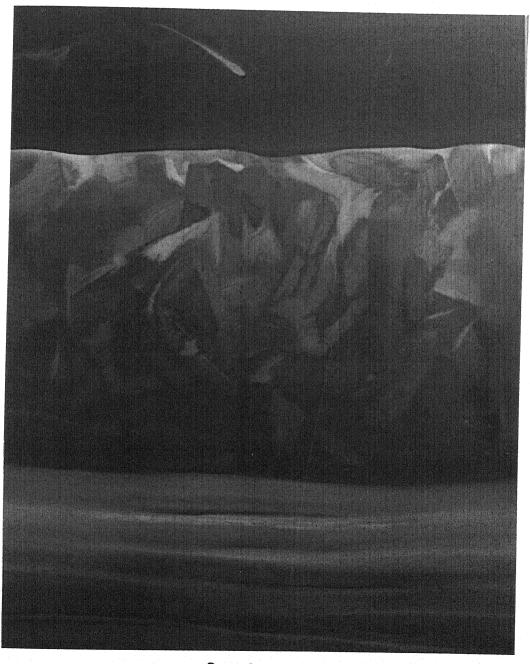
चित्र संख्या : 61
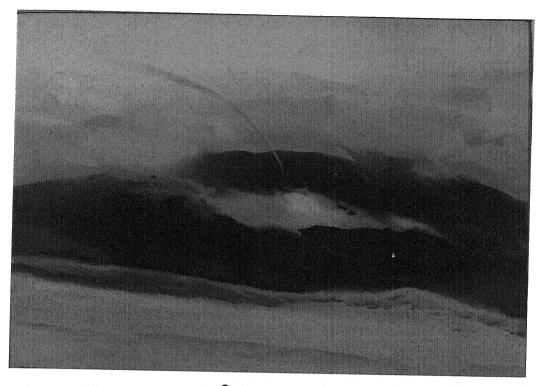
चित्र सख्या : 62
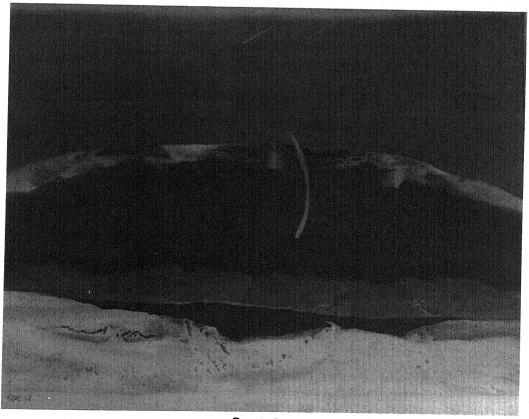
चित्र संख्या : 63
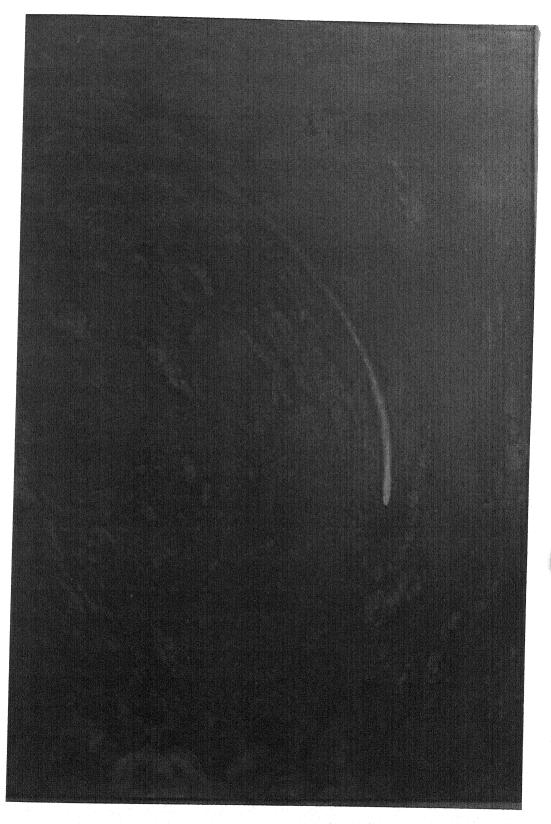
चित्र संख्या : 64

सन् 1985 में बिष्ट द्वारा जल रंग से चित्रित किया गया दृश्य चित्र जो मैंने उनके आवास इन्द्रानगर लखनऊ के स्टूडियो से प्राप्त किया। चित्र संख्या : 65
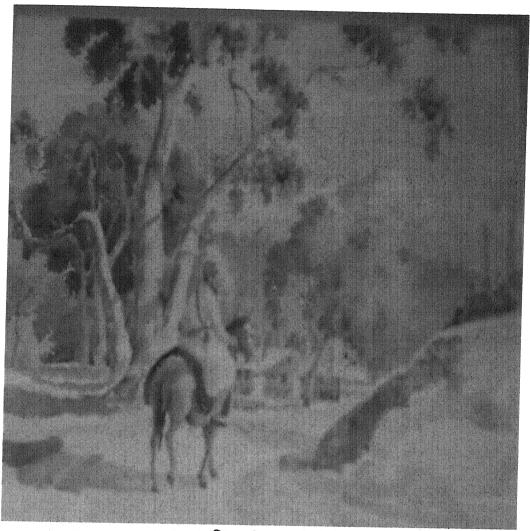
चित्र संख्या : 65
दृश्य चित्रण

नीला अनुभव श्रृंखला :

रणवीर सिंह बिष्ट द्वारा अपने लैण्ड्सडौन में व्यतीत विद्यार्थी जीवन की अवधि में नीले अम्बर एवं पहाड़ियों को विभिन्न तरह से अनुभव किया। अपने अतीत को उन्होंने कैनवास पर रंगो द्वारा एक श्रृंखलाबद्ध किया। पत्थरों की शिलाएँ पहाड़ से बाहर निकली हुई तथा दूर हिमालय को भी

उन्होंने अपने अनुभव से चित्रित किया। ब्लू शृंखला में उन्होंने नीले रंग का प्रयोग बाहुल्यता के साथ किया है। चित्र संख्या : 66, 67, 68, 69 एवं 70
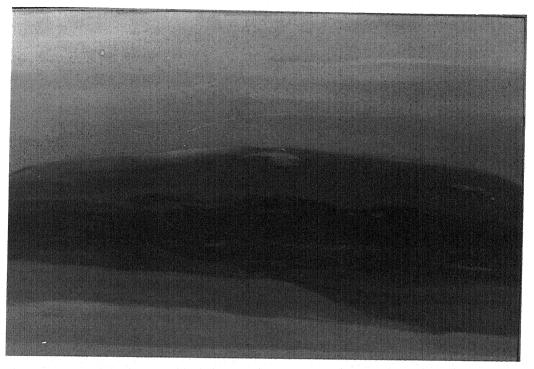
चित्र संख्या : 66
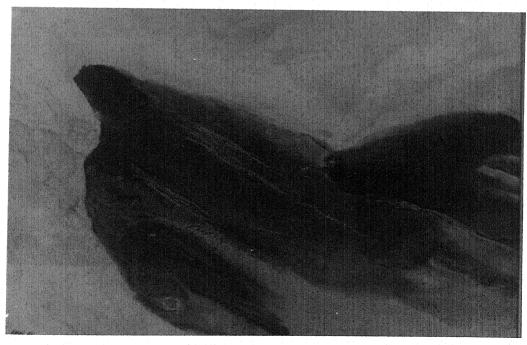
चित्र संख्या : 67
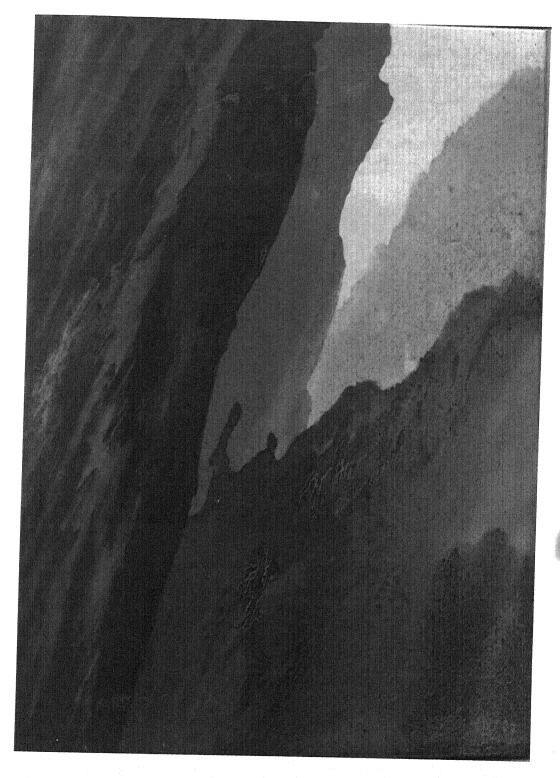
चित्र संख्या : 68
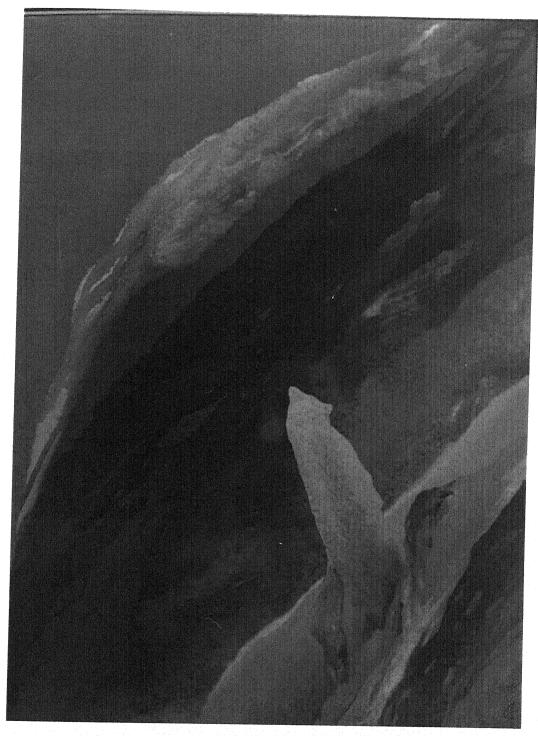
चित्र संख्या : 69

चित्र संख्या : 70

आतंकवाद शृंखला :

देश में आतंकवाद की पीड़ा से बिष्ट ने अपनी चित्र शृंखला से प्रदर्शन किया। आतंक के खौफनाक स्थिति को उन्होंने भयावह रूप में दिखाने का प्रयास किया। आतंकवाद को आसुरी प्रवृत्तियों के रूप में चित्रित किया। आतंकवाद के प्रति उन्होंने जो अपना अदम्य साहस दिखाया वह वास्तव में सराहनीय है। चित्र संख्या : 71, 72

चित्र संख्या : 71
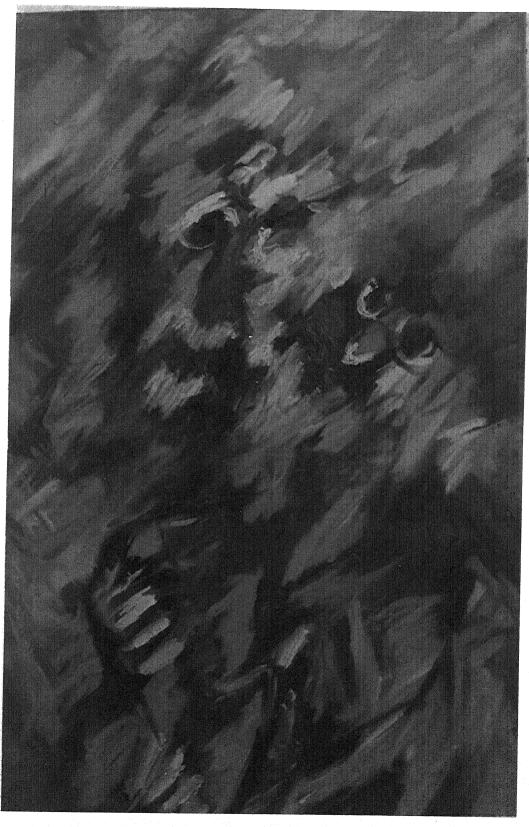
चित्र संख्या : 72

बिष्ट ने दृश्य चित्रण को प्रकृति की सुन्दरता के रूप में चित्रित किया। चित्र संख्या : 73, 74, 75,76 एवं 77 है।

चित्र संख्या : 73

चित्र संख्या : 74
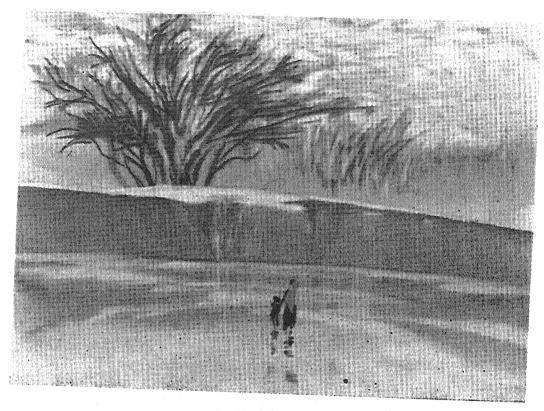
चित्र संख्या : 75

चित्र संख्या : 76

चित्र संख्या 77

उन्होंने मूर्ति शिल्प में भी कार्य किया। सिरेमिक इत्यादि के कार्यो में वे काफी दक्ष थे। उनके द्वारा बनाया गया एक मूर्ति शिल्प। चित्र संख्या : 78

चित्र संख्या : 78

रणवीर सिंह बिष्ट द्वारा बनाया गया अन्तिम चित्र जिसमें एक महिला को चित्रित किया गया है। चित्र संख्या : 79
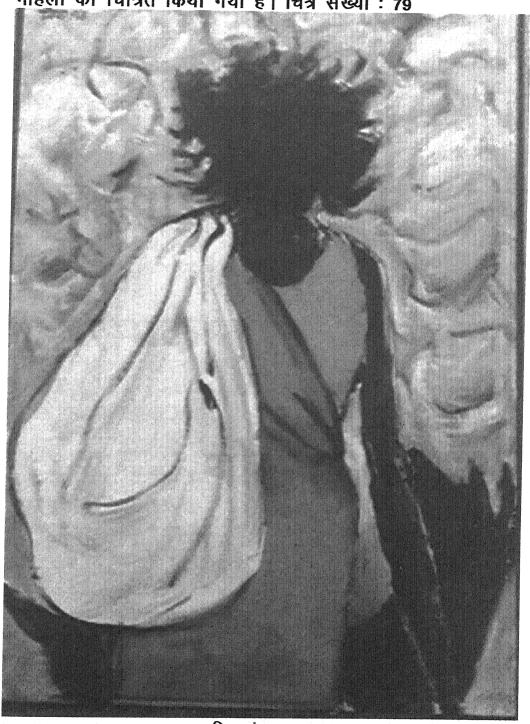
चित्र संख्या : 79
रणवीर सिंह बिष्ट द्वारा सृजित अन्तिम चित्र

उन्होंने अपने जीवन में विभिन्न तरह के चित्रों की रचना की तथा विभिन्न शृंखला चित्र बनाये, जो आज समकालीन कला को एक प्रबलता प्रदान करते हैं।

अध्याय पाँच

रणवीर सिंह बिष्ट का

समकालीन कला में

योगदान

अध्याय पाँच
रणवीर सिंह बिष्ट का समकालीन कला में योगदान

समकालीन कला में रणवीर सिंह बिष्ट का योगदान एक चित्रकार के रूप में अविस्मरणीय रहा है। उन्होंने अपनी कला साधना में सैरा व लैण्ड स्केप के चित्र बनाये जिससे वे कला जगत् में सुविख्यात रहे हैं। आस्ट्रेलिया के समकालीन कलाकार फ्रैंक वेसिली का उनके लिए महत्वपूर्ण योगदान रहा है। बिष्ट ने अपने जीवन को कला के लिए समर्पित कर दिया था। उन्होंने कला साधना में ही एक कला शैली को जन्म दिया। उन्होंने अपनी कला के माध्यम से कला की बारीकियों को समाज के समक्ष उजागर किया तथा समाज का कला से घनिष्ठ सम्बन्ध को भी संदेश के रूप में संचारित किया। उनकी कला रुचि में प्रारम्भ से अन्त तक रचनात्मक पक्ष को व्यक्त करने की प्रबलता रही है। उनकी रचनाएँ श्रेष्ठ कलाकारों की रचनाओं में मानी गयी हैं। उनके चित्रों ने उन्हें विशिष्ट व श्रेष्ठ व्यक्तित्व का स्थान प्राप्त कराया। उनकी चित्रण शैली में मधुरता का भाव वैचारिक रूप से दृष्टिगोचर होता है। कलाकृति में वैचारिकता का रूप आध्यात्मिक शक्ति को उद्‌बोधित करता है।

समकालीन कला जगत् में सक्रिय सहभागिता निभाते हुये रणवीर सिंह बिष्ट ने भी 'ब्लू सीरीज', 'हिमालय', 'अनवान्टेड', 'चाइल्ड' और 'ब्लैक पेजेज आफ द इण्डियन रिपब्लिक' चित्र शृंखलाएँ बनाई। थीम पर काम देखा जाय तो बिष्ट की शृंखलाएँ–अनवान्टेड और ब्लैक पेजेज दोनों ही अपने समय की पापुलर सीरीज थी, पर ब्लू सीरीज और हिमालय के कार्य बिष्ट की अन्तरआत्मा से निकली रचनाएँ थीं जो उनकी पृष्ठभूमि से उनको जोड़ती हैं।[1]

1–मिश्र, अवधेश : क्षेत्रीय समकालीन कला पृ0 25
राष्ट्रीय ललित कला केन्द्र लखनऊ का प्रकाशन
'स्वर्ण जयन्ती 1954–2004
ललित कला अकादमी, रवीन्द्र भवन,
नई दिल्ली–110001

क्षेत्रीय केन्द्र में चल रहे वरिष्ठ कलाकार शिविर के समापन के अवसर पर 26 सितम्बर, 2005 को जानी–मानी कलाविदुषी और कला इतिहास डॉ0 अलका पाण्डे ने स्व0 रणवीर सिंह बिष्ट की स्मृति में आयोजित 'अर्द्धनारीश्वर में सृजनात्मकता एक अध्ययन' विषय पर सारगर्भित व्याख्यान दिया। उन्होंने वैज्ञानिक और आध्यात्मिक पक्षों को रखते हुए यह बल देकर कहा कि पुरुष और स्त्री दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। शिव इस सत्य के प्रतीक हैं क्योंकि उनके वामांग में पार्वती का वास है और दायाँ अंग स्वयं शिव यानी पुरुष का है। कला के उद्भव और सृजन में शिव की महिमा को परम्परा से जोड़ती हुई डॉ0 पाण्डे ने कलाओं में शिव तत्व के महत्व को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि उन्हें अपने परिवार से इस पारम्परिक सत्य को पाया है। डॉ0 पाण्डे ने स्त्री सशक्तीकरण पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि आप देखिये कि स्त्रियाँ अवसर पाकर कितनी तेजी से आगे बढ़ रही हैं। उन्होंने कहा कि अर्द्धनारीश्वर के प्रति प्रेम उन्हें अपने परिवार में बचपन में हुआ। मेरे पिता शक्ति के भक्त थे। मैंने महसूस किया कि शिव और शक्ति का संयुक्त रूप ही अर्द्धनारीश्वर है और यह व्यापक शोध का विषय हो सकता है। उन्होंने अपने व्याख्यान में मिन और यांग तत्वों की चर्चा की और कहा कि अर्द्धनारीश्वर की यह अवधारणा आज दुनिया के महत्वपूर्ण लोगों के बीच दिलचस्पी का विषय बनी हुई हैं। स्त्री और पुरुष के बिना असन्तुलन ही सामाजिक व्यवस्था के विघटन का कारण है। जब दोनों में परस्पर एकता कायम होगी तो निश्चय ही उनमें दैवीय सन्तुलन स्थापित होगा और निर्माण की धारणा भी फलित होगी। इस अवसर पर बड़ी संख्या में कला प्रेमी उपस्थित थे।[1]

कृति सृजन में कलाकार की सहज करुणा अपने अथक परिश्रम से श्रद्धा, आशा एवं आन्तरिक क्षमता से उच्च कोटि को प्राप्त करता है। अपनी गरिमा को निरन्तर बनाये रखने का गुण बिष्ट में व्याप्त थे। प्रत्येक कलाकार अपनी चित्र रचना में अपनी

1–जोशी, ज्योतिष : कला संवाद पृ0 10
सम्पादक
ललित कला अकादमी की समाचार त्रैमासिकी
जुलाई–अक्टूबर 2005 ललित कला अकादमी
रवीन्द्र भवन, नई दिल्ली–110001

अलग पहचान बनाता है; चाहे वह शैली हो या रचना पद्धति से। समकालीन कलाकार भी इसी तरह की अपनी अलग पहचान बनाने में प्रयासरत रहता है। बिष्ट एक ऐसे कलाकारों में गिने जाते हैं जो एक सृजनात्मक व शैलीगत विशेषताओं से सम्पन्न थे। उनकी कला–कौशलता अति सराहनीय रही है। उनके चित्रों को देखने से ऐसा लगता है कि दर्शक की मानसिक व सौन्दर्यात्मक अभिरुचि से वास्तविकता की अनुभूति हो रही है। ये सभी कलाकृतियाँ आध्यात्म से प्रेरित हैं, जो समय के साथ नवीनता के बिम्ब एवं मनुष्य की कल्पना को साकार करने में सक्षम हैं। मनुष्य ने अपने कल्पनात्मक विचारों को इस तरह के चित्रों की रचनात्मकता पर गहरी छाप व्यक्त की है। इससे बिष्ट की विशिष्ट पहचान दिखायी देती है।

कुछ मायनों में बिष्ट की प्रवृत्ति अब प्रभाववादी चित्रकार देगॉ से मेल खाने लगी। प्रभाववादी चित्रकार होते हुए भी देगॉ प्रभाववाद के कुछ सिद्धान्तों से सहमत नहीं थे। उनकी मान्यता थी कि कलाकृति में प्रकृति का अनुकरण मात्र नहीं होना चाहिए क्योंकि यह कलाकार की कल्पना का विलास है। वे स्मृति से चित्रण करना सबसे अच्छा मानते थे। उनका यह भी मानना था कि चित्रकार केवल उन्हीं बातों का विचार करता है जो अपने आन्तरिक सौन्दर्य या किसी अन्य विशेषता के कारण उसके स्मृति–पटल पर टिकी रहती हैं। तब कल्पना की सहायता से कलाकृति को उदात्त रूप प्रदान किया जा सकता है। इसमें चित्रकार को वस्तु के नैसर्गिक रूप की हू–बहू नकल करने का प्रलोभन नहीं होता और कलाकार की प्रतिभा की सुरक्षा हो जाती है।[1] बिष्ट का कला संसार बहुत व्यापक है और रंगों का अद्‌भुत उपयोग और प्रयोग भी। एक दौर में नीला रंग उनका बहुत चर्चित रहा, लेकिन बाकी रंगों की रचनाएँ किसी माने में कम नहीं।[2]

1–निगम, अखिलेश : समकालीन कला पृ0 31–32 (माटी की गन्ध बरकरार है चित्रकार रणवीर सिंह बिष्ट) नवम्बर, 84/ मई, 85 सं0 3–4 ललित कला अकादमी, रवीन्द्र भवन, नई दिल्ली–110001

2–दैनिक जागरण लखनऊ (स्थानीय) (लखनऊ में आकाश छूता वह चीड़ का पेड़) 26 सितम्बर, 1998

बिष्ट का गूढ़ ज्ञान एवं अभिनव बिम्ब भी इस मनुष्य रूपी कल्पना को वास्तविक मानते हैं। उनके इस सकारात्मक विचार में रचनाशीलता रही है। इस संसार में ऐन्द्रियमय जगत् की परिकल्पना उनकी रचनाओं में दिखायी देती है। उनके चित्रों में रंगों का संयोजन कला जगत् को समर्पित करने की मंशा रही है। चित्रों के संयोजन में उतार–चढ़ाव, छाया–प्रकाश से रंगों की गतिशीलता एवं संघर्ष के रूप में विरोधी रंगों का समायोजन सुख व दुःख को स्पष्ट करता है, जो मानव के योगदान में सहायक रहा।

समकालीन कला में चिन्तन

समकालीन कला के प्रति बिष्ट का चिन्तन सहज एवं स्पष्ट था। उन्होंने कला को चिन्तन के समक्ष सापेक्ष मानते हुए उसे स्वतन्त्र माना है। उनकी दृष्टि में कला का भाव स्वतन्त्र है, जो अपने अस्तित्व से अपने मौलिक छटा को व्यक्त करता है। कला को वाह्य प्रभावों से ग्रस्त भी कहा है। वे कला को देशकाल व घटनाओं पर आधारित मानते थे। कला के सृजन के लिए वे इन्हीं पहलुओं को आवश्यक मानते थे। बिष्ट ने अमूर्तवादी चित्रण पर कार्य किया तथा वे अमूर्त चित्रण को अस्पष्ट मानते थे। वे अमूर्त व मूर्त के मध्य उसके अन्दर एक सृजनात्मक चेतना को जागृत करने पर बल देते थे। मूर्त व अमूर्त के भेद को उसके बिम्बों को आधुनिकता के आकृतिमूलक आधार पर नये परिप्रेक्ष्य से जोड़ते थे।

रणवीर सिंह बिष्ट की कला और उसके विकास के बारे में कोई सरलीकृत धारणा बनाना एक बहुत जटिल कार्य है। वे मूलतः प्रकृति के चित्रकार थे, लेकिन उनका मूल्यांकन प्रकृति चित्रकार या भू–खण्ड चित्रकारों के सापेक्ष में रखकर समझना उचित न होगा। एक चित्रकार जिसमें निर्विवाद रूप से विशिष्ट कला कौशल है–वह कलाकार बिष्ट इतने मार्मिक और गहन हैं कि वे अपनी सारी शक्ति और कला कौशल की पराकाष्ठा या निपुणता तक ही अपने को सीमित नहीं करते और जिन्होंने बिष्ट को विकसित होते हुए देखा है, उसका मुझे सौभाग्य मिला है; वह जानते हैं कि उन्होंने अमूर्तता सरलीकरण या वातावरण मूलक रहस्यवाद का रास्ता तब अपनाया जब वह अपने को एक प्रभाववादी चित्रकार के रूप में स्थापित कर चुके थे। एक दूसरा तथ्य जो उतना ही महत्वपूर्ण है और जिसके द्वारा कलाकार का विकास समझा जा सकता है वह

यह है कि उनको जिन विभिन्न चरणों या कालों से गुजरना पड़ा है—कभी—कभी इसलिए भी वे एक प्रचलित रास्ते को तोड़ने के लिये किये गये या किसी मानसिक कल्पना के आकार या बिम्ब को खोजने के लिए या कभी—कभी वास्तविकता से साक्षात्कार करने की प्रतिक्रिया में जो उन्हें किसी अवस्थिति की ओर ले जाती थी।[1] उनके चित्र मूर्त से अमूर्त (एब्स्ट्रेक्ट) का मनभावन कारनामा है जो उनके छिपे हुये कलाकार को बार—बार नये—नये रूप, रंग, संगीत, रस और मनोभावों के समन्दर में दर्शक को अतिरंजित कर गुप्तगू करने को मजबूर करते हैं।[2]

अमूर्त कला का विस्तार कलाकार के मस्तिष्क की उपज है, जो गूढ़ अर्थगम्य को लिये हुए होता है। उसमें विषयगत अर्थ उसकी गहराई को व्यक्त करते हैं। अमूर्त चित्र की अभिव्यक्ति में अलग तरह का एक नया संसार होता है। इस तरह की कलाकृति में प्रकृति के स्वरूपों को सार्वभौमिक रूप में समाहित किया जाता है। बिष्ट ने अमूर्त कला का सृजन करके समकालीन कला में अपना योगदान दिया। उनकी कला में काव्यात्मकता की अर्थगम्यता समाहित है तथा प्रकृति के प्रति वाहय सम्बन्धों को तादात्म्य करने की क्षमता दिखायी देती है। उन्होंने आकृतिमूलक मार्ग को अपनाया है; क्योंकि आकृति मूलक आधार में अमूर्त आकारों को समसामयिकता के अनुसार उजागर किया है।

1—बिष्ट : एक कला घटना : स्टेट्समैन, 25 सितम्बर, 1977 से संकलित कला—त्रैमासिक पृ0 12 राज्य कला अकादमी अंक—22—1985 लखनऊ।

2—काजी, शब्बीर हसन : कलावार्ता पृ0 87 (आर0एस0 बिष्ट—एक बुलन्द दृश्य—चित्रकार) संयुक्तांक 109—110 (स्वर्ण जयंती वर्ष 2005—2006) उस्ताद अल्लाउद्दीन खाँ संगीत कला अकादमी, रवीन्द्रनाथ ठाकुर मार्ग, भोपाल—462003

बिष्ट ने अपना पूरा जीवन कला की साधना में व्यतीत किया। उन्होंने एक चित्रकार के रूप में सुन्दरतम कलाकृतियों का सृजन करके अपनी पहचान बनायी। प्रकृति को अपनी दृष्टि से उन्होंने देखा तथा उससे अपनी कलाकृति में स्वरूप देकर मनमोहक बनाया। प्रकृति के प्रति उनका अप्रितम लगाव होने के कारण उन्होंने रंगों का कुशलतापूर्वक प्रयोग किया। उन्होंने अधिकतर चित्रों में रंगों को गहरे, प्रखर एवं चटकदार आभा में प्रयोग किया। उनके चित्रों में यथार्थतात्मक, प्रभावात्मक एवं अभिव्यंजनात्मक प्रभाव देखने को मिलते हैं। उन्होंने अधिकांशतः रंगों का विशुद्ध प्रयोग करके स्वतन्त्रता की अभिव्यक्ति को रेखाओं एवं आकारों के संयोजन को स्पष्ट रूप से वर्णित किया है। उनके संयोजन में प्रकृति को नये रूप में सौन्दर्यमय बनाने की प्रबलता दिखायी देती है। उनके चित्रों में प्रकृति से सम्बन्धित विषय जिनमें पहाड़ी दृश्य, बाढ़ दृश्य, रात्रि दृश्य, वर्षा ऋतु, बसन्त ऋतु, दृश्य चित्र, भूखण्ड चित्र, सिटी स्केप आदि को तूलिका से चित्रित किया है। बिष्ट के सतत् अभ्यास एवं लगन में सुदृढ़ता विभिन्न प्रयोगों में दिखायी देती है।

बिष्ट ने स्वयं को समकालीन कलाकार बनाने के लिए विभिन्न तरह की शैलियों का अभ्यास किया। अपनी कला साधना में वे सतत् सृजनशील रहते थे। उन्होंने निरन्तरता को सबलता माना है। वे अथक प्रयास की सम्भावनाओं को उजागर करते रहे। सन् 1962 ई0 में उनकी विचारधारा में नई चेतना उनकी कलाकृतियों में देखने को मिलती है। उनका कलात्मक चिन्तन विभिन्न तरह की सृजनात्मकता में देखने को मिलता है। उन्होंने चित्रों को विषयगत आधार पर नवीनता प्रदान की है; क्योंकि कलाकार अपनी कला शैली को एक नये स्वरूप में सृजित करता है। वैसे कलाकार की चित्र सृजन हेतु मौलिक कल्पना होनी चाहिए जो योजनाबद्ध ढंग से संयोजित हो सके। नवीनतम आयामों की रचना से ही कलाकार की पहचान होती है। बिष्ट के अनुसार :—
"विषय से भावना और भावना से चित्र तक एक लम्बी यात्रा है और उसको समझने व अभिव्यक्त करने में निश्चय ही हर कलाकार को अपनी धरती, अपने संस्कार, अपनी मनोवृत्ति, अपनी अनुभूति, अपने शिल्प का उचित सहारा लेना होता है। प्रारम्भिक संस्कारों ने ही मुझे इस बात के लिए बाध्य किया कि जो चीजें मुझे प्रभावित करती हैं उनको मैं शब्दों के अलावा अन्य किसी माध्यम से अभिव्यक्त करूँ, जो सम्भवतः हमारी भावनाओं और हमारे व्यक्तित्व

को प्रज्जवलित करे और उसने मुझे धीरे—धीरे चित्रकला की ओर प्रवृत्त किया।''[1]

उन्होंने चित्र शृंखलाओं के जितने भी संग्रह किये उनमें उनके नये भाव के मौलिकता की परिकल्पना की अनुभूति होती है। रचनाशीलता में निरन्तरता उनके जीवन का अहम् पक्ष था, जिसे वह अनुशासन भी मानते थे। रचनाशीलता स्वभाव में निरन्तरता को वे अध्ययन की प्रबलता मानते थे, जिससे कलाकार की साधना सफल होती है। उनकी कृतियों की कल्पना योजना में मौलिकता की नवीनता दिखायी देती है। उनके द्वारा रचित शृंखलाओं में मौलिकता के अंश दिखायी देते हैं। उनकी कृतियों में सत्यता के भाव की अनुभूति होती है। उनके चित्रों में विषयगत विशिष्टता का भाव सदैव सार्वभौमिक रहा है। उनके चित्रों में संयोजन की दृष्टि से परिकल्पना एवं मनुष्य से सम्बन्धित विभिन्न पहलू अज्ञानता से अन्धकार, नारी जीवन की विडम्बना को उन्होंने कला के द्वारा अद्भुत चेतना से विकसित करने का प्रयास किया। बिष्ट ने समकालीन कला को अपने कला जीवन के अनुभव से पुष्ट किया तथा अपनी विभिन्न कृतियों से समकालीन कला को दृढ़ता प्रदान की है।

विभिन्न शृंखलाओं द्वारा बिष्ट का योगदान

रणवीर सिंह बिष्ट ने अपने विभिन्न शृंखलाओं के द्वारा अपनी पहचान बनायी। उनका कला सृजन उनकी बचपन की यादों पर आधारित है। प्रकृति को अतीत में उन्होंने जब देखा था तो अपने कला रूपी भावों को कलाकृतियों से सजीवता प्रदान की। पर्वतीय दृश्यों को वे कभी भूल नहीं पाते थे। हिमालय की निर्मल चोटियाँ उन्हें निरन्तर प्रेरित करती रहीं। बचपन में विद्यालय जाते वक्त की यादें उन्हें हमेशा जीवन्त कलाकार बनने के लिए प्रेरित करती थीं। पर्वतीय जन—जीवन के प्रति वे सोचते व विचार करते तथा कभी—कभी एक चिन्तन में भी खो जाते थे। उनके पास उन सभी यादों को साकार करने का एक सरलतम माध्यम था। उनके

1—कक्कड़, कृष्ण नारायण : कला—त्रैमासिक पृ0 20
(रणवीर सिंह बिष्ट से साक्षात्कार)
राज्य ललित कला अकादमी अंक—22—1985
लखनऊ।

व्यक्तिगत जीवन की दो विशिष्टता थी–1–पर्वतीय जीवन एवं 2–मैदानी शहरी जीवन। इस तरह उन्हें कई अनुभव हुए जो उनके जीवन की महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ भी थीं। वे दृढ़ संकल्पित थे कि एक कुशल कलाकार बनने के लिए। इसके लिए उन्हें अनेक तरह के संघर्षों से गुजरना पड़ा। उनकी आकृतिमूलक श्रृंखला में भाव प्रधानता है जिसमें उन्होंने विषयगत चित्र सृजित किये। अपने भावों को उन्होंने दृश्य चित्रण श्रृंखला से व्यक्त करने का अथक प्रयास किया। वे मानव को प्रकृति के रंगों से तादात्म्य मानते थे जिससे उन्होंने अपने संयोजनों के माध्यम से एक दूसरे के प्रति अर्न्तसम्बन्धों को स्थापित किया। इस तरह के प्रयोगों से वे एक सच्चे कलाकार के रूप जाने गये। वे समकालीन कला के प्रतीक में एक सृजक (कलाकार) थे।

बिष्ट ने अपनी चित्र श्रृंखलाओं को जल रंग, तैल रंग तथा अन्य माध्यम से बनाया। उन्होंने विभिन्न विषयों को एक शैली के रूप में रचा तथा उनकी रूपरेखा का अंकन बड़े सरलता व सहजता से किया। उनकी विभिन्न श्रृंखलात्मक कृतियाँ समाज के सम्बन्धों को प्रगाढ़ता एवं प्रबलता प्रदान करती हैं। यह प्रबलता एक अनुभवी कलाकार के सृजन कार्य का हिस्सा थी। बिष्ट ने समकालीन कला में अपनी कलाकृतियों से पूर्ण सहयोग दिया जिसमें कला जगत् सदैव उनकी सराहना एवं प्रशंसा करता है। उनके प्रत्येक श्रृंखला उनके कला जीवन की एक कड़ी प्रतीत होती है जिससे उनके भावों में एक परिपक्वता का अंश दृष्टिगोचर होता है। उनकी कलात्मक श्रृंखला से एक अनुपम रचनात्मक दृष्टिकोण की अनुभूति होती है।

बिष्ट की प्रमुख श्रृंखला "नीला अनुभव", "नारी एवं श्वान", "आतंकवाद", "दृश्य चित्रण" एवं "अनवान्टेड श्रृंखला" है। इन श्रृंखलाओं में उनकी अभिव्यक्ति है। उन्होंने नारी व पुरुष के सम्बन्धों को प्रकृति के समक्ष धरती व आकाश को प्रतीक रूप में व्यक्त करने का प्रयास किया है। उनके दृश्य चित्रण श्रृंखला में मानवीय संवेदनाओं एवं प्रकृति के प्रति अन्तर्सम्बन्ध को स्थापित करने का सफलतम प्रयास किया है। उनके दृश्य चित्रण में यथार्थता की झलक मिलती है। जिससे उनकी कृतियों में यथार्थवादी के साथ प्रभाववादी एवं अभिव्यंजनावादी प्रभाव दिखायी देता है।

बिष्ट की प्रमुख चित्र श्रृंखला ''नीला अनुभव'', ''नारी व श्वान'' एवं ''आतंकवाद'' तत्पश्चात् दृश्य चित्र की अभिव्यक्ति मिलती है। श्रृंखला चित्रण में उन्होंने प्रकृति को प्रतीक रूप में मानवीय संवेदनाओं के रूप में व्यक्त किया है। प्रकृति एवं मानव के अन्तर्सम्बन्धों को उन्होंने अपने चित्रों के द्वारा व्यक्त किया है। प्रकृति चित्रण में उन्होंने यथार्थवादी के साथ प्रभाववादी एवं अभिव्यंजनावादी भावों को व्यक्त किया है। वे सदैव रचनात्मक कार्यो को अपने आत्मबल के साथ किया करते थे तथा कला रचना को ही अपना आदर्श रूप मानते थे।

बिष्ट द्वारा चित्र रचना में आकृतियों एवं दृश्य का निरूपण अत्यधिक मार्मिक ढंग से किया गया है। वे चित्र के महत्व को समझते थे इसलिए उन्होंने अथक परिश्रम करके कला साधना की। दृश्य चित्रों में उनकी रंग योजना एवं आकृतियों का गठन महत्वपूर्ण दिखायी देता है। उनके द्वारा बनाये गये शीर्षक विहीन, प्रलोभन, आतंकवाद, विद्रोह एवं अनवान्टेड चित्रों में दक्षता के साथ आकृतियों का अंकन किया गया है। उन्होंने अपनी मानवीय भावना से कल्पना की रूप–रेखा तैयार की, जिसमें विषयगत मनोवृत्तियाँ स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती हैं। उनके द्वारा किये गये रंगों का प्रयोग आत्मपरक था। कला केवल आत्मपरक भावों से व्यक्त होती है। समकालीन चित्रकार मानवीय सन्दर्भ में सत्य को प्रतिपादित करने में सफल रहा है। बिष्ट ने अपने चित्रों के द्वारा एक युग का निर्माण किया है जो कला की समकालीनता को अति प्रशंसनीय बनाने में प्रयासरत रहता है। कला में रूप, भाव एवं आकर्षण का कुशलतापूर्वक अंकन ही उसकी गुणवत्ता है।

समकालीन कला में बिष्ट का योगदान उनके सृजन कार्य के लिए सदैव स्मरण किया जाता रहेगा। उन्होंने विभिन्न प्रविधियों में चित्र बनाये तथा प्राकृतिक सौन्दर्य को भी बखूबी दर्शाया है। इसलिए उन्हें प्रकृति का भूखण्ड चित्रकार कहा जाता है। वे बड़े, भावुक, स्वच्छ विचारधारा एवं सत्यनिष्ठ चरित्र के व्यक्ति थे। उनके चित्रों में वॉश तकनीक का प्रभाव दिखायी देता है। चाहे वे तैल रंगों से चित्र को बनाते थे। वे स्वयं भी जल रंग को अधिक महत्व देते थे। उनके चित्रों में रंगों की तरलता एवं पारदर्शिता का गुण दिखायी देता है। उन्होंने विभिन्न श्रृंखलाओं में चित्र बनाये जिससे उनकी सत्यनिष्ठा की अनुभूति होती है। सृजन कार्य को वे सदैव रूचिपूर्वक एवं धैर्यपूर्वक किया करते थे। उनके सृजन कार्य में जल रंग की अधिकता है। अपने कला जीवन में उन्होंने चित्र श्रृंखलाओं

के माध्यम से एक नयी पद्धति को जन्म दिया। अपने अनुभवों को उन्होंने अपने चित्रण में अभिव्यंजित किया। उन्होंने लगभग 15 वर्षों तक शृंखलाबद्ध चित्रण कार्य किया। 5 वर्षों तक दृश्य चित्रण किया। 3 वर्ष में अनवान्टेड शृंखला पर कार्य किया। उन्होंने कला को विभिन्न रूपों में देखा तथा उसे चित्रित किया।

बिष्ट की अभिव्यक्ति

किसी भी कलाकार की अभिव्यक्ति उसके कार्यों की सृजनात्मकता से की जाती है। समकालीन विषयों के आधार पर चित्रों का विकास होता है। कला अभिव्यक्ति में नीतियों का पालन उसकी कृतियों में दिखायी देता है। कलाकृतियों का सामाजिक व राजनैतिक आधार पर स्वरूप प्रदान किया जाता है। कलाकार द्वारा अपने प्रखर मस्तिष्क से दायित्व का निर्वाह किया जाता है। प्रत्येक कलाकार अपने कार्य क्षेत्र में प्रयत्नशील रहता है, उसका प्रयास वर्तमान स्थिति के अनुसार सफलता प्राप्त करना रहा है। बिष्ट ने कला के विकास एवं उसकी गुणवत्ता पर वर्तमान की स्थिति के बारे में अवगत कराया है। उन्होंने लोक परम्परा पर आधारित कला को समकालीनता की दृष्टि से विकसित किये जाने पर बल दिया। समाज में लोगों को कला संस्कृति का ज्ञान आवश्यक माना है। कुरीतियों के खिलाफ कलाकार को निर्भीक होकर कार्य करना चाहिए।

बिष्ट की गणना देश के बहु प्रतिभा सम्पन्न समकालीन कलाकारों में की जाती है। समाज के दायित्वों का निर्वाह उन्होंने अपनी कला के माध्यम से करने की भरसक कोशिश की है। वे सदैव अनुकूलता की भावना से चित्र सृजन करते थे। समय के परिवर्तन के साथ वे अपने चित्रों को भी उसी रूप में चितित्र करने की कोशिश करते थे। वे कला एवं संस्कृति के महान विभूतियों में गिने जाते थे। भारतीय कला एवं संस्कृति में उनका निःस्वार्थ भाव से अग्रणी योगदान रहा है। अपनी कलाकृतियों के द्वारा भारतीय समकालीन कला में उनका योगदान सदैव चिरस्थाई रहेगा।

अध्याय छह

उपसंहार

अध्याय छह
उपसंहार

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि उत्तराँचल जो वर्तमान में उत्तराखण्ड है, की कला विभूति पद्मश्री रणवीर सिंह बिष्ट की कला यात्रा को एक कला साधना का स्वरूप माना जाता है। उनके द्वारा कला जगत् में किये गये अग्रणी योगदान से उनकी बहुमुखी प्रतिभा है। कला सृजन हेतु निर्मल छवि के रूप में उनका मौलिक योगदान ही समकालीन कला के लिए उनकी उपलब्धियाँ हैं। कला की व्यापक स्थितियाँ चाहे वे आधुनिक भारतीय कला का अभ्युदय हो या समकालीन कला का अभ्युदय हो, को एक महत्वपूर्ण रूप में प्रचारित किया गया प्रतीत होता है। कला का प्रासंगिक स्वरूप तथा कला की विभिन्न रूप–रेखाओं पर बिष्ट ने अपनी कला साधना से अवगत कराया है। उनके द्वारा बनाये गये रेखांकन, जल रंगीय एवं तैल रंगीय चित्रों को आधुनिकता के ऊँचे शिखर तक ले जाने का भरसक प्रयास रहा है। समय की परिवर्तनशीलता के साथ उन्होंने कला के स्वरूप को भी परिवर्तित करने की कोशिश की है।

अपने बाल्यकाल की स्मृति को सजीव करने की उत्सुकता उनमें सदैव रही है। पर्वतीय जन–जीवन का संघर्षमय वातावरण को भी उन्होंने निरन्तरता में यथार्थवत चित्रण किया है। उनके चित्रों में भारतीय परम्पराओं की स्पष्ट झलक दिखायी देती है। आधुनिक कला के प्रमुख चित्रकारों की कृतियों को उन्होंने आध्यात्म का अंश माना, जिनमें अवनीन्द्रनाथ टैगोर एवं अमृता शेरगिल की कृतियाँ हैं।

आधुनिक भारतीय कला प्रवृत्तियाँ एवं समकालीन भारतीय कला को प्रत्यक्ष रूप में देखने से भारतीयता में समकालीन अवधारणाओं को एक नवीन ढंग से परिभाषित किया गया है। बिष्ट की कला यात्रा का दृष्टिकोण कला की समीक्षात्मक स्थिति को प्रक्रियात्मक ढंग से प्रारम्भ करना है। समकालीन कला की रचनाशीलता में सृजन के विभिन्न सोपान उनकी कृतियों में देखने को मिलते हैं। उनकी कृतियों में सदैव प्रेरणा की अनुभूति होती है। पुनर्जागरण काल से लेकर कला की विभिन्नतम विचारधाराएँ व्यापक रूप से स्वरूप ग्रहण करती रही। कला की वास्तविकता कलाकृतियों के रूप में दिखायी देने लगी।

मैंने अपने शोध सर्वे में उनकी विभिन्न कृतियों को देखा तथा उनके बारे में उनके भाई श्री हीरा सिंह बिष्ट से जानकारी प्राप्त की तो मुझे ऐसा लगा कि बिष्ट में कला सृजन के पीछे एक चिन्तन व्याप्त था जो उनकी कृतियों में दिखायी देता है। समकालीन कला समसामयिक जीवन की झलक को व्यक्त करती है। उनके पारस्परिक विचारों में कला की वास्तविकता सार्थक रूप में प्रतीत होती है। भारतीय कला परम्परा का समकालीन दृष्टि से योगदान कला को विश्ववसनीयता की अनुभूति कराता है।

भारतीय कला प्रागैतिहासिक काल से प्रारम्भ हुई। भारत के विभिन्न प्रान्तों में उस काल के केन्द्र रहे हैं, जिनमें उत्तराखण्ड, उत्तरप्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार, महाराष्ट्र इत्यादि हैं। कला की तकनीक में उस समय की सभ्यताओं का ज्ञान होता है। प्राचीन काल से मानव का कला के प्रति लगाव रहा है। सौन्दर्य के प्रति मानव के मन में उत्सुकता व्याप्त रही है।

रणवीर सिंह बिष्ट की कला की समीक्षा करें तो उनकी कलाकृतियों में परिश्रम, लगन तथा विभिन्न सोपानों का एक क्रमिक विकास दिखायी देता है। कला की साधना में कलाकारों ने विभिन्न आयामों को स्वरूप प्रदान किया तथा आधुनिक कलाकारों ने कला जगत् को अपना योगदान दिया, जिनमें अवनीन्द्रनाथ टैगोर, रवीन्द्रनाथ टैगोर, अमृता शेरगिल, नन्दलाल बोस, असित कुमार हल्दार ने आधुनिक कला के महत्व को भली–भाँति समझा जिसमें कला का विकास क्रम गतिशील रहा। कला अपने साथ परम्परा सभ्यता एवं समाज के विभिन्न पहलुओं को लेकर चलती है। कलाकारों द्वारा रचनाशीलता भी देखने को मिलती है तथा कला सामग्रियों के माध्यम से विषय की विविधता दिखायी देती है। कलाकृतियों की उत्कृष्टता उनके स्तरीय गुणों पर आधारित रही है। आधुनिक कला के द्वारा विभिन्न राष्ट्रों में मानव जातियों का विकास होता रहा है। समकालीन कला में समाज का अभिव्यंजित स्वरूप दिखायी देता है।

कला मनीषियों ने आधुनिकता को कला इतिहास का शब्द प्रदान किया है, जिसका मुख्य आधार कला शैली को नवीन तकनीक एवं विषय वस्तु के रूप में प्रस्तुत करना है। प्रतिबद्धता का उचित भाव समीक्षा की दृष्टि से कला के मनोभावों के सापेक्ष व्यक्त करने की धारणा रही है। कला की रचनाशीलता में

सृजनात्मक पक्ष प्रबल रहता है। बिष्ट ने अपनी कला कृतियों में विविध विषय वस्तुओं का चयन करके सौन्दर्य शास्त्र पर निरन्तरतः ध्यान दिया। आज के युग में समकालीन प्रवृत्तियों का सृजन आवश्यकताओं के आधार पर होता है। कला के आधुनिक व्यक्तित्व की पहचान सिर्फ रंग व तकनीक से नहीं बल्कि उसकी विषयवस्तु से होती है। यूरोपीय कला के प्रभाव को भारतीय कला परम्परा में नवीनतम आयामों में स्वरूपबद्ध करने का क्रम जारी रहा। यूरोप के कलाकारों की तकनीक से प्रेरित होकर भारतीय कलाकारों ने समकालीन कला में अपना अनूठा योगदान दिया।

भारत में ब्रिटिश शासन 16 वीं शताब्दी से प्रारम्भ हुआ था। इसके साथ ही ब्रिटिश चित्रकारों में भी अपनी कला का प्रभाव भी छोड़ा। पुनर्जागरण काल में बंगाल स्कूल की भूमिका महत्वपूर्ण रही। आनन्द कुमार स्वामी, अवनीन्द्रनाथ टैगोर, इ0वी0 हैवेल आदि कलाकारों ने अपनी कला रचना के द्वारा महत्वपूर्ण योगदान दिया। कला आन्दोलन की गति पूरे देश भर में व्यापक हो गयी। असित कुमार हल्दार, क्षितीन्द्रनाथ मजूमदार, नन्दलाल बोस ने कला सृजन के द्वारा भावनात्मक पक्ष को परम्परागत ढंग से नवीनतम रूप प्रदान करने में अपना योगदान दिया। आधुनिक कला को अग्रसर करने के लिए समकालीन कलाकारों की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। कलाकृतियों को देखकर जन मानस के मन में भावनाएँ प्रकट होती हैं। कला को मौलिकता के रूप में वर्णित करना आवश्यक होता है। कलाकार की मुख्य भूमिका उसके चित्रण पद्धति एवं गहनतम अध्ययन पर निर्भर रहती है। कलाकृति को सृजन में विषय वस्तु का ज्ञान आवश्यक है। आधुनिक कलाकारों ने अपनी चित्रण पद्धति के द्वारा मार्गदर्शन प्रदान किया है।

बिष्ट की कलाकृतियों का समीक्षात्मक अध्ययन करें तो उनमें तीन प्रकार के तत्वों की व्यापकता का स्वरूप दिखायी देता है, जिसमें सौन्दर्य का यथार्थ रूप, आन्तरिकता एवं वाह्य रूप है। उनकी कलाकृतियों में रेखा, रंग, आकार, बनावट एवं अन्तराल को भी अवगत कराया है। कलाकृति प्रत्येक कलाकार की अपनी अनुभूति को प्रेरित करती है। कलाकार की धारणा केवल विषय वस्तु में नवीनता लाने की है। उसमें विचारों में मौलिकता तथा समकालीनता का प्रभाव समाहित रहता है। बिष्ट द्वारा रंगों का प्रयोग मानसिक प्रभाव को भावनात्मक सम्बन्धों की ओर इंगित

करता है; क्योंकि कलाकार की भावनाएँ मनोवैज्ञानिक तथ्यों के आधार पर अभिभूत होती हैं। उनके द्वारा किये गये रंगों का प्रयोग स्वभाव के अनुकूल आभास कराते हैं। उनकी कलाकृतियों में आयामी प्रभाव एक सुलभ वातावरण प्रदान करता है। उन्होंने अपनी सृजनात्मक अभिव्यंजना से एक कुशल चित्रकार के रूप में अपनी पहचान करायी है।

बिष्ट ने अपनी तूलिका में संतुलित कलाकृतियों का सृजन किया। उनकी कृतियों में सरल स्वभाव की झलक दिखायी देती है। रंगों का समिश्रण उनकी दक्षता थी। वॉश तकनीक के माध्यम से उनकी कृतियों में उत्कृष्टता दृष्टिगोचर होती है। सन् 1958 ई० में उन्होंने तैल रंगों से चित्रण कार्य प्रारम्भ किया। उनकी प्रसिद्ध कृति "फोरेस्ट फ्रेम" जो वनों पर आधारित रही। उक्त कलाकृति में यथार्थ की अनुभूति होती है। उन्होंने नवीनतम प्रयोगों से कला सृजन के रूप को एक नया मार्गदर्शन दिया।

अमूर्त चित्रण में उनका अच्छा रूझान रहा। वे भाव पक्ष के दक्ष चित्रकार थे। उनके बनाये गये सैरा चित्र व दृश्य चित्र प्राकृतिक छटा को व्यक्त करते हैं। उन्होंने अपनी कला को विविधतापूर्ण ढंग से अभिव्यक्त किया। आधुनिक एवं समकालीन कला से उनका अप्रतिम लगाव रहा है। आधुनिक कलाकारों की कृतियों में जो प्रभाव देखने को मिलता है उसमें समकालीन कला को भी स्वयं में कला का विशेष स्वरूप माना गया है।

भारतीय संस्कृति में परम्परा का संचार लोक जीवन से सदैव रहा है। जन भावनाओं में समकालीनता की आवश्यकताएँ निरन्तर बृद्धि करती रहती हैं। पाश्चात्य प्रभाव को देखकर भारतीय परम्परा को एक प्रबलता के रूप में उभारने के लिए भारतीय समकालीन कलाकारों का योगदान सराहनीय रहा है। समकालीन कला के प्रति प्रशंसकों की धारणा तथ्यों के बजाय उनकी वास्तविकता पर विकसित मानी जाती है। रणवीर सिंह बिष्ट ने कला को समकालीनता के सम्मुख मानकर ऐसा परिवेश दिया जिससे कलाकार प्रेरित रहें। अपनी कला के द्वारा उन्होंने समाज को एक नया आयाम देने की भरसक कोशिश की है। भारत को उनके इस कला साधना पर गर्व है कि उन्होंने देश में अपना नाम ऊँचा किया।

रणवीर सिंह बिष्ट सच्चे व स्पष्ट स्वभाव के थे, उन्होंने अपनी कृतियों से आदर्श के लक्ष्य को उजागर करने की कोशिश की है। उन्होंने समय का सदुपयोग करके अपनी रचनाशीलता से कलाकृतियों में अपनी भावना को स्पष्ट रूप से चित्रित किया। अपनी कलाकृतियों में उन्होंने विचार एवं गुण को सदैव चिरस्थाई स्वरूप देने की कोशिश की। उनकी कलाकृतियों में उच्च स्तरीय कलात्मकता का संकेत मिलता है तथा अभिव्यंजना के रूप में अभिव्यंजित भाव समाहित रहता है। कलाकृतियों में रस प्रधान भाव प्रवणता सौन्दर्य की दृष्टि से उजागर करने में सक्षम हैं।

कलाकार जब कृति सृजन करते समय अपनी मनोरम कल्पनाओं को रंगीय संयोजन से साकार करने की कोशिश करता है तो वह अपने जीवन में भावनाओं के द्वारा मौलिकता लाने की कोशिश करता है। समकालीन कलाकार की गुणात्मक भावनाएँ उसकी मनोवृतियों पर निर्भर करती हैं। कला प्रवृत्तियों का समावेश मौलिकता के आधार पर होता है। समकालीनता से अभिप्राय यह है कि जो आज के समय में क्रियान्वित हो रहा है वह समकालीन है। इसी को आज के परिप्रेक्ष्य में नवीनतम कहा जायेगा। कलाकार के मन में समसामयिक प्रभाव ही कृति सृजन हेतु प्रेरित करते हैं।

रणवीर सिंह बिष्ट नवीनता के रूप में कला प्रवृत्तियों में परिवर्तन लाने का प्रयास करते रहे हैं। कला प्रवृत्तियों के माध्यम से उन्होंने रंगीय संयोजन से अपनी उपलब्धियों को साकार किया है। उनके चित्रों में समकालीनता का बीजारोपण देखने को मिलता है। अपनी सृजनशीलता से उन्होंने विभिन्न तरह के आयाम समकालीन कला को समर्पित किये हैं। उनके चित्रों की अभिव्यक्ति में कला की सामंजस्यता प्रस्तुत है। कला सृजन में भी अनुशासन की प्रवृत्ति का पालन आवश्यक है; क्योंकि चित्रों का संयोजन व्यवस्थित ढंग से होना चाहिए।

कलाकार की कला साधना उसकी धुन एवं एकाग्रचित्तता पर निर्भर करती है। अपनी मनः स्थिति को वह उन्मुक्त होकर योग की भाँति प्रयासरत रहता है। मन, मस्तिष्क की कल्पना को साकार करने के लिए उसकी विचारधारा विकसित होती है। बिष्ट ने अपनी कला मात्रा में पारखी के रूप में भी भूमिका अदा की है। उनकी कला के प्रति गहरी पैठ थी। वे सदैव मानव कल्याण के लिए कला सृजन करके एक संदेश समाज को देना चाहते थे। वास्तविकता

को कला के माध्यम से उजागर करने के लिए वे दृढ़ संकल्पित रहते थे। अपनी कृतियों को विभिन्न प्रदर्शनियों के आयोजन से समकालीन कला को उन्होंने सुदृढ़ करने में अपना योगदान दिया। उनकी कृतियों में भावों का गुणात्मक स्तर दिखायी देता है। कलाकार द्वारा वाह्य दृश्य को कल्पना के माध्यम से महत्वपूर्ण तथ्यों को उजागर किया जाता है। कला सम्प्रेषण द्वारा क्रिया–कलापों की अभिव्यक्ति को व्यक्त किया जाता है।

रणवीर सिंह बिष्ट ने सामाजिक जीवन को अपनी कृतियों से स्वरूप प्रदान किया है। जीवन के विकास में क्रिया–कलापों को अपनी साधना के द्वारा योगदान दिया है। समकालीन कला में उन्होंने अपनी कला साधना से उत्तरांचल के संघर्षमय जीवन, सामाजिक व्यवस्था, प्राकृतिक सौन्दर्य एवं आध्यात्मिक पक्ष को बखूबी व्यक्त किया है। उनका यह योगदान उत्तराखण्ड ही नहीं पूरा देश हमेशा याद करेगा। उन्होंने अपनी रचनाशीलता से विभिन्न तरह की उपलब्धियाँ कला जगत् को समर्पित की। कला साधना करके उन्होंने एक सच्चे राष्ट्रभक्त होने की मिशाल प्रदान की है। पर्वतीय अँचल के दुःख, दर्द को उन्होंने अपनी भावनाओं से चित्रित किया। उनके कला यात्रा की महत्ता से ही उन्हें "पद्मश्री" से सम्मानित किया गया। कलाकृतियों में वे अपने अन्तिम दिनों तक अपना मौलिक योगदान देते रहे। अपने दृढ़ संकल्प से ही उन्होंने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर देश का नाम ऊँचा किया। कला यात्रा में किये गये विभिन्न सोपानों के लिए वे कला जगत् में सदैव अमर रहेंगे। मुझे पूर्ण विश्वास है कि मेरा यह शोध प्रबन्ध कला जगत् के लिए उपयोगी सिद्ध होगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

(Bibiliography)

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची
(BIBLIOGRAPHY)
पुस्तक (हिन्दी)

1— अग्रवाल, गिर्राज किशोर : आधुनिक भारतीय चित्रकार
संजय पब्लिकेशन,
शैक्षिक पुस्तक प्रकाशक,
अस्पताल मार्ग, आगरा—3

2— अग्रवाल, गिर्राज किशोर : कला और कलम
अशोक प्रकाशन मन्दिर
27—ए, साकेत कालोनी
अलीगढ़ (उ0 प्र0) (1999)

3— अग्रवाल, आर0 ए0 : कला विलास
(भारतीय चित्रकला का विवेचन)
इण्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस
मेरठ (उ0 प्र0) (2003)

4— अग्रवाल, वासुदेव शरण : भारतीय कला
पृथ्वी प्रकाशन, बी0 1/54
अमेठी कोठी नगवा,
वाराणसी—221005

5— अग्रवाल, वासुदेव शरण : कला और संस्कृति
साहित्य भवन प्रा0 लि0,
इलाहाबाद, 1958

6— अग्रवाल, भानु : भारतीय चित्रकला के मूल स्त्रोत
अलगॉरिद्म पब्लिकेशन
8—बी, लेन नं0 12, बिन्दपुरी
वाराणसी— 221005

7— कक्कड़, कृष्ण नारायण : संदर्भ और स्थिति
ललित कला अकादमी
नई दिल्ली, 1980

8— कादरी, एस0 एम0 असगरअली : भारतीय चित्रकला का इतिहास
स्टूडेन्ट स्टोर 35 ए0 1,
रामपुर बाग, बरेली (उ0 प्र0)
(2002)

9— कालेलकर, काका : कला : एक जीवन—दर्शन
सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन,
दिल्ली, 1937

10— कासलीवाल, मीनाक्षी : ललित कला के आधारभूत सिद्धान्त
राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी
जयपुर, राजस्थान (2003)

11— गुरूजी, साने : भारतीय संस्कृति
सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन,
दिल्ली, 1953

12— गैरोला, वाचस्पति : भारतीय चित्रकला,
चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान
38, यू0 ए0 जवाहर नगर
बंगलो रोड पो0 बॉ0 2113
दिल्ली—110007 (1990)

13— गैरोला, वाचस्पति : भारतीय चित्रकला का संक्षिप्त इतिहास
लोक भारतीय प्रकाशन,
इलाहाबाद, 1962

14— गैरोला, वाचस्पति : भारतीय संस्कृति और कला
हिन्दी ग्रन्थ एकादमी, लखनऊ

15— झा, चिरंजी लाल : भारतीय चित्रकला का विकास
लक्ष्मी कुटीर, नयागंज
गाजियाबाद (उ0प्र0) (1969)

16—दास, श्रीमती कुसुम : भारतीय कला परिचय
उत्तर प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, लखनऊ

17—दास, राय कृष्ण : भारत की चित्रकला
भारती भण्डार, लीडर प्रेस,
इलाहाबाद, 1974

18—परिपूर्णानन्द : प्रतीक—शास्त्र
हिन्दी समिति, लखनऊ

19—प्रकाश, बुद्ध : भारतीय धर्म एवं संस्कृति
मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ, 1968

20—बाजपेयी, अशोक (सम्पादक) : कला विनोद,
नेशनल पब्लिशिंग हाउस,
नई दिल्ली, 1982

21—भारद्वाज, विनोद : आधुनिक कला कोष,
सचिन प्रकाशन,
नई दिल्ली, 1989

22—भारद्वाज, विनोद : समकालीन भारतीय कला—
एक अन्तरंग अध्ययन,
राधा कृष्ण प्रकाशन
नई दिल्ली, 1982

23—मिश्र, जनार्दन : भारतीय प्रतीक विद्या
बिहार राष्ट्रभाषा परिषद,
पटना, 1959

24—मुकर्जी, राधाकमल : भारतीय कला का विकास, सरस्वती प्रेस, इलाहाबाद, 1964

25—मुकर्जी, राधाकमल : भारत की संस्कृति एवं कला राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, 1959

26—मेहता, नानालाल चिमनलाल : भारतीय चित्रकला हिन्दुस्तानी एकादमी इलाहाबाद, 1933

27—राय, निहाररंजन : भारतीय कला का अध्ययन दि मैकमिलन कंपनी आफ इंडिया लिमिटेड, नई दिल्ली बम्बई कलकत्ता मद्रास

28—वर्मा, अविनाश बहादुर : भारतीय चित्रकला का इतिहास प्रकाश बुक डिपो, बड़ा बाजार बरेली

29— वर्मा, महेन्द्र : भारतीय चित्रकला की परम्परा भारतीय कला प्रकाशन 3421—ए,नांरग कालोनी त्रीनगर दिल्ली

30—वाजपेयी, राजेन्द्र : मॉडर्न आर्ट और भारतीय चित्रकार साहित्य निकेतन गिलिरा बाजार, कानपुर—208001 (उ0 प्र0) (1981)

31—सिंह, शिवकरण : कला सृजन प्रक्रिया वसुमती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1969

32—सिंह, सीमा : भारतीय समकालीन प्रयोगमूलक चित्रकला की मनोवृत्तिया एवं प्रवृत्तियाँ (शोध प्रबन्ध) ललित कला विभाग महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ वाराणसी—2 (उ0प्र0)(2000—1)

33—साखलकर, र0वि0 : आधुनिक चित्रकला का इतिहास राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर (राजस्थान) (2004)

34—शुक्ल, रामचन्द्र : कला का दर्शन, कौरोना आर्ट पब्लिशर्स, मेरठ, 1964

35—शुक्ल, रामचन्द्र : कला और आधुनिक प्रवृत्तियाँ, राजर्षि पुरूषोत्तमदास टण्डन, हिन्दी भवन, लखनऊ, 1958

36—शुक्ल, रामचन्द्र : नवीन भारतीय चित्रकला किताब महल, इलाहाबाद

37—शुक्ल, रामचन्द्र : रूप शिल्प (भारतीय आधुनिक कला की भावी दिशा) सम्पादक—डॉ श्याम बिहारी अग्रवाल ज्वाला प्रसाद विद्यासागर 129, कामता प्रसाद कक्कड़ मार्ग, इलाहाबाद (1989)

38—शुक्ल, प्रयाग (सम्पादक) : कला समय समाज, ललित कला प्रकाशन, नई दिल्ली, 1979

39—शर्मा, हरद्वारी : कला—प्रसंग, मेरठ, 1964

40—शर्मा, भवानीशंकर : रूप शिल्प
(पोब्लो पिकासो जायन्ट और
मॉडर्न आर्ट)
सम्पादक—श्याम बिहारी
अग्रवाल 129, कामता प्रसाद
कक्कड़ मार्ग, इलाहाबाद
(उ0 प्र0) (1986)

41—शर्मा, लोकेश चन्द्र : भारत की चित्रकला का
संक्षिप्त इतिहास
कृष्णा प्रकाशन मीडिया प्रा0 लि0
11, शिवाजी रोड, मेरठ
(उ0 प्र0) (2004)

42—पाण्डेय, संध्या एवं
पाण्डेय, आर0 पी0 : भारतीय कला पुनर्जागरण
एवं चित्रकार
मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ
अकादमी रवीन्द्र नाथ ठाकुर
मार्ग बाण गंगा भोपाल—
462003 (म0प्र0) (1997)

43—नागिया, ऊषा किरण : रूप शिल्प (सिक्ख चित्र शैली)
सम्पादक—श्याम बिहारी
अग्रवाल, 129 कामता प्रसाद
कक्कड़ मार्ग, इलाहाबाद
(उ0 प्र0) (1986)

44—हाल्दार, असित कुमार : ललित कला की धारा
इलाहाबाद 1960

45—हाल्दार, असित कुमार : भारतीय चित्रकला
चन्द्रलोक प्रकाशन,
इलाहाबाद, 1959

Books English)

1- Arnason, H.H. : A History of Modern Art. Thames and Hudson, London, 1969

2- Archer, W.G. : Indian and Modern Art. George, Allen& Unwin Ltd., Museum Street, London, 1959

3- Appaswamy, Jaya : The Critical Vision. Lalit Kala Academy, New Delhi, 1985. Portfolio of Contemporary Painting.

4- Barr Jr, A.H. : What is Modern Painting. Introductory Series to Modern Art, NewYork.

5- Barr Jr, A.H. : The Museum of Modern Art, Fifthed. 1959

6- Barr Jr, A.H. : Cubism and Abstract Art. The Museum of Modern Art, NewYork, 1936

7- Barr Jr, A.H. : Fantastic Art Data, Surrealism The Museum of Modern Art, NewYork,

8- Brown, Percy : Indian Painting Harnam Publications New Delhi, 1982

9- Chatterji, S.K. : Contemporary Indian Painters Publications Division, New Delhi.

10- Collins, Judith & Welchman, John & Chandler, David : Techniques of Modern Artists Macdonald & Co. London & Sydney,1983.

11-Chaitanya, Krishna : Artists and Critic in Modern India Abhinav Publication, New Delhi, 1997.

12- Copplestone, Trewin : Modern Arts Movements Paul Hamlyn, London, 1967

13- French, J.C. : Himalayan Art, Oxford University Press, London, 1931.

14- Ghosh, Arvind : The National Vlaue of Indian Art Bombay, 1947

15- Haldar, Asit Kumar : Art and Tradition The Universal Publishers Ltd. Lucknow, 1952

16- James, Josef : Art and Life in India, Last four decade, B.R. Publishing Corporation, Delhi, 1989

17- Kapoor, Geeta : Contemporary Indian Artists Vikas Publishing House Pvt. Ltd, Delhi, Bombay, Banglore, Calcutta, Kanpur, 1978 Pictorial Spaces

18- Kaul, Mabohar : Trends in Indian Painting Dhoomimal Ramchandra, New Delhi, 1961

19- Malik, Keshav : Between Tradition and Experiment 25 Years of Indian Art, New Delhi 1993

20- Mitra, Ashok : The Forces behind Modern Movement Calcutta, 1991

21- Mookerjee, Ajit : Modern Art in India, Ox ford Book & Stationary Co.

22- Parimoo, Ratan : Studies in Modern Indian Art (A Collection Essays), Kanak Publications, New Delhi, 1975

23- Subramanyam, K.G. : Moving Focus (Essays on Indian Art), Lalit Kala Academy, New Delhi, 1978

24- Verma, S.P. : (Reactions & Reflections) (R.S. Bisht and His "Realism" in Art) All India Fine Arts & Crafts Society New Delhi (1999)

25- Venkatachlam, G. : Contemporary Indian Painters Nalanda Pub. Bombay, 1946

26- Venkatachlam, G. Thaper,M. : Present Day Painters of India Sudhansu Publications, Bombay, 1950.

पत्र एवं पत्रिकाएँ

1– कला त्रैमासिक
राज्य ललित कला अकादमी अंक 22 (1985)
लखनऊ उत्तर प्रदेश

2– कला वार्ता
संयुक्तांक 109–110 नवम्बर 2005
स्वर्ण जयन्ती वर्ष 2005–2006
उस्ताद अलाउद्दीन खाँ संगीत एवं कला अकादमी
रविनाथ ठाकुर मार्ग भोपाल–462003

3– कला संवाद "त्रैमासिकी"
ललित कला अकादमी जुलाई–अक्टूबर 2005
रवीन्द्र भवन नई दिल्ली–110001

4– कला निधि
काशी, वाराणसी (उ0 प्र0)

5– कला प्रयोजन
पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र उदयपुर (राजस्थान)

6– समकालीन कला श्रृंखला
ललित कला अकादमी रवीन्द्र भवन नई दिल्ली 1990

7– समकालीन कला
ललित कला अकादमी
नवम्बर 84 मई 85 संख्या 3–4, नई दिल्ली

8– समकालीन कला
स्वर्ण जयन्ती 1954–2004
ललित कला अकादमी रवीन्द्र भवन नई दिल्ली–110001

9– क्षेत्रीय समकालीन कला
राष्ट्रीय ललित कला केन्द्र
लखनऊ (उ0प्र0)

10— धर्म युग 7 जनवरी—1972 से संकलित
कला त्रैमासिक
राज्य ललित कला अकादमी लखनऊ
अंक 22 1985

11— राष्ट्रीय ज्वाला (त्रैमासिक)
जनवरी से मार्च 2002
कोटद्वार (पौड़ी गढ़वाल)

12— गढ़गौरव
कोटद्वार गढ़वाल, ग्रीष्म कालीन विशेषांक
15 मई सन् 2001

13— स्टेटमैन 25 सितम्बर 1977
(बिष्टः एक कला घटना) से संकलित कला
त्रैमासिक अंक 22, 1985
राज्य ललित कला अकादमी लखनऊ

14— दैनिक जागरण लखनऊ (स्थानीय)
(लखनऊ में आकाश छूता वह चीड़ का पेड़)
26 सितम्बर 1998

15— वास्ट
(आधुनिक भारतीय चित्रकला में आकृतिमूलक प्रवृत्ति)
पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र
उदयपुर (राजस्थान) (2003)

16— लैन्सडौन (समाज संस्कृति और इतिहास)
लैन्सडौन पुस्तकालय समिति
बिन्सर पब्लिशिंग कम्पनी 58/1 घोसी गली
(पलटन बाजार) देहरादून (उत्तराखण्ड) 2004